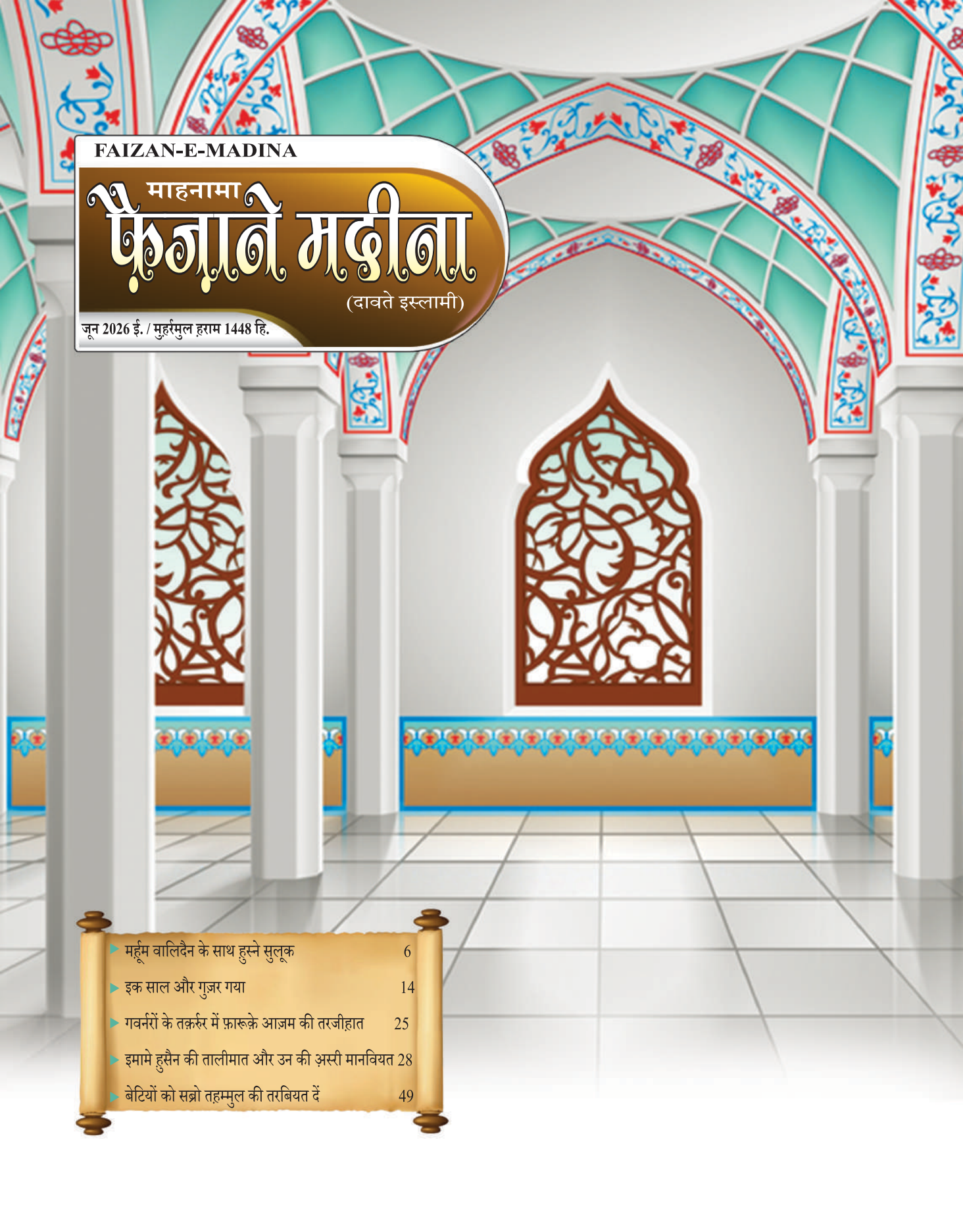

FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जून 2026 ई. / मुहर्रमुल ह़राम 1448 हि.

- मर्हूम वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक 6
- इक साल और गुज़र गया 14
- गवर्नरों के तक़र्रुर में फ़ारूक़े आज़म की तरजीह़ात 25
- इमामे ह़ुसैन की तालीमात और उन की अ़स्री मानवियत 28
- बेटियों को सब्रो तह़म्मुल की तरबियत दें 49

ग़ुर्बत दूर हो

يَا بَاسِطُ	يَا رَزَّاقُ
ऐ फ़राख़ी करने वाले	ऐ रोज़ी देने वाले

हर नमाज़ के बाद 700 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूदे पाक) पढ़ने से रिज़्क़ में बरकत होती और ग़ुर्बत ख़त्म होती है।

अल्लाह करीम ग़ैरों की मोहताजी से बचाता और ज़रूरतें पूरी फ़रमाता है। (हमेशा 5 नमाज़ों के बाद पढ़ते रहें तो अच्छा)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
रमज़ाने करीम 1446 हि. 16-3-2025

औलादे नरीना और रोज़ी में बरकत

يَا اَوَّلُ

40 बार

पढ़ कर पानी या शहद मिले पानी पर दम कर के आधा ख़ुद पिए और आधा ज़ौजा को पिलाए। اِنْ شَآءَاللّٰه الْكَرِيْم बेटा होगा और रिज़्क़ में भी बरकत होगी। (येह अ़मल 40 दिन मुसल्सल करना है)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
7 रमज़ाने करीम 1446 हि. 8-3-2025

शादी के लिए ग़ैबी अस्बाब हों

يَا وَهَّابُ

300 बार (अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीम)

रोज़ाना सोने से पहले पढ़ लीजिए।

(जब तक शादी न हो जाए रोज़ाना पढ़ना है)

अमीरे अहले सुन्नत
मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
रमज़ाने करीम 1446 हि. 7-3-2026

जब कोई चीज़ ग़मगीन करती तो

अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ पढ़ते :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

(यानी : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! उसे हमेशा क़ाइम रखने वाले ! मैं तेरी रहमत से मदद मांगता हूं)

(ترمذی، 5/311، حدیث:3535)

रंजो ग़म दूर होने के लिए फ़ज्र के सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान 40 मरतबा पढ़ना मुफ़ीद है और मक़रूज़ रोज़ाना किसी भी वक़्त दिन में 100 बार पढ़े तो क़र्ज़ से छुटकारा पाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه الْكَرِيْم

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
रमज़ाने करीम 1446 हि. 29-3-2025

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जून 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

क़ुरआनो हदीस

इस्मो उदवान का क़ुरआनी मफ़हूम 3
मर्हूम वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक 6

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

दो मर्हूमीन की बर्सियां एक साथ करना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 8

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

क़ुरबानी के जानवर के हार रस्सी का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 10

मज़ामीन

पैग़म्बरे इस्लाम यतीमों के मुहाफ़िज़ 12
इक साल और गुज़र गया 14
इस्लामी तरबियत के मुअस्सिर ज़राएअ़ 16
सोच बदले तो ज़िन्दगी बदले 19
ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाली आंख का अज्रो सवाब 21

ताजिरों के लिये

अहकामे तिजारत 23

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

गवर्नरों के तक़र्रुर में फ़ारूक़े आज़म की तरजीहात 25
इमामे हुसैन की तालीमात और उन की अ़स्री मानवियत 28
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 30

मुतफ़र्रिक़

चन्द क़दीम मदारिस व जामिअ़ात 32
कोहे तूर के जल्वे 35

क़ारेईन के सफ़हात

नए लिखारी 38

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बुज़ुर्गों की ताज़ीम कीजिए 42
बच्चे ज़िन्दा हो गए 43
इन्सानी जान 45
बच्चों को रहम दिली की तरबियत कैसे दें ? 47

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

बेटियों को सब्रो तहम्मुल की तरबियत दें 49
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 51

"इस्मो उ़दवान" का क़ुरआनी मफ़्हूम

अल्लाह करीम का फ़रमान है :

﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ(۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।[1]

इस आयते करीमा में चार अहम अ़नासिर का ज़िक्र है : अल बिर्र (नेकी), अल तक़्वा (परहेज़गारी), अल इस्म (गुनाह) और अल उ़दवान (ज़ियादती)। पहले दो अ़नासिर वोह हैं जिन में तआ़वुन और मुआ़वनत का हुक्म दिया गया है, जब कि आख़िरी दो अ़नासिर वोह हैं जिन में मुआ़वनत से मना किया गया है।

अल बिर्र और अल तक़्वा में तआ़वुन और इस का मफ़्हूम "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" अप्रैल और मई 2026 ई़ में किया गया, जब कि "अल इस्म और अल उ़दवान" में तआ़वुन न करने के ह़वाले से तफ़्सीलात इस मज़्मून में मुलाह़ज़ा कीजिए।

रब तआ़ला ने सूरतुल माइदा में "इस्म" और "उ़दवान" में मुआ़वनत करने और सूरतुल मुजादला में "इस्म व उ़दवान" की सरगोशियां करने से मना फ़रमाया है। आइए क़ुरआने करीम ही की रौशनी में जानते हैं कि कौन कौन से आमाल व अफ़्कार "इस्म" और "उ़दवान" में शामिल हैं ?

अल इस्म का क़ुरआनी मफ़्हूम

लफ़्ज़ "अल इस्म" अ़रबी ज़बान में गुनाह, मासियत, और ख़ता के माना में इस्तिमाल होता है। क़ुरआने करीम में अल इस्म को अल बिर्र के मद्दे मुक़ाबिल ज़िक्र किया गया है। आइए ! देखते हैं कि क़ुरआने करीम ने किन आमाल, नज़रियात और अ़क़ाइद को अल इस्म के ज़ुमरे में शामिल किया है।

शराब और जुवा "इस्म" हैं

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल बक़रह में शराब और जूए के बारे में फ़रमाया :

﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुनियवी नफ़ा भी और उन का गुनाह उन के नफ़ा से बड़ा है।[2]

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह़ तौर पर शराब और जूए को "इस्मे कबीर" यानी बड़ा गुनाह क़रार दिया है। येह ह़क़ीक़त है कि उन में कुछ दुनियवी फ़वाइद हो सकते हैं, जैसे शराब से आ़रज़ी ख़ुशी या जूए से फ़ौरी माली फ़ाएदा, लेकिन उन के नुक़्सानात उन के फ़वाइद से कहीं ज़ियादा हैं।

शराब इन्सान की अ़क़्ल को माऊफ़ कर देती है, जो इन्सान की सब से बड़ी नेमत है। जब अ़क़्ल माऊफ़ हो जाए तो इन्सान हर क़िस्म की बुराई कर सकता है। वोह नमाज़ नहीं पढ़ सकता, अपने अहलो अ़याल का ख़याल नहीं रख सकता, और मुआ़शरे में फ़साद फैलाता है। जुवा इन्सान को काहिल बना देता है।

बद गुमानी "इस्म" है

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल हुजरात में फ़रमाया :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐ़ब न ढूंडो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो।[3]

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने बाज़ गुमानों को गुनाह क़रार दिया है। ज़न से मुराद वोह गुमान है जो बग़ैर किसी सुबूत के किया जाए। अगर किसी के बारे में बुरा गुमान रखा जाए बग़ैर किसी सुबूत के, तो येह गुनाह है। इस्लाम ने मुसलमानों को सिखाया है कि वोह एक दूसरे के बारे में हुस्ने ज़न रखें, बद गुमानी से इन्सान के दिल में दूसरे मुसलमान के लिए नफ़रत पैदा होती है, और येह मुआ़शरे में इन्तिशार का बाइ़स बनती है।

लोगों का माले नाहक़ खाना "इस्म" है

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल बक़रह में फ़रमाया :

﴿وَ لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِیْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ(۱۸۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आपस में एक दूसरे का माले नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिए पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजाइज़ तौर पर खा लो जान बूझ कर।[4]

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने लोगों का माले नाहक़ खाने को इस्म क़रार दिया है। इस में वोह तमाम तरीक़े शामिल हैं जिन से लोगों का माल नाजाइज़ तौर पर हासिल किया जाए, जैसे चोरी, डाका, रिश्वत, धोका दही, सूद और झूटी गवाही वग़ैरा।

आयत में येह भी बताया गया है कि बाज़ लोग हाकिमों के पास झूटे मुक़द्दमे ले कर जाते हैं ताकि उन के ज़रीए दूसरों का माल हड़प कर सकें। येह बहुत बड़ा गुनाह है क्यूंकि उस में झूट, धोका और ज़ुल्म सब कुछ शामिल है।

शिर्क "इस्मे अ़ज़ीम" है

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुन्निसा में फ़रमाया :

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ ۚ وَ مَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِیْمًا(۴۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया उस ने बड़े गुनाह का तूफ़ान बांधा।[5]

शिर्क सब से बड़ा गुनाह है क्यूंकि उस में अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया जाता है। अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को पैदा किया, उसे रिज़्क़ दिया, उसे तमाम नेमतों से नवाज़ा, लेकिन अगर इन्सान किसी और को उस के साथ शरीक बनाए तो येह सब से बड़ी नाशुक्री है।

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुन्निसा में शिर्क को इफ़्तिरा और "इस्मे मुबीन" यानी खुल्लम खुल्ला गुनाह क़रार दिया :

﴿اُنْظُرْ كَیْفَ یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ كَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِیْنًا(۵۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : देखो कैसा अल्लाह पर झूट बांध रहे हैं और येह काफ़ी है सरीह़ (खुला) गुनाह।[6]

बोहतान "इस्म" है

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुन्निसा में फ़रमाया :

﴿وَ مَنْ یَّكْسِبْ خَطِیْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ یَرْمِ بِهٖ بَرِیْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا(۱۱۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप दे उस ने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया।[7]

किसी बेगुनाह पर इल्ज़ाम लगाना दोहरा गुनाह है : एक तो ख़ुद गुनाह करना, दूसरे उसे किसी बेक़ुसूर पर डालना। येह बहुत बड़ा ज़ुल्म है और अल्लाह तआ़ला ने उसे "**बोहतान**" और "इस्मे मुबीन" यानी वाज़ेह गुनाह क़रार दिया है।

अल इस्म का ख़ुलासा और तम्बीह

क़ुरआने करीम की मज़्कूरा बाला और दीगर आयात से येह बात वाज़ेह होती है कि अल इस्म एक वसीअ़ इस्तिलाह है जो तमाम गुनाहों को अपने अन्दर समेटे हुए है। इस में अ़क़ीदे के गुनाह (जैसे शिर्क), इ़बादात के गुनाह (जैसे नमाज़ छोड़ना), अख़्लाक़ी गुनाह (जैसे झूट, ग़ीबत, बद गुमानी), और मुआ़मलात के गुनाह (जैसे चोरी, धोका, रिश्वत) सब शामिल हैं।

अल्लाह तआ़ला ने हमें तमाम क़िस्म के गुनाहों से बचने का हुक्म दिया है, चाहे वोह ज़ाहिरी हों या बातिनी, छोटे हों या बड़े, गुनाह इन्सान को अल्लाह से दूर कर देते हैं, उस के दिल को सियाह कर देते हैं, और आख़िरत में अ़ज़ाब का बाइ़स बनते हैं चुनान्चे

हमें ऊपर मज़कूर हर उस काम से बचना है और दूर रहना है जो "इस्म" के ज़ुमरे में आता है, नीज़ ख़ुद बचने के साथ साथ किसी त़रह़ से भी कोई ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार नहीं करना कि हमारी वज्ह से या مَعَاذَاللہ हमारे ज़रीए से कोई उन गुनाहों में मुब्तला हो जाए।

अल उ़दवान का क़ुरआनी मफ़्हूम

लफ़्ज़ "अल उ़दवान" अ़रबी ज़बान में ह़द से तजावुज़ करना, ज़ुल्म करना, और ज़ियादती करना के माना में इस्तिमाल होता है। क़ुरआने करीम में इस की मुमानअ़त कई आयात में वारिद है।

बनी इसराईल को अल्लाह का हुक्म था कि आपस में इत्तिह़ाद रखें लेकिन उन्हों ने एक दूसरे को क़त्ल किया और घरों से निकाला और उस ज़ुल्म में बाहम मुआ़वनत भी की, अल्लाह करीम ने उसे उन के मज़ालिम में ज़िक्र फ़रमाया है चुनान्चे सूरतुल बक़रह में है :

﴿ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِیْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِیَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَیْهِمْ بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर येह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे और अपने में एक गिरोह को उन के वत़न से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह और ज़ियादती में।[8]

सूरतुन्निसा में दूसरों का माल नाह़क़ खाने और क़त्लो ग़ारत से मना किया गया और इस अ़मले क़बीह के इर्तिकाब को "**उ़दवान और ज़ुल्म**" क़रार दिया गया, फ़रमाया :

﴿وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِیْهِ نَارًا ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرًا(۳۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अ़न्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह अल्लाह को आसान है।[9]

ख़ुलासा येह कि अ़ल उ़दवान हर क़िस्म की ज़ियादती और ज़ुल्म का नाम है। इस में अल्लाह की मुक़र्रर कर्दा हुदूद से तजावुज़, लोगों के हुक़ूक़ ग़स्ब करना, उन पर ज़ुल्म करना, उन के साथ दुश्मनी रखना, ह़राम माल खाना, और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी, सब कुछ शामिल है।

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को वाज़ेह हुक्म दिया है कि वोह किसी पर ज़ियादती न करें। इस्लाम इन्साफ़ क दीन है, और ज़ुल्म से सख़्त मना करता है। ह़त्ता कि दुश्मन के साथ भी इन्साफ़ करने का हुक्म दिया गया है।

अल्लाह करीम हमें नेकी और तक़्वा में बाहम तआ़वुन करने और गुनाह और ज़ियादती व ज़ुल्म से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ6، المآئدۃ:2(2) پ2، البقرۃ:219(3) پ26، الحجرات:12(4) پ2، البقرۃ: 188(5) پ5، النسآء: 48(6) پ5، النسآء: 48(7) پ5، النسآء: 112

(8) پ1، البقرۃ:85(9) پ5، النسآء:30۔

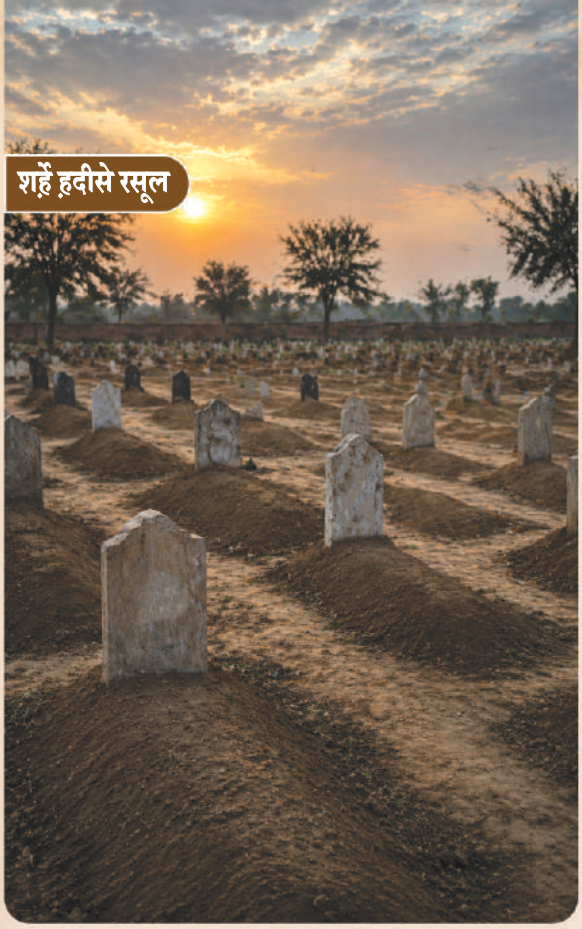

शर्हे ह़दीसे रसूल

मर्हूम वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक

ह़ज़रते अबू उसैद मालिक बिन रबीआ़ साइ़दी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर थे कि बनू सलमा क़बीले का एक सख़्स आया और पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मेरे वालिदैन के मरने के बाद उन से भलाई करने की कोई सूरत है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : نَعَمۡ! اَلصَّلَاۃُ عَلَیۡہِمَا وَالۡاِسۡتِغۡفَارُ لَہُمَا وَاِنۡفَاذُ عَہۡدِہِمَا مِنۡ بَعۡدِہِمَا وَصِلَۃُ الرَّحِمِ الَّتِیۡ لَا تُوۡصَلُ اِلَّا بِہِمَا وَاِکۡرَامُ صَدِیۡقِہِمَا तर्जमा : "हां ! उन के लिए दुआ़ करना, उन के लिए इस्तिग़फ़ार करना, उन के किए हुए वादे को पूरा करना, उन के रिश्तेदारों से सिलए रह़मी करना और उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना।"[1]

रावि ए ह़दीस ह़ज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ़ साइ़दी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ अन्सारी और बद्री सह़ाबी हैं आप तमाम ग़ज़्वात में हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक रहे और कसीर मुह़द्दिसीन ने आप से रिवायात नक़्ल की हैं, बसरा जाने के बाद साठ (60) हिजरी में अठत्तर (78) साल की उ़म्र में विसाल फ़रमा गए। बद्री सह़ाबियों में सब से आख़िर में वफ़ात पाने वाले आप ही हैं। बद्री सह़ाबए किराम की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत को क़ुरआने मजीद में बयान फ़रमाया गया है।[2]

शर्हे ह़दीस इस ह़दीसे पाक में मर्हूम वालिदैन के 5 ह़ुक़ूक़ का बयान है जो उन के साथ हुस्ने सुलूक और भलाई का ज़रीआ़ भी हैं : 1 उन की नमाज़े जनाज़ा अदा करना 2 उन के लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करना 3 उन के अ़हद व वादे को पूरा करना 4 उन के रिश्तेदारों से सिलए रह़मी करना 5 और उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना। मश्हूर मुह़द्दिस व मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : "मां बाप के इन्तिक़ाल के बाद उन से भलाई करने का त़रीक़ा येह है कि औलाद हर नमाज़ के बाद अपने वालिदैन के लिए दुआ़ करती रहे, उन के नाम पर सदक़ात व ख़ैरात करे, उन की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल करे या किसी और से करवाए, उन का तीजा, दस्वां, चालीसवां, बर्सी करे। बाज़ लोग अपने वालिदैन की अच्छी रस्में बाक़ी रखते हैं, अगर मां बाप किसी तारीख़ में ख़ैरात करते थे या मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं करते थे तो वोह हमेशा करते हैं, जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे उस मस्जिद को आबाद करने की कोशिश करते हैं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "जिन अ़ज़ीज़ों से रिश्ता सिर्फ़ मां या बाप की वजह से हो दूसरी वजह से न हो उन से अच्छा सुलूक करना कि येह मेरे वालिदैन की ख़ुशनूदी का ज़रीआ़ है इस में भाई बहन, चचा मामूं, फूफी ख़ाला सब ही दाख़िल हैं। दूसरे येह कि उन के साथ इस वजह से भलाई करे ताकि वालिदैन की रिज़ा ह़ासिल हो, अपना नाम या शोहरत मक़्सूद न हो ग़रज़ येह कि इन अ़ज़ीज़ों की इस वजह से ख़िदमत करे ताकि वालिदैन राज़ी हो जाएं और वालिदैन की रिज़ा में अल्लाह व रसूल

की रिज़ा है, नीज़ बेटा बाप के दोस्तों और मां की सहेलियों की भी इज़्ज़त करे।"[3] येह अल्लाह रहीम और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हसीन तालीमात हैं, येह हुस्ने सुलूक का अज़ीम पहलू है, येह अख्लाक़े हसना की मेराज है, येह हुकुके इन्सानी का सबसे नुमायां और मुन्फ़रिद पहलू है कि दुनिया से रुख़्सत हो जाने वाले वालिदैन के भी हुक़ूक़ मुक़र्रर किए गए हैं।

मर्हूम वालिदैन के औलाद पर हुक़ूक़ इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मर्हूम वालिदैन के 12 हुक़ूक़ अहादीस की रौशनी में बयान फ़रमाए हैं, इन का ख़ुलासा मुलाहज़ा कीजिए:

1 बादे मौत उन के ग़ुस्ल, कफ़न व नमाज़ व दफ़्न का एहतिमाम करना और इन कामों में सुनन व मुस्तहब्बात की रिआयत जिस से उन के लिए हर ख़ूबी व बरकत व रहमत व वुस्अत की उम्मीद हो। 2 उन के लिए हमेशा दुआ व इस्तिग़फ़ार करते रहना। 3 सदक़ा व ख़ैरात व आमाले सालेहा का सवाब उन्हें और सब मुसलमानों को पहुंचाते रहना कि उन सब को सवाब पहुंच जाएगा और इस के सवाब में कमी न होगी बल्कि बहुत तरक़्क़ियां पाएगा। 4 उन पर किसी का क़र्ज़ हो तो उस की अदाएगी में हद दर्जा जल्दी व कोशिश करना और अपने माल से उन का क़र्ज़ अदा होने को दोनों जहां की सआदत समझना। 5 उन पर कोई फ़र्ज़ रह गया तो बक़दरे क़ुदरत उस के अदा में सई बजा लाना, हज न किया हो तो उन के तरफ़ से हज करना या हज्जे बदल कराना, ज़कात या उश्र का मुतालबा उन पर रहा तो उसे अदा करना, नमाज़ या रोज़ा बाक़ी हो तो उस का कफ़्फ़ारा देना وعلیٰ ہذا القیاس। 6 उन्हों ने जो जाइज़ शरई वसिय्यत की हो हत्तल इम्कान उस के निफ़ाज़ में सई करना अगर्चे शरअन अपने ऊपर लाज़िम न हो अगर्चे अपने नफ़्स पर बार हो। 7 उन की क़सम मरने के बाद भी सच्ची ही रखना मसलन मां बाप ने क़सम खाई थी कि मेरा बेटा फ़ुलां जगह न जाएगा या फ़ुलां से न मिलेगा या फ़ुलां काम करेगा तो उन का वैसे ही पाबन्द रहना जैसा उन की हयात में रहता जब तक कोई हरजे शरई मानेअ न हो और क़सम ही नहीं हर तरह उमूरे जाइज़ा में बादे मर्ग भी उन की मर्ज़ी का पाबन्द रहना। 8 हर जुमुआ को उन की ज़ियारते क़ब्र के लिए जाना, वहां यासीन शरीफ़ पढ़ना ऐसी आवाज़ से कि वोह सुनें और उस का सवाब उन की रूह को पहुंचाना, राह में जब कभी उन की क़ब्र आए बे सलाम व फ़ातिहा न गुज़रना। 9 उन के रिश्तेदारों के साथ उम्र भर नेक सुलूक करना। 10 उन के दोस्तों से दोस्ती निबाहना, हमेशा उन का एज़ाज़ो इकराम रखना। 11 कभी किसी के मां बाप को बुरा कह कर जवाब में उन्हें बुरा न कहलवाना। 12 सब में सख़्त तर व आम तर व मुदाम तर येह हक़ है कि कभी कोई गुनाह कर के उन्हें क़ब्र में ईज़ा न पहुंचाना, इस के सब आमाल की ख़बर मां बाप को पहुंचती है, नेकियां देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और उन का चेहरा ख़ुशी से चमकता और दमकता है, गुनाह देखते हैं तो रंजीदा होते हैं और उन के दिल पर सदमा होता है, मां बाप का येह हक़ नहीं कि उन्हें क़ब्र में भी रंज पहुंचाए।[4]

ख़िदमते वालिदैन की निय्यत क्या हो ? वालिदैन की ख़िदमत बग़ैर किसी दुनियवी ग़रज़ व लालच के होनी चाहिए। चुनान्चे मश्हूर मुहद्दिस व शारेहे हदीस अल्लामा अली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه औलाद के लिए वालिदैन के चन्द हुक़ूक़ बयान करने के बाद फ़रमाते हैं: "जो शख़्स वालिदैन का ख़िदमत गुज़ार है उस के लिए येह मुनासिब नहीं है कि वोह उन दोनों की ख़िदमत से मरतबे का ख़्वाहिश मन्द हो मगर येह कि उस में अल्लाह पाक की रिज़ा और वालिदैन की रिज़ा हो और न ही उन की ख़िदमत करने से रियाकारी का शिकार हो जाए क्यूंकि इस हाल में उन की ख़िदमत करना गुनाह है और ऐसे शख़्स की रियाकारी को अन्क़रीब अल्लाह पाक ज़ाहिर फ़रमा देगा और यूं उस का मर्तबा वालिदैन के दिल से गिर जाएगा।"[5] लिहाज़ा बादे वफ़ात, हुक़ूक़ की अदाएगी में भी इस का ख़याल रखे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सब को ज़िन्दगी में भी और बादे विसाल भी वालिदैन के हुक़ूक़ कमा हक़्क़ुहू अदा करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) ابو داؤد، 4/434، حدیث: 5142 (2) فیضان ریاض الصالحین، 4/50 (3) مرآۃ المناجیح، 6/532، 533 ملخصاً (4) فتاویٰ رضویہ، 24/391 ملخصاً (5) مرقاۃ المفاتیح، 8/669، تحت الحدیث: 4936 ملخصاً۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 ह़ज़रते इमामे हुसैन के शहज़ादे और शहज़ादियों की तादाद

सुवाल : इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के कितने शहज़ादे और कितनी शहज़ादियां थीं?

जवाब : इमाम मुह़िब्बुद्दीन त़बरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ अपनी किताब **"ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा"** में फ़रमाते हैं : इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के छे शहज़ादे और तीन शहज़ादियां हैं। शहज़ादों के नाम येह हैं : 1 अ़ली अकबर 2 ज़ैनुल आ़बिदीन 3 अ़ली असग़र 4 मुह़म्मद 5 अ़ब्दुल्लाह 6 जाफ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم और शहज़ादियों के नाम येह हैं : 1 ज़ैनब 2 सुकैना 3 फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ। (ذخائر العقبیٰ، ص258) लोगों में सकीना (सीन पर ज़बर और काफ़ के नीचे ज़ेर के साथ) मारूफ़ (यानी मश्हूर) है, जब कि दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ "सकीना" नहीं बल्कि "सुकैना (सीन पर पेश और काफ़ पर ज़बर)" है, वाक़िआ़ए करबला में जिन शहज़ादी का तज़्किरा किया जाता है वोह येही ह़ज़रत सुकैना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हैं अगर उन की निस्बत से बच्ची का नाम रखना हो तो "सुकैना" रखिए। अलबत्ता "सकीना" नाम रखने में भी कोई ह़रज नहीं कि येह क़ुरआने करीम का एक लफ़्ज़ है जिस का माना "चैन, सुकून और अम्न" है।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 मुह़र्रमुल ह़राम 1441 हि.)

2 दो मर्ह़ूमीन की बर्सियां एक साथ करना कैसा?

सुवाल : अगर किसी के हां दो महीनों में यके बाद दीगरे दो अम्वात हो जाएं तो उन की बर्सी एक साथ कर सकते हैं?

जवाब : जी हां! एक साथ बर्सी करने में ह़रज नहीं, क्यूंकि बर्सी दर अस्ल ईसाले सवाब है। अगर कोई बर्सी नहीं भी करता तो वोह गुनाहगार नहीं है, लेकिन बर्सी को नाजाइज़ कहने वाला गुनाहगार होगा, क्यूंकि शरीअ़त ने बर्सी से मना नहीं किया।

(मदनी मुज़ाकरे, 4 मुह़र्रमुल ह़राम 1441 हि.)

3 "अगर दुनिया में तमाम दियानतदार होते तो जन्नत दुनिया ही में होती" कहना कैसा?

सुवाल : "अगर दुनिया में तमाम दियानतदार होते तो जन्नत दुनिया ही में होती" ऐसा कहना कैसा है?

जवाब : हो सकता है इस से येह मुराद हो कि हर त़रफ़ अम्न होता और लोग लूट मार न करते, न किसी को तक्लीफ़ देते और सब के सब अम्नो अमान से रह रहे होते तो गोया ऐसा होना दुनिया में जन्नत होने जैसा है जैसे कश्मीर को वादिए जन्नत बोलते हैं। इस त़रह़ के जुम्ले बत़ौरे मुहावरा बोले जाते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 7 मुह़र्रमुल ह़राम शरीफ़ 1441 हि.)

4 बीज बोते वक़्त कीड़े मार दवाई डालना कैसा?

सुवाल : बीज बोते वक़्त कीड़े मारने की दवाई डालते हैं तो क्या इस से गुनाह नहीं मिलेगा?

जवाब : जरासीम कुश दवाएं बीजों में डाल सकते हैं, इस में कोई गुनाह नहीं। (देखिए : मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

5 वालिदैन का बच्चों के हर मुआमले में मुदाख़लत करना कैसा ?

सुवाल : वालिदैन को अपने बच्चों की ज़िन्दगी में कितना इख़्तियार है ? क्या वोह उन के हर मुआमले में मुदाख़लत कर सकते हैं ?

जवाब : मां बाप के बाज़ अहकाम वोह हैं जिन को मानना फ़र्ज़ होता है, जब कि बाज़ में तख़फ़ीफ़ (यानी कमी) होती है, जिन का मानना फ़र्ज़ है वोह नहीं मानेंगे तो गुनहगार होंगे, और जिन बातों का मानना फ़र्ज़ नहीं और हुक्मे शरीअ़त के ख़िलाफ़ भी नहीं तो उस को बजा लाए और उन की मुदाख़लत पर अपना दिल बड़ा रखे। जब वालिदैन बड़ी उम्र को पहुंच जाते हैं तो बसा औक़ात उन की मुदाख़लत बढ़ जाती है, दर अस्ल उन्हों ने पुराना दौर देखा होता है जिस की वज्ह से उन को लगता है कि औलाद ग़लत कर रही है, हमारे दौर में तो येह नहीं होता था, लिहाज़ा उन की सख़्त बातों को बरदाश्त करना चाहिए जैसा उन्हों ने बचपन में हमें बरदाश्त किया !

(मदनी मुज़ाकरा, 13 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

6 क्या संजीदा शख़्स से लोग बोर हो जाते हैं ?

सुवाल : क्या संजीदा रहने वाले शख़्स से लोग बोर हो जाते हैं ?

जवाब : हर संजीदा आदमी बोर नहीं करता, जो शख़्स संजीदा और ख़ामोश रहता हो लेकिन मुस्कुराता भी हो तो उस की संजीदगी किसी को तक्लीफ़ नहीं देती। मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी और हाजी ज़मज़म अ़त्तारी की तबीअ़त में संजीदगी थी लेकिन उन के पास बैठने वाला बोर नहीं होता था, मैं ने उन्हें किसी से मज़ाक़ करते हुए नहीं देखा। (मदनी मुज़ाकरा, 10 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

7 रिश्ता तै करते वक़्त लड़के वालों से लड़की वालों का पैसे लेना कैसा ?

सुवाल : बाज़ अ़लाक़े ऐसे हैं जहां लड़के वाले रिश्ता लेने जाएं तो लड़की वाले पांच लाख, 10 लाख रुपिए मांग लेते हैं और लड़की को जहेज़ में अपनी मर्ज़ी की चीज़ें देते हैं। सुवाल येह है कि क्या लड़की वालों का पैसे लेना जाइज़ है ?

जवाब : लड़की वालों का लड़के वालों से इस तरह पैसे लेना गोया कि लड़की को फ़रोख़्त करना है। लड़की वाले इस तरह से जो पैसे ले रहे हैं येह रिश्वत है। इसी तरह रुख़्सती के मौक़अ़ पर अगर मसलन लड़की का भाई कहता है कि इतनी रक़म दोगे तो ही लड़की को रुख़्सत करूंगा येह भी रिश्वत है। बाज़ क़ौमों के बारे में सुना है कि वोह इस तरह करते हैं, अल्लाह पाक आ़फ़ियत नसीब फ़रमाए। आमीन (देखिए : मदनी मुज़ाकरा, 9 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

8 गुनाहों में इज़ाफ़े का सबब मौत को भूलना है

सुवाल : क्या गुनाहों में इज़ाफ़े का सबब मौत को भूल जाना है ?

जवाब : जब इन्सान मौत को भूल जाता है तो इस के अन्दर बेबाकी (यानी दिलेरी) पैदा हो जाती है। जब कोई शख़्स किसी गुनाह के काम को अन्जाम देने के लिए अपने क़दम बढ़ाने लगेगा तो मौत की याद उसे गुनाह करने से रोक देगी। फिर वोह सोचेगा कि मुझे भी मरना है, अगर इश गुनाह की वज्ह से क़ब्र में मुझे सांप लिपट गया या मुझे आग ने घेर लिया तो मैं क्या करूंगा ? गुनाह से बच जाना येह मौत को याद करने ही की बरकत है। मौत को भूल जाना येह बहुत बड़ी ग़फ़लत है और येही ग़फ़लत गुनाहों में इज़ाफ़े का सबब बन जाती है। (मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ 1442 हि.)

9 जहाज़ में खाने के लिए दिए जाने वाले बरतन घर ले जाना कैसा ?

सुवाल : जो लोग जहाज़ में सफ़र करते हैं उन्हें जहाज़ का अ़मला खाना देता है लेकिन वोह अ़मला खाने के बाद बरतन नहीं मांगता तो क्या इस सूरत में वोह बरतन मुसाफ़िर अपने पास रख सकता है ?

जवाब : जहाज़ में मुसाफ़िरों को जिन बरतनों में खाना दिया जाता है वोह उ़मूमन दो तरह के होते हैं या तो वोह Disposable होते हैं या ऐसे होते हैं जिन्हें धो कर इस्तिमाल किया जा सकता है। हर समझदार आदमी समझ सकता है कि कौन सा बरतन रखने का है और कौन सा बरतन फेंकने का है। जो बरतन फेंकने का नहीं है उस को ले जाना गुनाह है।

(देखिए : मदनी मुज़ाकरा, 20 ज़ुल क़ादतुल हराम 1441 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अमल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 क़ुरबानी के जानवर के हार रस्सी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारे क़ुरबानी के जानवर के गले में मामूली सी रस्सी और एक मोतियों का हार था जो क़ुरबानी के वक़्त ख़ून आलूद हो गए थे इस लिए हम ने उन्हें फेंक दिया फिर किसी ने तवज्जोह दिलाई कि इसे सदक़ा करना होता है तो क्या उस रस्सी और हार की रक़म हमें सदक़ा करनी होगी ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़ुरबानी के जानवर शआइरिल्लाह में से हैं उन की ताज़ीमो तकरीम का हुक्म है लिहाज़ा जब जानवर को शआइरे इस्लाम की ज़ीनत की निय्यत से सजाया जाए और येह निय्यत भी हो कि बाद में मुसलमान फ़ुक़रा को फ़ायदा पहुंचाने की ग़रज़ से अश्याए ज़ीनत मिस्ले झूल व हार वग़ैरा सदक़ा करूंगा तो अब अपनी इस निय्यत पर अमल करते हुए उसे सदक़ा करने का हुक्म होगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से वादा कर के उस से फिरना बहुत बुरी बात है मगर उमूमन हमारे यहां उन निय्यतों के साथ जानवर पर हार वग़ैरा नहीं डाले जाते लिहाज़ा जानवर पर हार वग़ैरा डालते वक़्त अगर आप की भी ऐसी कोई निय्यत नहीं थी तो उस हर या उस की क़ीमत सदक़ा करना आप पर शरअन लाज़िम नहीं। यूंही रस्सी की क़ीमत का तसद्दुक़ भी लाज़िम नहीं कि येह आम रस्सियां जिन से जानवर को बांधा जाता है, नकेल की सूरत में जानवर के चेहरे और गले के गिर्द होती हैं वोह उन जानवरों की ताज़ीमो तकरीम के लिए नहीं बल्कि उन की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से होती हैं इस लिए भी उन के सदक़े का हुक्म नहीं।

तम्बीह : अगर वोह हार या रस्सी इस क़ाबिल थी कि उस से नफ़ा उठाया जा सकता था या उसे बेचा जा सकता था तो उसे फेंक देना जाइज़ नहीं था कि येह माल का ज़ाएअ करना हुवा जो कि जाइज़ नहीं लिहाज़ा इस सूरत में आप पर तौबा लाज़िम है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 शरई फ़क़ीर के लिए ऐबदार जानवर की क़ुरबानी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं साहिबे निसाब नहीं हूं, मैं ने बक़रईद से एक दिन पहले क़ुरबानी करने के लिए बकरा ख़रीदा था, बाद में मुझे पता चला कि उस बकरे को बिल्कुल भी नज़र नहीं आता, मगर इस ईद पर मैं ने उसी बकरे की क़ुरबानी कर दी है, अब मालूम येह करना है कि क्या इस जानवर की क़ुरबानी हो गई या नहीं ?

नोट : साइल क़ुरबानी के लिए जानवर ख़रीदते वक़्त भी साहिबे निसाब नहीं था और क़ुरबानी की नज़्र भी नहीं मानी थी।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शरई फ़क़ीर पर क़ुरबानी लाज़िम नहीं होती लेकिन अगर वोह क़ुरबानी की निय्यत से जानवर ख़रीद ले तो उस के हक़ में ख़ास वोही जानवर क़ुरबानी के लिए मुतअय्यन हो जाता है अगर्चे उस में ऐसा

ऐ़ब हो जो क़ुरबानी से मानेअ़ हो लिहाज़ा पूछी गई सूरत में चूंकि आप साहि़बे निसाब नहीं थे लेकिन आप ने क़ुरबानी करने की निय्यत से बकरा ख़रीदा अगर्चे उसे बिल्कुल भी नज़र नहीं आता था था तो भी उस की क़ुरबानी करने से क़ुरबानी अदा हो गई।

याद रहे ! येह हुक्म सिर्फ़ शरई फ़क़ीर के लिए है अगर कोई ग़नी शख़्स ऐसा जानवर ख़रीद ले जिस को नज़र न आता हो तो इस सूरत में ग़नी के लिए दूसरा सही़ह़ जानवर क़ुरबान करना वाजिब होगा, नाबीना जानवर ज़ब्ह़ करने से क़ुरबानी अदा नहीं होगी।

यूंही ! अगर शरई फ़क़ीर ने पहले ही ग़ैर मुअ़य्यन जानवर क़ुरबान करने की मन्नत मानी और मन्नत पूरी करने के लिए उस ने ऐसा जानवर ख़रीदा जो कि नाबीना है तो उस जानवर को ज़ब्ह़ करने से उस की नज़्र पूरी नहीं होगी क्यूंकि नज़्र ग़ैर मुअ़य्यन में ऐसा जानवर लाज़िम होता है जो क़ुरबानी की शराइत़ पर पूरा हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 करन्सी नोटों के इ़वज़ सिक्कों की नफ़ा पर उधार ख़रीदो फ़रोख़्त

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि नोट के बदले नोट की बैअ़ नफ़ा के साथ नक़्द जाइज़ है, उधार जाइज़ नहीं। अब पूछना येह है कि अगर सिक्कों को नोट के बदले उधार बेचा जाए, तो क्या येह ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ है या नहीं ? सूद के ज़ुमरे में तो नहीं आता।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ख़रीदो फ़रोख़्त में सूद होने न होने के ह़वाले से क़ानूने शरई येह है कि जब दो चीज़ें जिन्स व क़दर (वज़्न, कील) में मुत्तफ़िक़ हों यानी येह दोनों वस्फ़ (जिन्स व क़दर) पाए जाएं तो कमी बेशी व उधार दोनों सूद व ह़राम होते हैं और जब दोनों वस्फ़ न पाए जाएं तो कमी व बेशी व उधार दोनों जाइज़ होते हैं और जब एक वस्फ़ यानी सिर्फ़ जिन्स या सिर्फ़ क़दर पाया जाए और दूसरा वस्फ़ न पाया जाए तो कमी बेशी जाइज़ होती है और उधार सूद व ह़राम होता है।

इस क़ानूने शरई के मुताबिक़ नोट और सिक्कों में दोनों वस्फ़ नहीं पाए जाते कि एक तो येह हम जिन्स नहीं हैं क्यूंकि नोट की अस्ल काग़ज़ है, जब कि सिक्कों की अस्ल मुख़्तलिफ़ धातें हैं, दूसरा हमारे उ़र्फ़े आ़म में नोट और सिक्कों के अ़ददी यानी गिन कर दी जाने वाली चीज़ होने की वजह से उन में दूसरा वस्फ़ क़दर (वज़्न व कील) नहीं पाया जाता, लिहाज़ा नोट के बदले सिक्कों की ख़रीदो फ़रोख़्त जिस त़रह नक़्द यानी दोनों जानिब से इसी मजलिस में क़ब्ज़ा हो जाए, जाइज़ है, इसी तरह उधार यानी एक जानिब से कब्ज़ा हो दूसरी जानिब से न हो, येह भी जाइज़ है, अलबत्ता दोनों जानिब से क़ब्ज़ा न हो तो नाजाइज़ है कि इस त़रह़ येह बैउ़ल काली बिलकाली यानी उधार की उधार के साथ बैअ़ की सूरत है और अज़ रूए ह़दीस वक़्फ़ा उधार की उधार के साथ बैअ़ नाजाइज़ो ह़राम है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 रुकूअ़ से सहवन अल्लाहु अकबर कहते हुए उठना कैसा है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि इमाम साहि़ब ने नमाज़ में भूल कर سمع اللہ لمن حمدہ की जगह अल्लाहु अकबर कह दिया और सज्दए सहव भी नहीं किया, इस सूरत में नमाज़ हो गई या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइय्या के मुताबिक़ सज्दए सहव, भूले से नमाज़ का कोई वाजिब छूटने से वाजिब होता है, सुनन व मुस्तह़ब्बात के तर्क से वाजिब नहीं होता, अलबत्ता उन के क़स्दन या सहवन तर्क से नमाज़ का इआ़दा मुस्तह़ब होता है और रुकूअ़ से उठते हुए इमाम के लिए سمع اللہ لمن حمدہ कहना सुन्नत है, वाजिब नहीं, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में नमाज़ हो गई, सज्दए सहव वाजिब नहीं हुवा था, अलबत्ता इस नमाज़ को दोबारा पढ़ना मुस्तह़ब है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लाम ही क्यूं ?

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

पैग़म्बरे इस्लाम यतीमों के मुहाफ़िज़

यतीमों के मुहाफ़िज़

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एलाने नुबुव्वत से पहले भी कमज़ोर और बे आसरा लोगों की मदद फ़रमाया करते थे। एलाने नुबुव्वत के बाद तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ अपने अक़्वाल से यतीमों की त़रफ़दारी फ़रमाते, तरग़ीब दिलाते बल्कि अपने मुबारक अ़मल से भी यतीमों को उन का ह़क़ दिलाते थे जैसा कि एक बार अबू जहल ने एक यतीम की परवरिश की ज़िम्मेदारी ली। वोह ख़स्ता ह़ाल यतीम एक दिन अबू जहल के पास आया और अपने माल में से कुछ त़लब किया। अबू जहल ने उसे धक्के मार मार कर निकाल दिया। क़ुरैश ने उस यतीम को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेज दिया कि उन से जा कर फ़रियाद करो। उन का मक़्सद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाना था लेकिन यतीम उन की बुरी निय्यत से ला इ़ल्म था, उस ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रियाद की तो आप उस यतीम के साथ अबू जहल के पास गए, उस ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखते ही यतीम का माल फ़ौरन उस के ह़वाले कर दिया। क़ुरैश ने अबू जहल को मलामत की, कि तू अपने दीन से फिर गया है। अबू जहल ने जवाब दिया : ख़ुदा की क़सम ! मैं अपने दीन से फिरा नहीं, अस्ल बात येह है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाएं और बाएं त़रफ़ एक नेज़ा देखा और मुझे येह डर लगा कि अगर मैं ने उन की बात न मानी तो येह नेज़ा मुझे चीर डालेगा।[1] ह़ज़रते बशीर बिन अ़क़रबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि जंगे उ़हुद के दिन मेरी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे वालिद का क्या हुवा ? तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया वोह शहीद हो गए हैं, अल्लाह करीम उन पर रह़म फ़रमाए। मैं येह सुन कर रो पड़ा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे पकड़ा, मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे अपने साथ सुवारी पर बिठा कर फ़रमाया : اَمَا تَرْضٰى اَنْ اَكُوْنَ اَنَا اَبُوْكَ وَتَكُوْنَ عَائِشَةُ اُمُّكَ ؟ यानी क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप और आइशा तुम्हारी मां बन जाए।[2]

इसी त़रह़ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यतीमों और बेवाओं की दस्तगीरी फ़रमाते थे। आप ने जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते अस्अद बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के इन्तिक़ाल के बाद उन की बच्चियों की निहायत शफ़्क़त व मह़ब्बत से परवरिश फ़रमाई। आप ने उन बच्चियों को सोने की ख़ूबसूरत बालियां पहनाईं जिन में क़ीमती मोती जड़े हुए थे।[3]

سُبْحٰنَ اللّٰه ! हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कैसी अपनाइयत और किस क़दर शफ़्क़त व मेहरबानी का अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाया। यक़ीनन किसी यतीम के साथ किए जाने वाले एह़सान व भलाई का येह वाक़िआ़ अपनी मिसाल आप है। येह ह़क़ीक़त है कि इस्लाम और प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही यतीमों के मल्जा व मावा और

मुहाफ़िज़ व रखवाले हैं कि जो इस अन्दाज़ में अपने मानने वालों को तालीम इरशाद फ़रमा रहे हैं।

यतीम और अहादीसे नबविय्या

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस किस अन्दाज़ से यतीमों की मदद करने उन के हुक़ूक़ अदा करने की तरग़ीब दिलाई है ताकि लोग सिर्फ़ उन्हें क़ाबिले रहम समझ कर उन की मदद न करें बल्कि अल्लाह की रिज़ा पाने, अपने गुनाह बख़्शवाने, बुलन्द दरजात पाने, अपनी आख़िरत बनाने और जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अपनाने के लिए यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक करें। नबिय्ये करीम ने तो घर के अच्छा या बुरा होने का मेयार भी यतीम के साथ किए जाने वाले सुलूक को बनाया है जैसा कि फ़रमाया : خَيْرُ بَيْتٍ فِي الْمُسْلِمِينَ بَيْتٌ فِيهِ يَتِيمٌ يُحْسَنُ إِلَيْهِ، وَشَرُّ بَيْتٍ فِي الْمُسْلِمِينَ بَيْتٌ فِيهِ يَتِيمٌ يُسَاءُ إِلَيْهِ यानी मुसलमानों के घरों में बेहरतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और मुसलमानों के घरों में बदतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ बुरा सुलूक किया जाता है।[4]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : यतीम से सुलूक की बहुत सूरतें हैं : उस की परवरिश, उस के खाने पीने का इन्तिज़ाम, उस की तालीमो तरबियत, उसे दीनदार नमाज़ी बनाना सब ही उस में दाख़िल है। ग़रज़ कि जो सुलूक अपने बच्चे से किया जाता है वोह यतीम से किया जाए (और) बुरे सुलूक में मज़कूरा चीज़ों की मुक़ाबिल तमाम चीज़ें दाख़िल हैं।[5]

एक और ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : जो कोई यतीम के सर पर सिर्फ़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए हाथ फेरे तो जितने बालों पर उस का हाथ गुज़रा हर बाल के बदले में उस के लिए नेकियां हैं और जो कोई यतीम लड़की या यतीम लड़के पर एहसान करे मैं और वोह जन्नत में (दो उंगलियों को मिला कर फ़रमाया कि) इस त़रह होंगे।[6] येह सवाब तो ख़ाली हाथ फेरने का है जो उस पर माल ख़र्च करे, उस की ख़िदमत करे, उसे तालीमो तरबियत दे सोच लो कि उस का सवाब कितना होगा। यतीम को अपने साथ खाने में शरीक करना न सिर्फ़ बरकत का बाइस बल्कि खाने के शैत़ान से महफ़ूज़ रहने का नुस्ख़ा भी है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَا قَعَدَ يَتِيمٌ مَعَ قَوْمٍ عَلَى قَصْعَتِهِمْ، فَيَقْرَبُ قَصْعَتَهُمْ شَيْطَانٌ जिस दस्तरख़्वान पर यतीम (खाने में शरीक) होता है शैत़ान उस दस्तरख़्वान के क़रीब नहीं जाता।[7]

दिल की सख़्ती दूर करने का त़रीक़ा

यतीम के सर पर हाथ फेरने से नेकियों के ह़ुसूल के साथ साथ दिल की सख़्ती दूर होती और ह़ाजतें भी पूरी होती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि एक आदमी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहमें अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तू चाहता है कि तेरा दिल नर्म हो जाए और तेरी ह़ाजतें पूरी हों ? तो यतीम पर रहम किया कर और उस के सर पर हाथ फेरा कर और अपने खाने में से उसे खिलाया कर ऐसा करने से तेरा दिल नर्म होगा और तेरी ह़ाजतें पूरी हो जाएंगी।[8] आज भी हमारे मुआशरे में यतीम मौजूद हैं और हमारा फ़रीज़ा है कि हम उन के लिए तह़फ़्फ़ुज़ और महब्बत फ़राहम करें। आएं ! हम सब मिल कर यतीमों के हुक़ूक़ को उजागर करें, यतीमों के मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी तालीमात को आ़म करें और अपने आमाल के ज़रीए अल्लाह पाक की रिज़ा ह़ासिल करें इस लिए कि जिस ने यतीम से हमदर्दी की वोह अल्लाह करीम का क़ुर्ब पाएगा, उस का दिल नर्म होगा, और उस के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी है।

---

(1) تفسیر کبیر، 11 / 301، الماعون، تحت الآیۃ:1 (2) مجمع الزوائد، 8/295، حدیث: 13517 (3) طبقات ابن سعد، 3/458 (4) ابن ماجہ، 4/193، حدیث:3679 (5) مراٰۃ المناجیح، 6/562 (6) مسند احمد، 8/272، حدیث: 22215 (7) معجم اوسط، 5/230، حدیث:7165 (8) مجمع الزوائد، 8/293، حدیث:13509۔

इक साल और गुज़र गया

इस्लाम में क़मरी साल मोतबर है जिस की इब्तिदा मुहर्रमुल हराम से होती है। उस की हुर्मत तो उस के नाम ही से ज़ाहिर है। मुहर्रमुल हराम अश्हरे हुरम में से और बरकत वाला महीना है। मुफ़स्सिरे क़ुरआन, अदीबे जलील, सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने साल 1338 हि. के इख़्तिताम और नए साल की आमद पर एक मज़्मून लिखा जिस में आप ने निहायत बलीग़ और फ़िक्र अंगेज़ उस्लूब में वक़्त की हक़ीक़त, उस के तग़य्युरात और इन्सानी ज़िन्दगी पर उस के असरात को बयान फ़रमाया। आप ने साले गुज़श्ता के गुज़रने को महज़ दिनों और महीनों की तब्दीली नहीं बल्कि एक गहरी मानवी हक़ीक़त के तौर पर पेश किया है, जिस में इन्सान के लिए नसीहत और इब्रत के कई पहलू पोशीदा हैं, चन्द कलिमात मुलाहज़ा कीजिए:

साले गुज़श्ता के तमाम गोरे काले अन्धेरे उजाले, नए नए रूप दिखाने वाले औक़ात मुन्क़ज़ा हो गए (यानी गुज़र गए)। तरह तरह के लैलो नहार, अय्यामे ख़ज़ां और मौसमे बहार अपनी अपनी शानो शौकत दिखा कर रुख़्सत हुए। शामो सहर के ज़ुल्मानी व नूरानी पैकर अपनी अदाओं के साथ गुज़र गए, शबो रोज़ के सियाह व सफ़ेद अदवार का दराज़ अर्सा नीली पीली आंखें दिखा कर चलता बना, ऐशो राहत के अय्याम, शादी व कामरानी के दिन, जश्नो इशरत की रातें, चश्मे ज़दन में तमाम हो गईं। हसरतो अरमान के औक़ात, अख़्तर शुमारी, इन्तिज़ार की साआत, हिज्र व फ़िराक़ की घड़ियां जो काटे न किटती थीं उन का ख़ातिमा हो गया। रंजो ग़म के कड़वे और तल्ख़ दिन, मसाइबो अफ़्कार के सख़्त व नागवार ज़माने शदाइद व तकालीफ़ के जां सोज़ लम्हे, बेकसी व बेबसी के दर्द अंगेज़ लहज़े, असीरी व बीमारी, रंजोरी वे बेचारगी के मायूस किन अय्याम भी आख़िर हुए।

औक़ात मेहमाने मुस्तअ़जल की तरह आए और चले गए। सुब्ह का सुहाना समां फ़रहत अंगेज़ियां कर के रवाना हुवा तो चाश्त ने अपने उ़रूज व तरक़्क़ी का दबदबा दिखाया मगर वोह भी न ठहर सका। निस्फ़ुन्नहार (दोपहर) ने अपनी कमाल की रौशनी व गर्मी

दिखाई और रहलत कर गया। फिर एतिदाल की तरफ़ तवज्जोह की हरारत कम हुई, गर्मी धीमी पड़ी लेकिन वोह भी बाक़ी न रह सकी। शाम तारीकियों का लश्कर ले कर आई और उस ने दिन की अफ़्वाज पर ग़लबा हासिल किया ही था कि शबे दीजोरने अपनी भयनाक अन्धेरी से उस को मग़लूब किया। सहर ने उस का भी गिरेबान चाक किया।

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तमाम मौसमों सर्मा, ख़ज़ां, बहार, गर्मा, बरसात के आने और बिल आख़िर बेवफ़ाई कर जाने यानी रुख़्सत हो जाने को भी बड़े दिलनशीन जुम्लों और मुहावरात व इस्तिआरात के साथ बयान किया है जिस का ख़ुलासा येह है कि मौसमे सर्मा जाहो जलाल के साथ आया, सर्दी, लिबास और ख़ूराक में तब्दीली लाया मगर जल्द रुख़्सत हो गया। ख़ज़ा ने बाग़ों की रौनक़ छीन कर वीरानी फैलाई, वोह भी ज़ियादा देर न ठहरी। फिर बहार ने उजड़े चमन आबाद किए और हर तरफ़ ताज़गी व ख़ुश्बू बिखेर दी, मगर येह भी आरज़ी साबित हुई। गर्मी ने शिद्दत दिखाई, ज़मीन को तपाया और लोगों को घरों तक महदूद किया, फिर ख़त्म हो गई। बरसात ने बारिश, सब्ज़ा और ठन्डक दी, मगर वोह भी गुज़र गई। यूं तमाम मौसम आते जाते रहे, हमें याद दिलाते हुए कि ज़िन्दगी और उस के हालात सब आरज़ी हैं।

सदरुल अफ़ाज़ील मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मौसमों की बेसबाती, वक़्त की बेवफ़ाई और लैलो नहार, शाम व सहर के आने और फिर चले जाने की जानिब तवज्जोह दिलाने के बाद नसीहत फ़रमाते हैं कि

येह औक़ात गए लेकिन तन्हा न गए, हमारी उम्र का एक हिस्सा अपने साथ ले गए। हमारी हयात का एक जुज़्व कम कर गए। साल गुज़रने पर दफ़ातिर में साल की कारगुज़ारियां दर्ज होती हैं। तुज्जार और ज़मीनदार अपनी किताबें और बहियां तब्दील करते हैं और पिछले साल के नफ़ा नुक़्सान का हिसाब करते हैं। अगर नफ़ा नज़र आता है तो ख़ुश होते हैं और आइन्दा उस से ज़ियादा नफ़ा हासिल करने की तदबीरें करते हैं और इस तरफ़ अपनी तवज्जोह पहले से ज़ियादा सर्फ़ करते हैं। अगर नुक़्सान मालूम होता है तो रंजीदा होते हैं, और उस की तलाफ़ी की फ़िक्रों में सरगर्म और मुस्तअ़द हो जाते हैं।

साल हम से रुख़्सत हो रहा है। हमें भी हिसाब करना है कि हम ने मताए ज़िन्दगी को किस जिन्स से बदला और हम को इस तिजारत में नफ़ा हुवा या टूटा (यानी नुक़्सान), हमारी उम्र के कितने औक़ात ताअ़त व इबादत और मर्ज़िए इलाही में सर्फ़ हुए ? कितने बेकार गए ? अगर हम को इस साल के अ़र्से में आमाले सालिहा और इबादात व ताआ़त का काफ़ी सर्माया बहम पहुंचा है तो हम को ख़ुश होना चाहिए और अल्लाह तआ़ला का शुक्र कर के आइन्दा उस से ज़ियादा नफ़ा हासिल करने और उस दौलत को बढ़ाने की तदबीर करना चाहिए और अगर बद क़िस्मती से हमारे औक़ात की पूंजी बेकार ज़ाएअ़ हुई या उस का अक्सर हिस्सा ग़फ़लत में गुज़र कर लुट गया तो हम को रंजीदा होना चाहिए और सच्चे दिल से नदामत के साथ आंसू बहाते हुए तौबा कर के आइन्दा ज़िन्दगी को कामयाब बनाने और ताअ़त व इबादत और मर्ज़ियाते इलाही में सर्फ़ करने की सरगर्म सई करना चाहिए और दूसरों की तिजारत के नफ़े पर नज़र कर के रश्क करना और अपने आप को आमाले सालिहा के लिए मुस्तअ़द बनाना लाज़िम है। हम को देखना है इस तवील अ़र्से में ख़ुदावन्दे आलम की कितनी बेशुमार नेमतें हम को मिलीं और हम ने उन की क़दर न की। हम को जांचना है कि कितने फ़राइज़ हम से तर्क हुए। हम को ग़ौर करना है कि उन की अदा की क्या सबील है। हम को मुस्तअ़द हो कर जल्द से जल्द उन को अदा करना और आइन्दा फ़राइज़ की अदा में सरगर्म रहना लाज़िम है।

(ملخص از: مقالات صدر الافاضل، ص212)

इस्लामी तरबियत के मुअस्सिर ज़राएअ़

आज हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जिस में फ़ित्नों का सैलाब हर त़रफ़ उमड़ आया है। बद अ़मली बे राह रवी और मुख़्तलिफ़ नज़रियात व अफ़्कार ने इन्सान के ज़ेहन व क़ल्ब पर गहरे असरात छोड़े हैं। ऐसे पुर आशोब ह़ालात में इस्लामी तरबियत की ज़रूरत न सिर्फ़ बरक़रार है बल्कि पहले से कहीं ज़ियादा बढ़ चुकी है। येह तरबियत ही वोह सरचश्मा है जो दिलों को रौशनी, ज़ेहनों को बसीरत और किरदार को पाकीज़गी अ़ता करती है। हमें ऐसे मुअस्सिर ज़राएअ़ को इख़्तियार करना होगा जो हमें न सिर्फ़ दीन की सच्चाई से रूशनास करवाएं बल्कि हमारी अ़मली ज़िन्दगी को भी अल्लाह की रिज़ा के सांचे में ढाल दें। आइए ! चन्द ऐसे अहम ज़राएअ़ मुलाह़ज़ा कीजिए जो इस्लामी तरबियत के लिए निहायत मुफ़ीद और मुअस्सिर साबित हो सकते हैं :

1 इस्लामी तरबियत में मसाजिद का किरदार इस्लामी तरबियत में मस्जिद का किरदार निहायत अहम और बुन्यादी है। मसाजिद इ़बादत की अदाएगी के साथ साथ एक ऐसा तरबियती मर्कज़ हैं जहां मुसलमान की रूह़ानी, अख़्लाक़ी, इ़ल्मी और समाजी तरबियत होती है। नमाज़, तिलावते क़ुरआन और वाज़ो नसीह़त के ज़रीए इन्सान में ईमान, तक़्वा और उख़ुव्वत के जज़्बात परवान चढ़ते हैं। मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ से इत्तिह़ाद, मसावात और नज़्मो ज़ब्त का अ़मली मुज़ाहरा होता है। अ़हदे नबवी में मस्जिद दीनी तालीम, मुशावरत, अ़द्लो इन्साफ़ और फ़लाह़ी सरगर्मियों का मर्कज़ थी, जहां से सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को दीनो दुनिया की राहनुमाई मिली। आज भी अगर मसाजिद अपने इसी तरबियती किरदार को ज़िन्दा करें तो मुआ़शरे में अख़्लाक़ी बेदारी, दीनी शुऊ़र और इज्तिमाई़ हम आहंगी पैदा की जा सकती है। اَلْحَمْدُلِلّٰه फ़ी ज़माना दावते इस्लामी ने इस तरबियती ज़रीए को अपनाते हुए मस्जिद को तरबियत व इस्लाह़े उम्मत का मर्कज़ बना कर मुसलमानों में दीन से मह़ब्बत पैदा की है। रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के लिए मुसलमानों को जगा कर मस्जिद में लाना, नमाज़े फ़ज्र के बाद तफ़्सीर सुनने सुनाने का ह़ल्क़ा लगा कर उस में क़ुरआन फ़हमी की तालीम देना, उ़मूमन इ़शा की नमाज़ के बाद मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में क़ुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने का एहतिमाम करना नीज़ मस्जिद दर्स में फ़ैज़ाने सुन्नत के चन्द सफ़ह़ात के दर्स का सिल्सिला करना, इस के इ़लावा हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त व मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए तरबियत करना येह सब ऐसे ज़राएअ़ हैं जिन के ज़रीए दावते इस्लामी ने मस्जिद के किरदार को ज़िन्दा किया और लाखों

मुसलमानों को नमाज़, इल्मे दीन और सुन्नतों की राह पर गामज़न किया है।

2 तरबियती कोर्सिज़ और दीनी इज्तिमाआ़त का किरदार

इस्लामी तरबियत के निहायत मुअस्सिर और बाबरकत ज़राएअ़ में से दर्से क़ुरआन, सीरते मुस्तफ़ा की क्लासिज़ और कोर्सिज़ और दीनी इज्तिमाआ़त ऐसे तरबियती ज़राएअ़ हैं जो इन्सान की अ़क़ाइद को संवारने, अख़्लाक़ को निखारने और दीनी शुऊ़र को उजागर करने में अहम किरदार अदा करते हैं। उन में सिर्फ़ मालूमात नहीं दी जाती बल्कि दिलों की इस्लाह़, आमाल की बेहतरी, और ज़िन्दगी के मक़्सद की याद दिहानी करवाई जाती है। ह़क़ीक़त में येह दीनी इज्तिमाआ़त और तरबियती हल्क़े, अ़मली तरबियत के मराकिज़ होते हैं, जहां बैठने वालों को न सिर्फ़ इल्म मिलता है बल्कि अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ मज़बूत करने का जज़्बा भी अ़ता होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी क़ुरआनो सुन्नत की रौशनी को आ़म करने के लिए मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से मुसलमानों की इस्लाह़ और तरबियत कर रही है। येह तह़रीक नमाज़ व सुन्नत, अख़्लाक़ियात और इस्लामी तालीमात की त़रफ़ राग़िब करने के लिए मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर तरबियती निशस्तों का एहतिमाम करती है, वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ शोबाजात के अफ़राद की तरबियत का सिल्सिला होता है इस के इ़लावा मदनी क़ाफ़िले भी सीखने सिखाने एक मुअस्सिर ज़रीआ़ हैं जिस में ह़ल्क़े लगा कर शुरका को वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ वग़ैरा के मसाइल की तरबियत की जाती है। हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे के ज़रीए़ भी मुख़्तलिफ़ इल्मी अ़मली और अख़्लाक़ी तरबियत होती है। तरबियती ह़ल्क़े दावते इस्लामी का अहम ह़िस्सा हैं जिन के ज़रीए़ शुरका की अख़्लाक़ी, रूह़ानी, और अ़मली ज़िन्दगी में बेहतरी आती है और एक दीनी माह़ौल मुयस्सर आता है जो इस्लाह़े मुआशरा के लिए निहायत मुफ़ीद है।

3 इस्लामी तरबियत में मद्रसा और उस्ताद का किरदार

मद्रसा इस्लामी तरबियत का बुनियादी मर्कज़ और उम्मत की फ़िक्री व अख़्लाक़ी बुन्यादों का मुह़ाफ़िज़ है, और इस में उस्ताद का किरदार रीढ़ की हड्डी जैसी अहमियत रखता है। मद्रसा इस्लामी तरबियत का वोह इदारा है जहां इल्मे दीन सिखाया जाता है, अ़क़ीदा, इ़बादात और अख़्लाक़ की इस्लाह़ की जाती है, और त़लबा को क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में एक अच्छा मुसलमान और नफ़ा बख़्श शहरी बनने की तरबियत दी जाती है। इस माह़ौल में उस्ताद सिर्फ़ मुअ़ल्लिम नहीं बल्कि मुरब्बी, राहनुमा और किरदार साज़ होता है जो अपने अ़मल, गुफ़्तार और अख़्लाक़ से त़लबा के दिलों में ईमान, तक़्वा, ख़ैरख़्वाही के जज़्बात बेदार करता है। वोह निसाब की तय्यारी, पढ़ाने के अन्दाज़, और त़लबा की सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ राहनुमाई के ज़रीए़ उन्हें दीन के ख़ादिम और उम्मत के रहबर बनने के क़ाबिल बनाता है। यूं मद्रसा और उस्ताद मिल कर इस्लामी तरबियत के वोह मज़बूत सुतून हैं जिन पर उम्मते मुस्लिमा की दीनी व अख़्लाक़ी तामीर का दारो मदार है।

4 इस्लामी तरबियत और वालिदैन का किरदार

वालिदैन भी औलाद की इस्लामी तरबियत में बुन्यादी किरदार अदा करते हैं, क्यूंकि बच्चे का पहला मद्रसा उस का घर और पहले उस्ताद उस के वालिदैन होते हैं। अगर वालिदैन ख़ुद दीन पर अ़मल करने वाले, बा अख़्लाक़ और तरबियत के इस्लामी उसूलों से वाक़िफ़ होंगे तो उन की औलाद भी नेक, बा अ़मल और बा अदब बनती है। अफ़्सोस कि आज अक्सर वालिदैन दुनियावी मुआ़मलात में तो सख़्ती और निगरानी करते हैं, मगर दीनी उमूर में ग़फ़लत बरतते हैं। जब औलाद नमाज़ छोड़ती, मद्रसे से ग़ैर ह़ाज़िर होती, मोबाइल व सोशल मीडिया के ग़लत़ इस्तिमाल में मुब्तला रहती या ह़राम व नाजाइज़ कामों में पड़ती है तो अक्सर वालिदैन इस पर तवज्जोह नहीं देते बल्कि लाड प्यार और नर्मी के नाम पर उन्हें मज़ीद बिगाड़ देते हैं। नतीजतन वोही औलाद जो शफ़क़त और राहनुमाई की मुस्तह़िक़ थी, बाद में वालिदैन के लिए दुख और पशेमानी का बाइ़स बन जाती है। इस लिए ज़रूरी है कि वालिदैन अपनी इस्लाह़ के साथ औलाद की दीनी तरबियत पर भी भरपूर तवज्जोह दें, ताकि वोह दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाब हो सके। तरबियते औलाद के बारे में मज़ीद मालूमात के लिए मक्तबतुल मदीना की किताब **"तरबियते**

औलाद" और रिसाला **"औलाद के हुक़ूक़"** का मुतालआ करना इन्तिहाई मुफ़ीद है। मां बाप की शानो अ़ज़मत से आगाही के लिए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला **"समुन्दरी गुम्बद"** का मुतालआ करना भी बेहद मुफ़ीद होगा।

5 सीरते नबवी का मुतालआ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी इस्लामी तरबियत का कामिल नमूना है, जो हमें ज़िन्दगी के हर शोबे में राहनुमाई फ़राहम करती है। आप की सीरत हमें सब्र, इख़्लास, अ़द्ल, हुस्ने सुलूक, अ़फ़्वो दरगुज़र, और तवक्कुल अ़लल्लाह जैसी आला अख़्लाक़ी सिफ़ात अपनाने की तालीम देती है। जब ताइफ़ के लोगों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पत्थर बरसाए तो आप ने उन के ख़िलाफ़ दुआ करने के बजाए उन के लिए हिदायत की दुआ फ़रमाई, जो सब्र और बरदाश्त की बेहतरीन मिसाल है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर अ़मल में इख़्लास को बुन्याद बनाया और अ़द्लो इन्साफ़ के मुआमले में कभी समझौता नहीं किया, यहां तक कि फ़रमाया : "**अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उस का भी हाथ काट दूंगा।**" मक्का फ़त्ह होने के मौक़अ़ पर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने जानी दुश्मनों को भी मुआफ़ कर के अ़फ़्वो दरगुज़र की आला मिसाल क़ाइम की। दुश्मनों के साथ भी नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश आना आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इम्तियाज़ी वस्फ़ था, जब कि ग़ारे सौर में दुश्मनों के क़रीब पहुंचने पर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान : "**ग़म न करो, बेशक अल्लाह हमारे साथ है।**" तवक्कुल अ़लल्लाह का हसीन नमूना है। यूं सीरते नबवी दरअस्ल एक जामेअ़ अ़मली तरबियत गाह है, जिस से हर मुसलमान अपनी ज़ाती, ख़ानदानी और मुआशरती ज़िन्दगी के लिए रौशनी हासिल कर सकता है।

6 मीडिया और तालीम का दुरुस्त इस्तिमाल दौरे हाज़िर में मीडिया एक मुअस्सिर और ताक़तवर ज़रीआ़ है, जिस के मुस्बत इस्तिमाल से दीनी तरबियत, इस्लामी शुऊ़र, और अख़्लाक़ी बेदारी को फ़रोग़ दिया जा सकता है। अगर मीडिया को दुरुस्त सम्त में इस्तिमाल किया जाए तो येह इस्लाम की तालीमात आ़म करने, नेकी की दावत आ़म करने और लोगों के अख़्लाक़ व किरदार को संवारने का बेहतरीन वसीला बन सकता है। दीनी लेक्चर्ज़, क़ुरआनो सीरत कोर्सिज़, और अख़्लाक़ी वीडियोज़ के ज़रीए हर उ़म्र के अफ़राद आसानी से दीनी राहनुमाई हासिल कर सकते हैं। याद रखिए ! इन्टरनेट एक छुरी की मानिन्द है उस का सहीह़ इस्तिमाल फ़ायदेमन्द जब कि ग़लत़ इस्तिमाल तबाहकुन है। बद क़िस्मती से हमारे मुआशरे में आज फ़ोहश मवाद और बेहूदा वीडियोज़ ने नौजवान नस्ल के अख़्लाक़ को नुक़्सान पहुंचाया है। इस लिए ज़रूरी है कि हम ख़ुद भी इन्टरनेट का दुरुस्त इस्तिमाल सीखें और अपनी औलाद की सहीह़ तरबियत करें। इस ह़वाले से दावते इस्लामी की वेबसाइट एक बेहतरीन, मुस्बत और मुफ़ीद प्लेटफ़ॉर्म है, जहां क़ुरआन, ह़दीस सीरत, फ़िक़्ह, मदनी मुज़ाकरे, नात, बयानात, और इस्लामी कुतुबो रसाइल मुख़्तलिफ़ ज़बानों में मुफ़्त दस्तयाब हैं। यहां से इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के हम न सिर्फ़ अपना वक़्त क़ीमती बना सकते हैं बल्कि दूसरों की भी इस्लाह़ कर सकते हैं। अल्लाह पाक हमें उन सहूलियात का दुरुस्त इस्तिमाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

याद रखिए ! आज अगर हम अपने बिखरे हुए अख़्लाक़, कमज़ोर ईमान और इज्तिमाई़ बिगाड़ को दुरुस्त करना चाहते हैं तो हमें इस्लामी निज़ामे तरबियत से वाबस्ता होना होगा। मसाजिद को इ़बादत के साथ तरबियत के मराकिज़ बनाना, मदारिस को इ़ल्मो अ़मल का गहवारा बनाना, वालिदैन को अपनी औलाद की दीनी परवरिश में फ़अ़ाल बनाना, और मीडिया को ख़ैर व इस्लाह़ का ज़रीआ़ बनाना। येही वोह रास्ता है जो फ़र्द की इस्लाह़ से क़ौम की फ़लाह़ तक ले जाता है। जब हर मुसलमान अपने किरदार, फ़िक्र और अ़मल को क़ुरआनो सुन्नत के सांचे में ढाल लेगा तो اِنْ شَآءَ اللهُ एक ऐसा सालेह़, मुनज़्ज़म और पुर अम्न मुआशरा वुजूद में आएगा जो दुनिया में दीने इस्लाम का ह़क़ीक़ी नमूना बन कर चमकेगा और आख़िरत में अल्लाह की रिज़ा व जन्नत की कामयाबी ह़ासिल करेगा।

सोच बदले तो ज़िन्दगी बदले

एक 55 साला शख़्स डिप्रेशन का शिकार था। उस का जवान बेटा अपने वालिद को ले कर एक डॉक्टर के क्लीनिक में आया। डॉक्टर साहिब उस वक़्त किसी और मरीज़ का चेकअप कर रहे थे। पहला मरीज़ गया तो नौजवान ने आहिस्तगी से कहा : "डॉक्टर साहिब ! मेरे वालिद साहिब आज कल बहुत परेशान और फिक्रमन्द रहने लगे हैं। आप उन का कुछ इलाज करें।" डॉक्टर साहिब ने मुस्कुरा कर कहा : आप थोड़ी देर के लिए बाहर बैठ जाएं, मैं इन से अकेले में बात करना चाहता हूं। बेटा बाहर चला गया। डॉक्टर साहिब ने बुज़ुर्ग से पूछा : आप कैसे हैं ? और आप को क्या परेशानी है ? उस बुज़ुर्ग ने एक गहरी सांस ली और बोले : डॉक्टर साहिब ! मैं बहुत थक चुका हूं। ज़िन्दगी के बोझ ने मुझे तोड़ कर रख दिया है। नौकरी का दबाव, बच्चों की तालीम, मकान का किराया, घर के अख़राजात, बेटियों की शादी... सब कुछ सर पर है। मेरे बच्चे और दोस्त मुझे नफ़्सियाती मरीज़ समझने लगे हैं, लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि मैं येह सब सोच कर बहुत परेशान रहता हूं कि ज़िन्दगी के येह मसाइल कब और कैसे ह़ल होंगे। "डॉक्टर साहिब ख़ामोशी से सुनते रहे फिर मुस्कुरा कर बोले : आप बिल्कुल ठीक हैं, अल्लाह का शुक्र है आप को कोई बड़ी बीमारी नहीं है।"

अच्छा येह बताइए, आप ने मैट्रिक कहां से की थी ? वोह बुज़ुर्ग ह़ैरान हो कर बोले : मैट्रिक ? जी वोह फ़ुलां गवर्नमेन्ट स्कूल से। डॉक्टर साहिब बोले : तो फिर एक काम करें। अपने स्कूल के दोस्तों के नाम याद करें, उन से मुलाक़ात करें, उन के ह़ालात जानें और जो कुछ देखें, वोह एक डायरी में लिखें। और एक महीने बाद मुझे दोबारा चेकअप करवाइएगा।

उस बुज़ुर्ग ने क्लीनिक से बाहर निकलते हुए अपने बेटे से कहा : अ़जीब डॉक्टर है यार ! मैं अपनी बीमारी बता रहा हूं और येह दोस्तों से मुलाक़ात का कह रहा है। ख़ैर, देखते हैं। अगले दिन उन्हों ने बेटे के साथ अपने पुराने दोस्तों से मुलाक़ात की... कुछ हंसते मुस्कुराते मिले, कुछ बीमार थे, कुछ माज़ूर, कुछ दुनिया से रुख़्सत हो चुके थे और कुछ दोस्तों की ग़ुर्बत, तन्हाई और दुख देखे। येह सब देखते गए, और एक एक एह़सास को डायरी में नोट करते गए। एक महीने बाद वोह फिर डॉक्टर के पास आए। डॉक्टर साहिब ने मुस्कुरा कर

पूछा : अब कैसा महसूस कर रहे हैं ? उस बुज़ुर्ग की आंखों में नमी आ गई। डायरी आगे बढ़ाते हुए बोले : डॉक्टर साहिब, जैसा आप ने कहा था, मैं ने सब लिखा है। मेरे कुछ दोस्त दुनिया में नहीं रहे, कुछ बीमार हैं, कुछ तन्हा हैं, कुछ माज़ूर हैं और कुछ ग़ुर्बत में जी रहे हैं। और मैं ने सोचा... मैं कितना ख़ुश नसीब हूं ! मेरे बच्चे सलामत हैं, मेरा घर आबाद है, कोई झगड़ा नहीं, कोई मुक़द्दमा नहीं, मैं अपने रब का शुक्र गुज़ार हूं।

कहानी से हासिल होने वाले निकात

मौजूदा दौर में ज़ेहनी दबाव और डिप्रेशन एक आम मस्अला बन चुका है। हर शख़्स किसी न किसी फ़िक्र, परेशानी या मुक़ाबले की दौड़ में उल्झा हुवा है। बज़ाहिर ख़ुशहाल नज़र आने वाले अफ़राद भी अन्दर से टूट फूट का शिकार होते हैं। ऐसे माहौल में इन्सान को अपनी ज़िन्दगी को मुस्बत अन्दाज़ में देखने और अल्लाह तआला की अ़ता कर्दा नेमतों को पहचानने की अशद ज़रूरत है। ज़ेरे नज़र वाक़िआ भी हमें येही सबक़ देता है कि अस्ल ख़ुशी मसाइल के ख़त्म होने में नहीं बल्कि सोच के बदलने में है।

दुनिया दुखों से भरी है, मगर हम बहुत से दुखों से महफ़ूज़ हैं। जब हम दूसरों के दुख देखते हैं तब हमें अपनी ज़िन्दगी में हासिल होने वाली नेमतें महसूस होती हैं। दूसरों की प्लेट में झांकने की आदत छोड़ें, अपनी प्लेट का खाना प्यार और शुक्र से क़बूल करें। दूसरों से मुवाज़ना (Comparison) मत करें, क्यूंकि ख़ुशी मुवाज़ना करने में नहीं बल्कि क़नाअ़त और शुक्र में है।

शुक्र गुज़ारी अल्लाह तआला की अ़ता कर्दा निहायत अ़ज़ीम नेमतों में से एक ऐसी नेमत है जो इन्सान के दिल को सुकून, ज़बान को नर्मी और ज़िन्दगी को इतमीनान बख़्शती है। शुक्रगुज़ारी इन्सान को नाशुक्री, बेसब्री और मायूसी जैसे मन्फ़ी जज़्बात से बचाती है और उस के दिल में उम्मीद, क़नाअ़त और रिज़ा पैदा करती है।

शुक्र गुज़ारी की अहमियत को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रमान से समझिए, चुनान्चे हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है : अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे चार चीज़ें मिल गईं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिल गई, 1 शुक्र करने वाला दिल 2 ज़िक्र करने वाली ज़बान 3 आज़माइश पर सब्र करने वाला बदन 4 अपने आप और शौहर के माल में ख़ियानत न करने वाली बीवी। (معجم اوسط، 5/244، حدیث:7212)

सारी दुनिया मिल गई

इसी तरह अपने बदन और अहलो अ़याल का आ़फ़ियत में होना भी बहुत बड़ी नेमत है चुनान्चे हज़रते उ़बैदुल्लाह बिन मिहसन अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं कि हुज़ूरे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह इस हाल में करे कि वोह अपने और अहलो अ़याल के बारे में बेख़ौफ़ हो, जिस्मानी तौर पर आ़फ़ियत में हो, एक दिन का खाना भी उस के पास हो तो गोया उस के लिए दुनिया पूरी की पूरी जमा कर दी गई। (ابن ماجہ، 4/443، حدیث:4141)

सेहत की अहमियत

जिस्मानी सेहत उस वक़्त आदमी को नज़र आती है जब वोह बीमार होता है, जैसा कि मश्हूर मक़ूला है : सेहत व तन्दुरुस्ती सेहतमन्द लोगों के सर का ताज है, मगर उसे सिर्फ़ बीमार लोग ही देख सकते हैं।

ज़िन्दगी में ख़ुशी का दारोमदार हालात पर नहीं बल्कि हमारे रवय्ये पर होता है। अगर हम हर हाल में अल्लाह तआला की नेमतों को याद रखें तो दिल मुतमइन रहता है, और अगर हम सिर्फ़ महरूमियों पर नज़र रखें तो बेचैनी कभी ख़त्म नहीं होती। इस लिए ज़रूरी है कि हम रोज़ाना कुछ वक़्त निकाल कर अपनी ज़िन्दगी की नेमतों पर ग़ौर करें और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें।

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाली आंख का अज्रो सवाब

ख़शिय्यते इलाही यानी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की हैबत और उस की अ़ज़मत के एहसास और ख़ौफ़ से रोना, गिड़गिड़ाना और नदामत के चन्द आंसू बहाना, अल्लाह पाक की बारगाह में एक निहायत पसन्दीदा अ़मल और बुलन्द पाया सआ़दत है। हमारेप्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोया करते और आंसू बहाया करते थे, यक़ीनन अल्लाह के ख़ौफ़ से बहने वाला एक छोटा सा आंसू भी हमारी बख़्शिश का सबब बन सकता है।

आइए ! ख़ौफ़े ख़ुदाए पाक में रोने और आंसू बहाने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अहादीसे मुबारका पढ़िए और अपने गुनाहों से तौबा कर के नेक आमाल की त़रफ़ लग जाइए, चुनान्चे

मक्खी के सर के बराबर आंसू की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस मोमिन बन्दे की आंखों से अल्लाह पाक के ख़ौफ़ के सबब मक्खी के सर के बराबर भी आंसू निकल कर उस के चेहरे तक पहुंच जाए तो अल्लाह पाक उस पर दोज़ख़ की आग को ह़राम फ़रमा देता है।[1]

चेहरे से मुराद वोह ह़िस्सा है जो तुम्हारे सामने हो और दिखाई दे। ह़दीस शरीफ़ के अ़ल्फ़ाज़ : "अल्लाह पाक उस पर दोज़ख़ की आग को ह़राम फ़रमा देता है" यानी उस मोमिन बन्दे को या उस के चेहरे को या चेहरे की सत़ह को या उस जगह को जिसे आंसू लग जाएं। अल्लाह करीम की रह़मत से उन तमाम सूरतों में सब से ज़ियादा उम्मीद अफ़ज़ा पहली सूरत (यानी पूरे बन्दे का जहन्नम पर ह़राम होना) है। और आग पर ह़राम होने से मुराद आग का उसे जलाने से रुक जाना है।[2]

अल्लाह करीम के ज़िक्र पर बहने वाले आंसू

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह पाक को याद करे और अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से उस की आंखों से आंसू बह पड़ें यहां तक कि वोह आंसू ज़मीन पर जा गिरें तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उसे अ़ज़ाब न देगा।[3]

जिस शख़्स के आंसू ख़ौफ़े इलाही के सबब इतनी कसरत से बहें कि ज़मीन पर गिर जाएं तो उसे अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा, उस की वजह बयान करते हुए अ़ल्लामा मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ जमा नहीं फ़रमाता, जो दुनिया में अल्लाह पाक से डरे, अल्लाह पाक उसे आख़िरत में बेख़ौफ़ कर देगा, और वोह आख़िरत में अम्न पाने वालों में से होगा।[4]

एक रोने वाले की बरकत से तमाम की बख़्शिश

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस बन्दे की आंखें अल्लाह पाक के ख़ौफ़ के सबब आंसुओं से भर गईं, अल्लाह पाक उस के जिस्म को जहन्नम की आग पर ह़राम कर देता है, अगर वोह आंसू बह कर उस के गालों पर आ जाएं तो उस के चेहरे पर न सियाही छाएगी और न ज़िल्लतो रुस्वाई, हर नेक अ़मल का एक सवाब है

मगर आंसूं, येह आग के समुन्दरों को बुझा देते हैं और अगर किसी उम्मत का एक बन्दा भी ख़ौफ़े ख़ुदा से रो पड़े तो अल्लाह पाक उस एक शख़्स के रोने की बरकत से उस पूरी उम्मत को नजात अ़ता फ़रमा देता है।[5]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तन्हाई में ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बहने वाला एक आंसू न सिर्फ़ हमारी नजात का ज़रीआ़ बन सकता है, बल्कि उस की बरकत से दूसरों पर भी रह़मते इलाही का साया हो सकता है।

अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोना बख़्शिश का सबब है

एक ह़दीस शरीफ़ में है : अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोए, उस की बख़्शिश कर दी जाएगी।[6]

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! वाक़ेई ख़ुश नसीब है वोह शख़्स जो अपने गुनाहों पर रोता है, क्यूंकि उस का दिल ज़िन्दा है, उस का ज़मीर बेदार है। सख़्त दिल इन्सान कभी नहीं रोता, लेकिन नर्म दिल बन्दा अल्लाह करीम के सामने अपनी कमज़ोरियों का एतिराफ़ करते हुए रोता है। येह रोना अल्लाह करीम की रह़मत पाने का सबब है और बन्दे को उस के रब के क़रीब कर देता है।

ऐ अल्लाह पाक ! हमें ख़ुशूअ वाले दिल अ़ता फ़रमा, तेरे ख़ौफ़ से रोने वाली आंखें अ़ता फ़रमा, और हमें अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1)ابن ماجہ، 4/467، حدیث:4197(2)مصباح الزجاجۃ حاشیہ ابن ماجہ، 4/467، تحت الحدیث: 4197 ملخصًا(3)مستدرک، 7/369، حدیث: 7742 (4)التیسیر، 2/417(5)جمع الجوامع، 6/267، حدیث:19041(6)جمع الجوامع، 7/124، حدیث:21583۔

अह़कामे तिजारत

1 दुकान तय्यार न होने के बावुजूद बिल्डर से दुकान का किराया लेना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने प्लाज़ा में अपने लिए एक दुकान बुक की थी और मैं पैमेन्ट भी कर चुका हूं। अब मुआ़हदे के मुत़ाबिक़ दुकान पर क़ब्ज़ा देने का वक़्त आया तो अभी तक दुकान नहीं बनी, थोड़ा बहुत काम हुवा है लेकिन बिल्कुल भी क़ाबिले इस्तिमाल नहीं जिस की वजह से क़ब्ज़ा नहीं मिला, बिल्डर को क़ब्ज़ा देने का कहा और उस पर ज़ोर डाला तो वोह कह रहा है क जब तक दुकान का क़ब्ज़ा नहीं मिल जाता हर माह मार्केट रेट के ह़िसाब से मुझ से किराया लेते रहो। मेरा सुवाल येह है कि जब तक वोह मुझे दुकान बना कर क़ब्ज़ा न दे दे क्या मैं उस वक़्त तक किराए की मद में बिल्डर से पैसे ले सकता हूं?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में बिल्डर से, वक़्त पर दुकान बना कर न देने की वजह से, किराए के नाम पर पैसे लेना जाइज़ नहीं। न ही यहां किराए की कोई गुन्जाइश है क्यूंकि किराया किसी चीज़ के इस्तिमाल करने पर होता है यहां तो न मज़कूरा दुकान इस क़ाबिल है कि उस से फ़ायदा उठाया जा सके न ही येह बिल्डर का मक़्सूद है। किसी भी माली आमदनी के लिए शरई सबब पाया जाना ज़रूरी है जब कि यहां किराए के नाम पर रक़म लेना शरई सबब नहीं है।

तफ़्सीले मस्अला येह है कि मज़्कूरा सूरत में रिश्वत का पहलू पाया जा रहा है क्यूंकि बिल्डर को वक़्त पर ख़रीदार के क़ब्ज़े में दुकान देना लाज़िम था, अब बिल्डर किसी वजह से दुकान पर क़ब्ज़ा नहीं दे सका तो ऐसी सूरत में बिल्डर का ख़रीदार को किराए के नाम पर रक़म लेने की ऑफ़र करना अपनी इ़ज़्ज़त बचाने की ख़ातिर है ताकि मार्केट में ख़ुद उस बिल्डर की और उस के प्रोजेक्टस की वेल्यू बर क़रार रहे, और येही रिश्वत है लिहाज़ा पूछी गई सूरत में मज़कूरा रक़म का लेन देन करना, नाजाइज़ो ह़राम और बातिल त़रीक़े से किसी मुसलमान का माल खाना है।

येह हुक्म उस सूरत में है कि जब बिल्डर अपने त़ौर पर येह ऑफ़र करे लेकिन अगर बिल्डर ख़ुद से ऑफ़र नहीं करता बल्कि ख़रीदार की त़रफ़ से मज़कूरा रक़म लेने का मुत़ालबा है तो फिर येह ताज़ीर बिलमाल यानी माली जुर्माना है, इस त़रह़ कि बिल्डर की त़रफ़ से वक़्त पर दुकान का क़ब्ज़ा नहीं दिया गया जिस की वजह से ख़रीदार बिल्डर से किराए का मुत़ालबा कर रहा है, और ताज़ीर बिलमाल यानी माली जुर्माना लेना जाइज़ नहीं है।

हां इतना ज़रूर है कि बिल्डर पर दुकान का क़ब्ज़ा देना शरअ़न लाज़िम था बिला वजहे शरई इस त़रह़ करता है तो ऐसा करना दुरुस्त नहीं। और अगर किसी मजबूरी की वजह से करता है तो बिल्डर को मोहलत दी जाएगी।

तम्बीह : येह तो फ़िक़्ही एहतिमालात की रौशनी में जवाब था लेकिन मुशाहदा येह है कि इस त़रह़ की स्कीम फ़्रॉडिये बिल्डर लगाते हैं जो कुछ माह किराया देने के बाद फ़रार हो जाते हैं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मुर्दा हिरन से निकली हुई मुश्क बेचना और इस्तिमाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मुर्दार हिरन से निकलने वाली मुश्क की ख़रीदो फ़रोख़्त करना और उस का इस्तिमाल करना कैसा है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : मुर्दार हिरन से निकलने वाली मुश्क का इस्तिमाल और उस की ख़रीदो फ़रोख़्त करना शरअ़न जाइज़ है, उस में कोई ह़रज नहीं।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा का एक बुन्यादी उसूल येह है कि बैअ़ इसी चीज़ की जाइज़ होती है जिस से नफ़्अ़ उठाना ह़लाल हो। ख़िन्ज़ीर के इ़लावा मुर्दार जानवर की वोह चीज़ें जिन में ख़ून सरायत न करे, उन के इस्तिमाल और ख़रीदो फ़रोख़्त में कोई ह़रज नहीं होता, जैसे मुर्दार जानवर का पट्ठा, बाल, सींग और हड्डी वग़ैरा, क्यूंकि उन आज़ा में ज़िन्दगी नहीं होती, लिहाज़ा उन का इस्तिमाल और ख़रीदो फ़रोख़्त करना शरअ़न जाइज़ है।

इस उसूल के मुताबिक़ मुर्दार हिरन से निकलने वाली मुश्क अगर्चे अस्ल के एतिबार से नजिस ख़ून थी, लेकिन जब वोह अपनी माहियत बदल कर ख़ुश्बू बन गई और थैली जैसी कैफ़ियत इख़्तियार कर ली, जिस में ख़ून सरायत नहीं करता, तो वोह पाक हो गई। अब उस मुश्क का इस्तिमाल करना और ख़रीदो फ़रोख़्त करना, जाइज़ है अगर्चे मुर्दार से ह़ासिल की गई हो।

मराक़िल फ़लाह़ में है : ”(ونافجة المسك طاهرة) مطلقا۔۔۔ (كالمسك) للاتفاق على طهارته“ तर्जमा : हिरन की थैली मुत़लक़न पाक है जैसा कि मुश्क क्यूंकि उस की त़हारत पर इत्तिफ़ाक़ है।

इस के तह़त ह़ाशियतुत्तह़तावी में है : ”وقوله مطلقا يفسر بانها سواء كانت من ذكية، او ميتة، او انفصلت من حية“ तर्जमा : मुसन्निफ़ का मुत़्लक़न फ़रमाना इस बात की तफ़्सीर येह है कि चाहे वोह मुश्क ज़ब्ह़ किए गए हिरन से ली गई हो, या मुर्दा हिरन से, या ज़िन्दा हिरन से जुदा हुई हो। (حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، ص170)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 बिजली का कुन्डा लगाना या उस की मरम्मत करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं इलेक्ट्रिक के काम से वाबस्ता हूं और बाज़ औक़ात मुझे अ़वाम की त़रफ़ से ग़ैर क़ानूनी बिजली के कुन्डे लगाने या पहले से लगे हुए कुन्डों की मरम्मत करने का कहा जाता है। क्या मेरे लिए ग़ैर क़ानूनी बिजली का कुन्डा लगाना या उस की मरम्मत करना, जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : कुन्डे लगा कर बिजली इस्तिमाल करना ग़ैर क़ानूनी और शरअ़न नाजाइज़ अ़मल है और इस नाजाइज़ काम पर मुआ़विन व मददगार बनना भी जाइज़ नहीं। क़ुरआनो ह़दीस में वाज़ेह़ त़ौर पर हमें नाजाइज़ कामों पर एक दूसरे की मुआ़वनत करने से मना किया गया है। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में आप का बिजली के कुन्डे लगाना बिलाशुबा एक नाजाइज़ काम में मुआ़विन व मददगार बनना है जो कि जाइज़ नहीं और इस पर ह़ासिल होने वाली आमदनी भी ह़लाल नहीं होगी।

गुनाहों के कामों पर एक दूसरे की मुआ़वनत करने की मुमानअ़त से मुतअ़ल्लिक़ इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ﴾ तर्जमा : और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो। (پ6،المآئدۃ:2)

चोरी की बिजली से मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत में है : “चोरी से बिजली जलाना मना है कि इस में ह़ुकूमत को धोका देना और उस के क़ानून को तोड़ना है। अपने को इहानत के लिए पेश करना, अपनी इ़ज़्ज़त को ख़त़रा में डालना है। और इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करना ज़िल्लतो रुस्वाई से बचना ज़रूरी है।”

(फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, 1/192)

फ़तावा बरेली शरीफ़ में है : “चोरी से बिजली चलाना जाइज़ नहीं है और दियानतदारी के भी ख़िलाफ़ है।” (फ़तावा बरेली, स. 104)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गवर्नरों के तक़र्रुर में फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ की तरजीहात

इस्लामी तारीख़ के रौशन अबवाब में ख़ुलफ़ाए राशिदीन का दौरे हुकूमत एक मुन्फ़रिद और बेमिसाल मक़ाम रखता है। इस दौर में हुकूमत का मक़्सद महज़ सियासी इक़्तिदार नहीं बल्कि तौहीदो रिसालत का परचार, अ़दलो इन्साफ़ का क़ियाम और आला अख़्लाक़ से दुनिया को रूशनास कराना था। ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुबारक दौर में फ़ुतुहात का जो सिल्सिला शुरुअ़ हुवा था, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में भी बड़ी शान व शौकत के साथ जारी रहा।

अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सब से नुमायां ख़ुसूसिय्यत येह थी कि उन्हों ने न सिर्फ़ वसीअ़ सल्तनत क़ाइम की बल्कि इस सल्तनत को मुनज़्ज़म रखने के लिए एक मरबूत और मुअस्सिर इन्तिज़ामी निज़ाम भी वज़्अ किया। फ़ुक़हा और मुअर्रिख़ीन ने उस निज़ाम को इस्लामी तारीख़ का सब से पहला मुनज़्ज़म इन्तिज़ामी ढांचा क़रार दिया है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस निज़ाम के क़ियाम व बक़ा के लिए सल्तनत के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में गवर्नर और ज़िम्मेदार मुक़र्रर किए। लेकिन इन तक़र्रुरात में ज़ाती रिश्तेदारी या क़ुर्बत को मेयार नहीं बनाया बल्कि अहलियत, अमानत दारी और फ़िरासत को बुन्याद बनाया। येही वजह है कि उन के दौर में मुक़र्रर किए गए गवर्नर अपनी ज़िम्मेदारियों में मिसाली कारकर्दगी का मुज़ाहरा करते रहे।

मन्सब देने के लिए मत़लूब चार बुन्यादी ख़स्लतें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : इस मन्सबे इक़्तिदार के लाइक़ सिर्फ़ वोही शख़्स है जिस में येह चार ख़स्लतें पाई जाएं : 1 नर्मी हो लेकिन ऐसी नर्मी भी नहीं जो कमज़ोरी पर मुश्तमिल हो, 2 सख़्ती हो मगर ऐसी नहीं कि जिस में शिद्दत हो, 3 किफ़ायत शिआ़र हो लेकिन ऐसा नहीं कि उस में बुख़्ल हो, 4 लिहाज़ करने वाला हो लेकिन ऐसा नहीं कि ह़द से तजावुज़ कर जाए। क्यूंकि इन में से एक भी सिफ़त ख़त्म होगी तो बक़िय्या तीनों ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएंगी।[1]

आप का एक और फ़रमान है कि "अल्लाह के अम्र यानी सल्तनत के मुआ़मले को सिर्फ़ वोही शख़्स दुरुस्त त़रीक़े से चला सकता है जो न तो रियाकारी करता हो, न ही तसाहुल यानी सुस्ती व बिला वजह नर्मी से काम लेता हो, न ही ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी करने वाला हो।"[2]

इस फ़रमान में तीन ऐसी ख़ामियों का ज़िक्र है जो किसी भी मन्सब वाले को नाकाम बना देती हैं :

रियाकारी : जब अहले मन्सब अपने काम दिखावे के लिए करने लगें तो हक़ीक़ी इन्साफ़ मफ़्क़ूद हो जाता है। रियाकार ज़ाहिर में अमल करता है मगर बातिन में ख़ुद ग़र्ज़ होता है, इस लिए उस के आमाल से रिआया को हक़ीक़ी फ़ायदा नहीं पहुंचता।

तसाहुल और सुस्ती : ज़िम्मेदारी से ग़फ़लत और उमूर मम्लुकत में सुस्ती एक अज़ीम गुनाह है। जब अहले मन्सब काम की बजाए आराम को तरजीह दे तो निज़ाम दरहम बरहम हो जाता है और रिआया ज़ुल्म की चक्की में पिस्ती रहती है।

ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी : जब इक़्तिदार का मक़्सद ज़ाती ख़्वाहिशात की तक्मील बन जाए तो मन्सब ज़ुल्म में तब्दील हो जाता है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपनी पूरी ज़िन्दगी नफ़्स को क़ाबू में रख कर गुज़ारी और येही उन की कामयाबी का राज़ था।

गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइत

ताक़तो क़ुव्वत : सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब भी किसी को कोई ओहदा देते तो इस बात को ज़रूर पेशे नज़र रखते कि वोह क़ुव्वतो ताक़त के एतिबार से भी कोई सलाहिय्यत रखता है या नहीं। अगर आप को ऐसा कोई शख़्स मिल जाता तो आप उसे तरजीह दिया करते थे।

इस ज़िम्न में एक तारीख़ी वाक़िआ बहुत मश्हूर है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को माज़ूल कर के हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ज़िम्मेदार बनाया। जब हज़रते शुरहबील बिन हसना ने इस का सबब पूछा तो आपने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّكَ لَكُمَا اَحَبُّ وَلٰكِنِّیْ اُرِیْدُ رَجُلاً اَقْوٰی مِنْ رَجُلٍ

यानी बेशक मैं तुम दोनों से महब्बत करता हूं लेकिन मैं तुम से ज़ियादा ताक़तवर शख़्स चाहता हूं।"

फिर जब शुरहबील बिन हसना ने अवाम के सामने वज़ाहत की दरख़्वास्त की तो आप ने एलान फ़रमाया : "اَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ وَاللّٰهِ مَا عَزَلْتُ شُرَحْبِیْلَ عَنْ سُخْطَةٍ وَلٰكِنِّیْ اَرَدْتُّ رَجُلًا اَقْوٰی مِنْ رَجُلٍ"

तर्जमा : ऐ लोगो ! अल्लाह की क़सम ! मैं ने शुरहबील बिन हसना को किसी नाराज़ी की वजह से माज़ूल नहीं किया बल्कि मैं उन से ज़ियादा ताक़त वाला शख़्स चाहता हूं।[3]

इस वाक़िए से मालूम होता है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के नज़्दीक तक़र्रुर का मेयार ज़ाती तअल्लुक़ या महब्बत नहीं बल्कि अहलियत और क़ुव्वत है। इस के साथ आप ने माज़ूल होने वाले की इज़्ज़ते नफ़्स का भी ख़याल रखा और अवाम के सामने वज़ाहत की ताकि उस का वक़ार मजरूह न हो।

अमानत दारी : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ किसी भी ओहदे की तक़र्रुरी में अमानत दारी को तरजीह देते थे। आप के नज़्दीक इस ओहदे और ज़िम्मेदारी के लाइक़ ही वोह शख़्स था जो अमानत दार हो। हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मरवी है कि आप ने इरशाद फ़रमाया: "اَلرَّعِیَّةُ مُؤَدِّیَةٌ اِلَی الْاِمَامِ مَا اَدَّی الْاِمَامُ اِلَی اللّٰهِ فَاِذَا رَتَعَ الْاِمَامُ رَتَعُوْا" यानी रिआया उस वक़्त तक अपने इमाम यानी हाकिम से अमानत दारी करेगी जब तक वोह अल्लाह से अमानत दारी करेगा, जब वोह अल्लाह से अमानत दारी करना छोड़ देगा तो रिआया उस से अमानत दारी छोड़ देगी।"[4]

आज के दौर में भी अगर हम देखें तो जिन मुआशरों में अहले मन्सब दियानत दार होते हैं, वहां के शहरी भी क़वानीन की पाबन्दी करते हैं। और जहां ऊपर से करप्शन और बद दियानती हो, वहां मुआशरे में भी बद नज़्मी और बे ईमानी फैलती है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मज़ीद इरशाद फ़रमाया : मुझ से मेरी अमानत और ओहदे के बारे में पूछा जाएगा, मैं अपनी अमानत को किसी ऐसे शख़्स के सिपुर्द न करूंगा जो उस का अहल ही नहीं है और न ही मैं ना अहल को कोई मन्सब दूंगा, मैं येह मन्सब सिर्फ़ उसी को दूंगा जो अमानत की अदाएगी और मुसलमानों की इज़्ज़तो तौक़ीर में रग़बत रखता है।[5]

तजरिबा और बसीरत : सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ओहदे के लिए दीगर तमाम सिफ़ात के साथ साथ तजरिबाकार और साहिबे बसीरत होने को भी तरजीह देते थे। बसीरत वोह सलाहिय्यत है जिस से इन्सान हालात की गहराई को समझता है, मुस्तक़बिल के इम्कानात का अन्दाज़ा लगाता है और ग़लतियों से सबक़ सीखता है। येह सिफ़त न हो तो बन्दा सिर्फ़ मसाइल से नबर्द आज़्मा होता रहेगा लेकिन उन का दाइमी हल तलाश न कर सकेगा।

शफ़क़त व मेहरबानी : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ुद भी निहायत शफ़ीक़ थे और

चाहते थे कि जिसे भी मुक़र्रर करें वोह इन्तिहाई शफ़ीक़ व मेहरबान भी हो। इस ज़िम्न में एक इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ मिलता है :

एक बार आप ने क़बीलए बनू असद के एक शख़्स को ओहदा दिया। वोह ओहदा लेने के लिए बारगाहे फ़ारूक़ी में हाज़िर हुवा तो देखा कि आप का एक छोटा सा बच्चा आप के पास मौजूद है और आप उसे फ़र्ते महब्बत से चूम रहे हैं। उस ने तअज्जुब से कहा : हुज़ूर ! क्या आप इस बच्चे को चूम रहे हैं ? मैं ने कभी अपनी औलाद को महब्बत से नहीं चूमा। येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सख़्त नापसन्दीदगी का इज़्हार करते हुए इरशाद फ़रमाया : "فَاَنْتَ بِالنَّاسِ اَقَلُّ رَحْمَةً هَاتِ عَهْدَنَا لَا تَعْمَلْ لِی عَمَلاً اَبَدًا यानी तुम तो लोगों पर बहुत कम रहम करने वाले हो, तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि तुम्हें कोई ज़िम्मेदारी दी जाए, लाओ हमारा वोह मन्सब जो हम ने तुम्हें दिया है, आज के बाद तुम कभी हमारा कोई हुकूमती काम नहीं करोगे।"[6]

रिआया में घुल मिल कर रहना : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़ल्बी तौर पर ऐसे शख़्स को मन्सब देने की ख़्वाहिश रखते थे जो ओहदा मिलने के बाद अवाम और रिआया में ऐसे रहे जैसे वोह उन्ही में से एक फ़र्द हो, और जब वोह ओहदे पर न हो तो ऐसा लगे जैसे वोही इस ओहदे के क़ाबिल था।[7]

फ़िस्क़ो फ़ुजूर से पाक होना : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स को ज़िम्मेदारी देना क़त्अन पसन्द न फ़रमाते थे। आप ने इस बारे में बुन्यादी उसूल बयान फ़रमाया : "مَنِ اسْتَعْمَلَ فَاجِراً وَهُوَ يَعْلَمُ اَنَّهُ فَاجِرٌ فَهُوَ فَاجِرٌ مِثْلُهُ यानी जिस ने किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स को निगरान बनाया और वोह जानता था कि उस ने जिस को निगरान बनाया है वोह फ़ासिक़ो फ़ाजिर है तो निगरान बनाने वाला भी उसी की तरह है।"[8]

येह उसूल एहतिसाब और ज़िम्मेदारी के तसव्वुर को एक नई जिहत देता है। जो शख़्स किसी ना अहल और फ़ासिक़ को जानते बूझते मन्सब दे, वोह ख़ुद भी इस फ़िस्क़ में शरीक है। येह उसूल उन लोगों के लिए लम्हए फ़िक्रिया है जो ज़ाती मफ़ाद के लिए ना अहल लोगों को अहम ओहदों पर बिठाते हैं।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़रामीन और तर्ज़े हुकूमत की रौशनी में एक कामयाब गवर्नर के औसाफ़ का ख़ुलासा येह है :

मुस्बत सिफ़ात जो अहले मन्सब में होनी चाहिएं

❖ एतिदाल और तवाज़ुन ❖ नर्मी जो कमज़ोरी न हो ❖ सख़्ती जो ज़ुल्म न हो ❖ किफ़ायत शिआरी जो बुख़्ल न हो ❖ लिहाज़ जो हद से तजावुज़ न करे ❖ अमानत दारी ❖ इल्मे दीन व दुनिया ❖ तजरिबा और बसीरत ❖ शफ़क़तो महब्बत ❖ रिआया में घुल मिल कर रहना ❖ इख़्लास और ज़ब्ते नफ़्स।

मन्फ़ी सिफ़ात जिन से अहले मन्सब को बचना ज़रूरी है

❖ रियाकारी और दिखावा ❖ सुस्ती और ग़फ़्लत ❖ ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी ❖ फ़िस्क़ो फ़ुजूर ❖ ना अहल लोगों को अहम ओहदे देना ❖ रिआया से बेनियाज़ी और बेरहमी।

आज की दुनिया में फ़ारूक़ी उसूल

सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वफ़ात को चौदह सौ साल से ज़ियादा अर्सा गुज़र चुका है लेकिन उन के वज़्अ कर्दा उसूल आज भी इतने ही ताज़ा और क़ाबिले अमल हैं। जदीद दुनिया में गवर्नन्स के जितने भी नज़रियात पेश किए गए हैं, उन में से अक्सर की अस्ल इन उसूलों में मिलती है जो सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने दौर में मुतआरिफ़ कराए थे।

आज जब दुनिया में हुक्मरानी के बोहरान हैं, जब अवाम और हुक्मरानों के दरमियान एतिमाद की फ़सील गिर चुकी है, ऐसे में फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के येह उसूल एक रौशन मीनार की तरह हैं जिन की तरफ़ रुजूअ करना ही इस्लाह की वाहिद राह है। अल्लाह तआला हमें इन उसूलों पर अमल करने और उन्हें अपने मुआशरे में राइज करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)مصنف عبد الرزاق،8/232، حدیث:15367(2)مصنف عبد الرزاق،8/232، حدیث: 15368(3)الکامل فی التاریخ،2/402- تاریخ ابن عساکر، 22/474 (4)مصنف ابن ابی شیبہ،19/140، حدیث:35590(5)کتاب الثقات لابن حبان، 1/184(6)سنن کبریٰ للبیہقی،9/72، حدیث:17906(7)کنزالعمال، 3/304، جزء:5، حدیث: 14307(8)اخبار القضاۃ،1/69- مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، ص78-

(क़िस्त : 01)

इमामे हुसैन की तालीमात और उन की अ़स्री मानवियत

नवासए सय्यिदे काएनात, लख़्ते जिगरे शेरे ख़ुदा ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं :

ऐ लोगो ! अच्छे अख़्लाक़ में रग़बत करो, नेक आमाल में जल्दी करो, जिस ने किसी पर एहसान किया हो और वोह उस का शुक्र अदा न करे तो एहसान करने वाले को अल्लाह पाक इ़वज़ अ़ता फ़रमाता है। यक़ीन करो नेक काम में तारीफ़ होती है और सवाब मिलता है, अगर तुम नेकी को किसी मर्द की सूरत में देख सकते तो उसे बहुत ह़सीनो जमील देखते जो देखने वाले को भला लगता और अगर तुम मलामत और बदी को देख सकते तो बदतरीन मन्ज़र देखते जिस से दिल नफ़रत करते और नज़रें नीची हो जाती हैं। ऐ लोगो ! जो सख़ावत करता है वोह सरदार होता है और जो बुख़्ल करता है वोह ज़लीलो रुस्वा होता है। ज़ियादा सख़ी वोह शख़्स है जो उस शख़्स पर सख़ावत करे जिसे उस की उम्मीद न हो। ज़ियादा पाक दामन और बहादुर वोह शख़्स है जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बावुजूद मुआ़फ़ कर दे, ज़ियादा सिलए रह़मी करने वाला शख़्स वोह है जो क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करने वाले रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़े। जो शख़्स अपने भाई पर एह़सान कर के अल्लाह की रिज़ा चाहे अल्लाह पाक मुश्किल वक़्त में उस का बदला देता है और उस से सख़्त मुसीबत टाल देता है। जिस शख़्स ने अपने मुसलमान भाई से दुनियवी मुसीबत दूर की अल्लाह पाक उस से उख़रवी मुसीबत दूर करता है और जो किसी पर एह़सान करे अल्लाह करीम उस पर एह़सान फ़रमाता है और एह़सान करने वाले अल्लाह के प्यारे हैं।[1]

मोह़तरम क़ारेईन ! जिगर गोशए बतूल सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं जिन की पूरी ज़िन्दगी क़ुरआनो सुन्नत का अ़मली नमूना थी। आप ने करबला के मैदान में अ़मली त़ौर पर भी ह़क़्क़ो बात़िल का फ़र्क़ वाज़ेह़ किया और अपने ख़ुत्बात व इरशादात में क़ौली त़ौर पर भी उम्मते मुस्लिमा को वोह राहनुमाई दी जो रहती दुनिया तक के लिए मश्अले राह है। आप के एक ख़ुत्बए मुबारका का एक ह़िस्सा हमारे सामने है जिस में आप ने मुआ़शरे के हर फ़र्द को अख़्लाक़ी किरदार की आला अक़्दार अपनाने की तल्क़ीन फ़रमाई। येह कलिमाते नूर आज भी इतने ही रौशन और बा माना हैं जितने आज से चौदह सदियां पहले थे।

आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां अख़्लाक़ी अक़्दार पामाल हो रही हैं, जहां एह़सान की जगह ख़ुद ग़रज़ी ने ले ली है, जहां सख़ावत व फ़य्याज़ी की बजाए बुख़्लो तंग दिली ने डेरे डाल लिए हैं, जहां मुआ़फ़ी को कमज़ोरी समझा जाता है और सिलए रह़मी का जज़्बा ठन्डा पड़ता जा रहा है। ऐसे में इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का येह ख़ुत्बा हमारे लिए अ़ज़ीम रहनुमा का काम करता है। आइए ! इस ख़ुत्बे के हर पहलू को अलग अलग समझें और अपने किरदार को परखें।

1 हुस्ने अख़्लाक़ और नेक आमाल में जल्दी

हमारी सब से बड़ी ज़रूरत

"ऐ लोगो ! अच्छे अख़्लाक़ में रग़बत करो, नेक आमाल में जल्दी करो।"

आज हमारा सब से बड़ा अल्मिया येह है कि हम ने अख़्लाक़ को दीन से अलग कर लिया है। हम मसाजिद में नमाज़ें पढ़ते हैं लेकिन घर आ कर बद अख़्लाक़ी करते हैं। तिलावते क़ुरआन करते हैं लेकिन हमसाए को तक्लीफ़ देने से नहीं चूकते। रोज़े रखते हैं लेकिन ग़ीबत व चुग़ली का बाज़ार गर्म रहता है। इबादात की कसरत के बावुजूद हमारे किरदार में वोह नूर नहीं जो एक मुसलमान की पहचान होना चाहिए।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَاناً اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا यानी मोमिनों में सब से कामिल ईमान वाला वोह है जो अख़्लाक़ में सब से अच्छा हो।[2]

2 एहसान और उस का सिला

ख़ुदा की ज़मानत

"जिस ने किसी पर एहसान किया और वोह उस का शुक्र अदा न करे तो एहसान करने वाले को अल्लाह पाक इवज़ अता फ़रमाता है।"

हमारे मुआशरे का एक आम मरज़ येह है कि हम एहसान इस लिए करते हैं कि लोग तारीफ़ करें, शुक्रिया अदा करें, हमें याद रखें। जब शुक्रिया नहीं मिलता तो भलाई करना बन्द कर देते हैं, बल्कि कभी कभी एहसान जता कर दूसरे की तौहीन भी करते हैं। येह रवय्या न सिर्फ़ ग़लत है बल्कि हमारी नेकी को भी ज़ाएअ कर देता है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर।[3]

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़िन्दगी एहसान का एक मुसल्सल सिलसिला है। आप ने हर हाल में लोगों पर एहसान फ़रमाया और बदले में किसी शुक्र गुज़ारी की तवक़्क़ोअ न रखी। करबला जाते वक़्त जिन लोगों ने आप को ख़ुतूत लिख कर मदऊ किया था उन्हों ने बाद में साथ छोड़ दिया, लेकिन आप ने उन पर लानत मलामत न की बल्कि अल्लाह की रिज़ा पर तवक्कुल किया। येही वोह जज़्बा था जो आप ने इस ख़ुत्बे में बयान फ़रमाया कि एहसान अल्लाह के लिए करो, अगर मख़्लूक़ ने शुक्र अदा न किया तो ख़ालिक़ ज़रूर इवज़ देगा।

3 नेकी का हुस्न और बदी की कराहत

रूहानी बसीरत

"अगर तुम नेकी को किसी मर्द की सूरत में देख सकते तो उसे बहुत हसीनो जमील देखते और अगर तुम मलामत और बदी को देख सकते तो बद तरीन मन्ज़र देखते जिस से दिल नफ़रत करते और नज़रें नीची हो जातीं।"

येह भी आज का एक अल्मिय्या है कि हम ने नेकी और बदी की पहचान खो दी है। झूट बोलने को "**होशियारी**" कहते हैं, धोका देने को "तिजारती महारत" समझते हैं, ग़ीबत करने को "सच बोलना" क़रार देते हैं और हराम कमाने को "ज़माने की ज़रूरत" जानते हैं। हमारे अन्दर वोह रूहानी बसीरत ख़त्म होती जा रही है जो बदी को बदी के रूप में पहचाने।

क़ुरआने मजीद में इरशादे बारी तआला है : ﴿زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लोगों के लिए आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत।[4]

शैतान बदी को सजा कर पेश करता है, लेकिन अहले बसीरत इस धोके में नहीं आते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने करबला में यज़ीद की बैअत से इन्कार कर के अमलन साबित कर दिया कि उन की बसीरत ने बदी को बदी के रूप में देख लिया था, अगर्चे वोह इक़्तिदार और शाही ठाठ बाठ में लिपटी हुई थी।

(बक़िय्या अगले माह के शुमारे में। اِنْ شَآءَ اللہ)

(1)نورالابصار فی مناقب آل بیت النبی المختار، ص152، 153(2)ترمذی، 2/386، حدیث:1165(3)پ3، البقرۃ:264(4)پ3، ال عمران:14۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार मुफ़्ती शैख़ जमालुद्दीन बंजरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

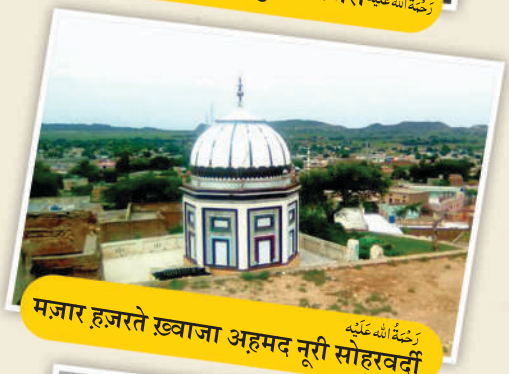

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा अह़मद नूरी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मज़ार सय्यिद अ़लवी बिन मुह़म्मद मौला अद्दवीला मुन्फ़रमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मुह़र्रमुल ह़राम इस्लामी साल का पहला महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 116 का मुख़्तसर ज़िक्र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" मुह़र्रमुल ह़राम 1439 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

1 ह़ज़रते अबू सख़र बुजैर बिन बजरा त़ाई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुजाहिदो शाइ़र थे। 9 हि. को येह ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के उस लश्कर में शामिल थे जो दूमतुल जन्दल के ह़ुक्मरान उकैदर की जानिब गया था, उस लश्कर को कामयाबी मिली, उकैदर को क़ैदी बना कर मदीनए मुनव्वरा लाया गया, उन्हों ने उस वक़्त अश्आ़र कहे जिसे सुन कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मुंह की सलामती की दुआ़ दी, उन्हों ने 90 साल की उ़म्र में जंगे क़ादिसिय्या में शहादत पाई, उस वक़्त भी उन के सारे दांत सलामत थे।[1]

2 ह़ज़रते अबू उ़मर ह़ारिस बिन मुज़रस बिन अ़ब्दे ज़राह़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बैअ़ते ह़ुदैबिया (अस्ह़ाबे शजरा) में शामिल थे, उन्हों ने भी जंगे क़ादिसिय्या में शहादत पाई, येह साह़िबे औलाद थे।[2]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

3 इमामुल ह़दीस शैख़ अबू आ़मिर क़ुबैसा बिन उ़क़्बा कूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जलीलुल क़द्र अइम्मए दीन मसलन इमाम सुफ़्यान सौरी, इमाम शोअ़बा बिन ह़िजाज के शागिर्द और सिक़ह रावी थे, आप से रिवायत करने वालों में इमाम अबू बक्र बिन शैबा और इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी जैसे मुह़द्दिसीन हैं। बुख़ारी शरीफ़ में आप से रिवायत कर्दा 44 अह़ादीस हैं, आप का विसाल माहे मोह़र्रम 215 हि. में हुवा।[3]

4 शैख़ अबुल ह़सन मुहम्मद बिन अबुल बक़ा मुबारक शाफ़ेई़ बग़दादी अल मारूफ़ अ़ल्लामा इब्नुल ख़ल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इमाम व मुफ़्ती, शारेह़ किताबुत्तम्बीह और शैख़ुशशाफ़ेइ़य्या फ़िल बग़दाद थे, उन की पैदाइश 475 हि. में हुई और विसाल माहे मुह़र्रम 552 हि. में हुवा।[4]

5 शिहाबुल मिल्लते वद्दीन शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अबू बक्र कत्तानी बूसैरी शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 762 हि. बूसैर, सूबा ग़र्बिया, मिस्र में हुई और 18 या 27 मुह़र्रम 840 हि. को क़ाहिरा, मिस्र में विसाल फ़रमाया। आप ह़ाफ़िज़ व क़ारिए क़ुरआन,

तल्मीज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी, माहिरे इ़ल्मे ह़दीस, बेहतरीन कातिब, मह़ल्ला हु़सैनिया क़ाहिरा के इमाम, फ़ाज़िल व सालेह़, तिलावतो इ़बादत में बकसरत मश्ग़ूल रहने वाले, ख़ल्वत पसन्द और हु़स्ने अख़्लाक़ के मालिक थे। मश्हूर तसानीफ़ में **مصباح الزجاجہ فی زوائد ابن ماجہ** और **اتحاف الخیرۃ المھرۃ بزوائد المسانید العشرۃ** हैं।[5]

6 क़ुत़्बे वीलोर ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़युद्दीन क़ादिरी वीलोरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश ख़ानदान सादाते गीलानिया में 1207 हि. को हुई और मदीनए मुनव्वरमा में 3 मुह़र्रम 1289 हि. को विसाल फ़रमाया। आप आ़लिमे दीन, आ़रिफ़ बिल्लाह, शैख़े त़रीक़त और साहि़बे तस्नीफ़ हैं। वीलोर (Vellore) सिटी रियासत तमिलनाडू (Tamil Nadu) हिन्द के मश्हूर आ़लिमे दीन मौलाना अ़ब्दुल वह्हाब वीलोरी क़ादिरी (बानिए जामिआ़ बाक़ियात अस्सालिह़ात वीलोर) आप के ही मुरीद हैं।[6]

7 मुफ़्ती शैख़ जमालुद्दीन बंजरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1238 हि. को दिलम पगार, ज़िल्अ़ बजर, सूबा जुनूबी कलीमतान इन्डोनेशिया के इ़ल्मी घराने में हुई, आप नबीरए शैख़ अरशद बंजरी, इस्लामी उ़लूम के माहिर, तल्मीज़ उ़लमाए इन्डोनेशिया व मक्कए मुकर्रमा, सुप्रीम जज और मुफ़्ती दातू सर्गी थे। आप का विसाल 8 मुह़र्रम 1348 हि. को हुवा। मज़ार मह़ल्ला "सर्गी मुफ़्ती" शुमाली बंजर मासिन, इन्डोनेशिया में है।[7]

औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام

8 नूरी शाह बाबा ह़ज़रते ग़ाज़ी सय्यिद नूर अ़ली शाह शहीद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ वलिए कामिल और साहि़बे तसर्रुफ़ बुज़ुर्ग हैं, आप मुजाहिदे इस्लाम मुह़म्मद बिन क़ासिम के लश्कर के साथ शाम से यहां **सिन्ध** आए और 5 मुह़र्रम 93 हि. को शहादत पाई। मज़ार **तीन हटी, जहांगीर रोड कराची** में मर्जए ख़लाइक़ है।[8]

9 मख़्दूमुल मलिक ह़ज़रते ख़्वाजा अह़मद नूरी सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 870 हि. को ख़ानदाने ग़ौस बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी में हुई और 947 हि. में विसाल फ़रमाया। आप मादर ज़ाद वली, कसीरुल फ़ैज़ और वली शहीर हैं, आप की औलाद में कसीर औलियाए किराम हुए, जिन में पीर दाखारा ज़िला जहलम भी हैं। उन का ख़ूबसूरत रौज़ा पील शरीफ़ ज़िला ख़ोशाब, पंजाब में है जहां हर साल यकुम मुह़र्रम को उ़र्स होता है।[9]

10 क़ुत़्बुल अक़्त़ाब सय्यिद अ़लवी बिन मुह़म्मद मौला अद्दवीला मुन्फ़रमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1166 हि. तरीम, यमन में हुई और 7 मुह़र्रम 1260 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार अ़लाक़ा मन्फ़रम, तरोंगाड़ी ज़िला माला पूरम, रियासत केरला, हिन्द में है। आप आ़लिमे दीन, मुबल्लिग़े इस्लाम, सिल्सिलए बा अ़ल्विया के शैख़े त़रीक़त, वलिए कामिल, मुजाहिदे जंगे आज़ादी और मलीबार के मुम्ताज़ उ़लमा व मशाइख़ से हैं। सल्त़नते उ़स्मानिया के अ़लाक़े ज़फ़ार (मौजूदा ओमान) के गवर्नर शैख़ फ़ज़्ल बाशा आप के साहि़बज़ादे हैं।[10]

11 पीर सय्यिद विलायत शाह गीलानी गोलड़वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश नौ शहरा, वादी सून स्केसर, ज़िला ख़ोशाब, पंजाब में हुई और 14 मुह़र्रम 1357 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार मह़ल्ला महराल नौ शहरा में है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, साहि़बे इ़ल्म, मुरीद क़िब्ला आ़लम पीर सय्यिद महर अ़ली शाह, साहि़बे करामत और मक़्बूले ख़ासो आ़म थे।[11]

12 ख़ादिमुल मिल्लत ह़ज़रते पीर सय्यिद ख़ादिम हु़सैन शाह अ़ली पूरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश अमीरे मिल्लत सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुह़द्दिस अ़ली पूरी के घर में 1307 हि. में हुई और 21 मुह़र्रम 1371 हि. को विसाल फ़रमाया। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, तल्मीज़ मुह़द्दिस सूरती, फ़ाज़िले जामेउ़ल उ़लूम कानपूर और बानिए सालाना जल्सा मीलादुन्नबी कानपूर हैं। तदफ़ीन मज़ार अमीरे मिल्लत, अ़लीपूर सय्यिदां, ज़िला नारोवाल, पंजाब में की गई।[12]

---

(1)الاصابہ، 1/ 401، 402(2)الاصابہ، 1/ 691(3)تاریخِ اوسط للبخاری، 2/ 333، رقم: 2791- تہذیب التہذیب، 6/ 478تا480 (4)سیر اعلام النبلاء، 15/ 94، 95(5)الضوء اللامع، 1/ 251، 252- اتحاف الخیرہ، 1/ 9(6)تذکرۃ الانساب، ص243، 244(7)ویکیپیڈیا مضمون:Jamaluddin Al-Banjari(8)تذکرہ اولیائے سندھ، ص366(9)خوشاب سرزمین اولیاء، ص148 تا 151(10)منحۃ القوی بمدحۃ السید علوی، ص8، 16، ویکیپیڈیا، عربی مضمون: علوي المنفرمي(11)تجلیات مہرانور، ص987تا991(12)تذکرہ خلفائے امیر ملت، ص172تا176-

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के बनाए गए मद्रसा सलाहिया का मौजूदा एक मन्ज़र

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

चन्द क़दीम मदारिस व जामिआ़त

गुज़श्ता से पैवस्ता

ज़ैल में चन्द मश्हूर दर्स गाहों का मुख़्तसर ह़ाल भी पेश किया जाता है।

मद्रसा निज़ामिया आले सल्जूक़ के वज़ीरे आज़म निज़ामुल मलिक तूसी ने अपनी कुल जागीरों में से दसवां ह़िस्सा मद्रसों के लिए वक़्फ़ कर दिया था, शहरे बग़दाद में येह मद्रसा इसी का एक अ़ज़ीमुश्शान कारनामा है, और इस मद्रसे से पहले बग़दाद शहर में कोई ख़ास इ़मारत मद्रसे के नाम से नहीं मिलती, इस की तामीर 457 हिजरी में शुरूअ़ हुई और 459 हि. में इस का इफ़्तिताह़ हुवा, मद्रसए निज़ामिया का फ़ैज़ पांचवीं सदी हिजरी से ले कर नवीं सदी हिजरी तक जारी रहा, इमाम ग़ज़ाली, अबू अ़ब्दुल्लाह त़बरी, अल ख़त़ीब अत्तबरेज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم वग़ैरा वक़्तन फ़वक़्तन इस के सदर मुदर्रिस रह चुके हैं, इस के इह़ात़े में एक कुतुब ख़ाना भी था, इस में पढ़ने वालों की तादाद उस ज़माने में छे हज़ार थी, यहां तालीम और जुम्ला सहूलियात मुफ़्त फ़राहम करने के साथ ग़रीब त़लबा को औक़ाफ़ से ख़ुसूसी वज़ीफ़ा भी मिलता था। त़लबा के लिए वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने का इस से पहले रिवाज न था। निज़ामुल मलिक त़ूसी ने आ़म मद्रसों के इ़लावा नेशापूर, हिरात, अस्फ़हान और मौसिल में जो बड़े बड़े मदारिस क़ाइम किए थे वोह भी मद्रसा निज़ामिया कहलाते थे।

मद्रसा क़ादिरिय्या येह मद्रसा हुज़ूर ग़ौसे आज़म की त़रफ़ मन्सूब है। येह मद्रसा आप के शैख़ क़ाज़ी अबू सई़द मुबारक बिन अ़ली बिन हुसैन अल मुख़र्रिमी (साले वफ़ात : 541 हि.) ने बग़दाद के अ़लाक़े "बाब अज़ज" में क़ाइम किया जो आज कल "बाबुशशैख़" के नाम से मश्हूर है और इस में फ़िक़्हे ह़म्बली का दर्स देना शुरूअ़ किया, ग़ौसे आज़म अपने तालीमी दौर के आख़िरी सालों में मुस्तक़िल त़ौर पर इसी मद्रसे में पढ़ने लगे और फिर तालीम मुकम्मल करने के बाद इसी मद्रसे में अपने शैख़ के साथ बत़ौरे मुआ़विन उस्ताद पढ़ाने लगे और जब आप के शैख़ अबू सई़द अल मुख़र्रिमी का विसाल हुवा, तो शैख़ के शागिर्दों में उन की जानशीनी का अहल तस्लीम करते हुए मस्नदे तदरीस व इफ़्ता और वाज़ो इरशाद आप के सिपुर्द कर दी गई। फिर जब आप का ह़ल्क़ए दर्स वसीअ़ हुवा, और मद्रसे की इ़मारत तंग पड़ने लगी तो आप बग़दाद शहर की फ़सील के बाहर ई़दगाह में दर्स देने लगे, यहां तक कि चन्द मोतक़िदीन ने मद्रसा अल मुख़र्रिमी को उन के वुरसा से ख़रीदा और मज़ीद इस में तौसीअ़ कर के नए सिरे से एक वसीअ़ इ़मारत तामीर की जिस में त़लबा और मुरीदीन के लिए इ़ल्म ह़ासिल करने के साथ साथ इक़ामत का भी एहतिमाम किया, और फिर येह मद्रसा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के नाम से मश्हूर हुवा, येह आज तक मौजूद

है और इस वक़्त मद्रसा क़ादिरिय्या के नाम से मश्हूर है। इस में हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के विसाल के बाद आप के शहज़ादे शैख़ अ़ब्दुल जब्बार तदरीस फ़रमाने लगे और उन के बाद ग़ौसे आज़म की औलाद में से मुख़्तलिफ़ अफ़राद इस में तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम देते रहे। 656 सिने हिजरी में तातारियों ने बग़दाद में क़त्लो ग़ारतगिरी का बाज़ार गर्म किया और दीगर लोगों के साथ साथ ग़ौसे आज़म के ख़ानदान के कसीर अफ़राद को भी शहीद किया और मस्जिदो मद्रसे को भी मुन्हदिम कर दिया, इन फ़ित्नों के बाद मुख़्तलिफ़ ज़मानों में इस मद्रसे की तामीर व तरक़्क़ी का सिल्सिला जारी रहा यहां तक कि सिन 1703 ई़ में उ़स्मानी सुल्तान के हुक्म से दो नए मद्रसे बना कर उस क़दीम मद्रसे में शामिल कर दिए गए।

(الشیخ عبد القادر الجیلانی الامام الزاھد القدوۃ، ص125، 127، 290، 292)

मद्रसए नासिरिया और मद्रसा सलाह़िया छटी सदी हिजरी में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बहुत से मदारिस क़ाइम किए और बेइन्तिहा आमदनी उन पर वक़्फ़ की, क़ाहिरा के अन्दर उन्ही के ज़माने से मदारिस की तासीस हुई और दियारे मिस्र में पहली बार मद्रसा नासिरिया 566 हि. में बना, ख़ुद सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने नाम से "मद्रसा सलाह़िया" क़ाइम किया जिस में उन्हों ने पहली बार बा ज़ाबित़ा मुदर्रिस के लिए तनख़्वाह के इ़लावा और दीगर सहूलियात फ़राहम कीं, उस मद्रसे में सुल्तान ने शैख़ नज्मुद्दीन को मुक़र्रर किया और उन की तनख़्वाह चालीस दीनार मुक़र्रर की और औक़ाफ़ की निगरानी भी उन्ही के सिपुर्द कर के दस दीनार उस का मुआ़वज़ा मुक़र्रर किया, तक़्युद्दीन दक़ीक़ुल ई़द, सिराज बिलक़ीनी और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर जैसे अइम्मा ने वक़्तन फ़वक़्तन इस मद्रसे में तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम दिए।

दारुल ह़दीस अल नूरिया इस्लामी दुनिया का पहला दारुल ह़दीस दिमश्क़ में 549 हि. में दारुल ह़दीस अल नूरिया के नाम से क़ाइम किया गया और इस का सहरा अ़ज़ीम सुल्तान नूरुद्दीन मह़मूद ज़ंगी के सर है, इस दारुल ह़दीस को उन्हों ने अपने शैख़ मुह़द्दिस व मुअर्रिख़ ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर के लिए बनवाया था, दिमश्क़ में 18 दारुल ह़दीस थे मगर दारुल ह़दीस अल नूरिया उन सब में मुम्ताज़ था येह मद्रसा आज भी जामेअ़ मस्जिद की शक्ल में क़ाइम है और मस्जिद के सेह़न में नूरुद्दीन ज़ंगी का मज़ार भी है।

दारुल ह़दीस अल अशरफ़िया अल मलिकुल अशरफ़ मुज़फ़्फ़रुद्दीन जो सुल्तान सलाहुद्दीन के भतीजे हैं, उन्हों ने क़िला दिमश्क़ के जवार में एक बड़ी जगह ख़रीद कर दारुल ह़दीस अल अशरफ़िया की इ़मारत तामीर की और उस के बराबर में शैख़ के लिए रिहाइश गाह तय्यार की, 15 शाबान 630 हि. की मुबारक रात में अल मलिकुल अशरफ़ ने इस दारुल ह़दीस का इफ़्तिताह़ किया, और मश्हूर मुह़द्दिस इमाम ह़ाफ़िज़ अबू अ़म्र इब्ने सलाहुश्शहर ज़ोरी को इस दारुल ह़दीस का शैख़ मुक़र्रर किया, इस दारुल ह़दीस में इ़ल्मे ह़दीस की बहुत सी अहम कुतुब तस्नीफ़ की गईं, दिमश्क़ में इ़ल्मे ह़दीस को उ़रूज देने में उन का बड़ा किरदार है और उन का फ़ैज़ आज तक सारे आ़लम में फैल रहा है, यहां तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम देने वालों में दुनिया के बड़े बड़े मुह़द्दिसीन जैसे इमाम शरफ़ुद्दीन नववी, इमाम अबुल ह़िजाज मज़ी, इमाम तक़्युद्दीन सुबुकी और उन के बेटे ताजुद्दीन सुबुकी, इमाम इब्ने कसीर और ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी भी शामिल हैं, इस दारुल ह़दीस में इमाम, मुअज़्ज़िन, क़ारियुल क़ुरआन, क़ारियुल ह़दीस और ह़दीस सुनने वाले अफ़राद के लिए वज़ाइफ़ मुक़र्रर थे और बहुत सी जागीरें इ़मारतें दुकानें वग़ैरा इस दारुल ह़दीस के लिए अल मलिकुल अशरफ़ की त़रफ़ से वक़्फ़ थीं।

इस दारुल ह़दीस की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी थी कि इस में दीवारे क़िब्ला पर मेह़राब के ऊपर एक ख़ूबसूरत लकड़ी के सन्दूक़ में नबिय्ये पाक़ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अस्ली नालैने मुबारका आवेज़ां थीं जो दिमश्क़ के एक ताजिर मूसा शरफ़ निज़ाम बिन अबू ह़दीद से अल मलिकुल अशरफ़ ने ह़ासिल की थीं।

मदारिसे हिन्द अ़ल्लामा मक़रेज़ी ने अपनी मश्हूर किताब **"किताबुल ख़ुतत़"** में लिखा है : "चौदहवीं सदी ईसवी में मुहम्मद तुग़लक़ के दौर में सिर्फ़ देहली शहर में एक हज़ार मद्रसे थे।"

कैप्टन, हेलीग्ज़न हेमिल्टन मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब आ़लमगीर के दौर में सिने 1699 सि. ई. में इस ख़ित्ते में आया था, उस ने अपने सफ़र नामे में लिखा : "सिर्फ़ ठट्ठा शहर में मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून के चार सौ मदारिस थे।" केअर हार्डी ने मैक्स पोलर के ह़वाले से तह़रीर किया है : "अंग्रेज़ों की अ़लमदारी से क़ब्ल बंगाल में अस्सी हज़ार मद्रसे मौजूद थे, तक़रीबन हर चार सौ अफ़राद के लिए एक मद्रसा था।" देहली में बहुत से अ़ज़ीमुश्शान मदारिस मौजूद थे।

मद्रसा फ़ीरोज़ शाही येह देहली का सब से मश्हूर और अपने अ़हद का ज़बरदस्त मद्रसा था, जिसे फ़ीरोज़ शाह ने फ़ीरोज़ाबाद देहली में 753 हि. में क़ाइम किया था, मद्रसा अपनी शानो शौकत, ख़ूबिए इ़मारत व मौक़अ़ और हुस्ने इन्तिज़ाम व तालीम के लिह़ाज़ से तमाम मदारिसे हिन्द में सब से बेहतर और उ़म्दा था, मसारिफ़ के लिए शाही वज़ाइफ़ मुक़र्रर थे, मद्रसे से मुत्तसिल मस्जिद थी।

देहली का सब से आख़िरुज़्ज़िक्र और मश्हूर मद्रसा शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहल्वी के वालिदे बुज़ुर्गवार शाह अ़ब्दुर्रह़ीम देहल्वी का है। इसी मद्रसे की आग़ोश में शाह वलियुल्लाह, क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती, मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ देहल्वी वग़ैरा जय्यिद अहले इ़ल्म पढ़ कर जवां हुए हैं। (दीनी मदारिस और अ़हदे ह़ाज़िर के तक़ाज़े, स. 41 ता 49, उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिया, 20/154 ता 179)

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! आज जो पूरे आ़लम में इ़ल्मे दीन का नूर फैला हुवा है वोह उन ही क़दीम मदारिस का फ़ैज़ है, और इख़्लास के साथ उस वक़्त में उन मदारिस और जामिआ़त को शुरूअ़ करने वालों के लिए सदक़ए जारिया है, अल्लाह करीम इ़ल्मे दीन की दर्सगाहों को तरक़्क़ी व दवाम नसीब फ़रमाए और हम को भी इस अ़ज़ीम कारे ख़ैर में अपना ह़िस्सा मिलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

जामिअ़तुल मदीना, भुज, हिन्द

कोहे तूर के जल्वे

19 दिसम्बर 2025 ई की रात मुबल्लिग़े दावते इस्लामी का दीनी कामों के सिल्सिले में मिस्र का सफ़र हुवा, इस सफ़र की रूदाद उन्ही की ज़बानी मुलाहज़ा कीजिए :

येह रात एक यादगार और रूह परवर सफ़र के आग़ाज़ का सबब बनी। तक़रीबन तीन बजे हम बरास्ता कुवैत मिस्र के लिए रवाना हुए। कुवैत ऐयरपोर्ट पर चन्द इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात हुई, और येह देख कर दिली ख़ुशी महसूस हुई कि वहां मौजूद मुसाफ़िर भी اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी का तज़्किरा कर रहे थे। येह सब अल्लाह करीम की रहमतों का फ़ैज़ान था। इस से पहले भी मिस्र जाने का मौक़अ़ मिला था, मगर दिल में एक ख़्वाहिश थी कि कोहे तूर की हाज़िरी नसीब हो। इस बार दिसम्बर की सख़्त सर्दी, सफ़र की मशक़्क़त और दुश्वार गुज़ार रास्तों के बावुजूद येह शौक़ ग़ालिब आया और बुज़ुर्गों से दुआएं ले कर हम ने उस सफ़र का आग़ाज़ किया और बिल आख़िर मिस्र पहुंच ही गए।

कोहे तूर, शरमल अश्शैख़ शहर से तक़रीबन तीन घन्टे की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ है। इस सफ़र के लिए बा क़ायदा एक पैकेज के तहत होटल से बस के ज़रीए रवानगी होती है। रात तक़रीबन साढ़े आठ बजे बस आई और हम उस में सुवार हो गए। रास्ते में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होटलों से दीगर मुसाफ़िरों को साथ लिया जाता रहा, यहां तक कि रात एक बजे के क़रीब हम कोहे तूर के दामन में पहुंच गए। येह बात हैरान कुन थी कि इस सफ़र में सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं बल्कि दीगर मज़ाहिब के लोग भी शरीक थे, क्यूंकि उन के हां भी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की अ़ज़मत और कोहे तूर का ज़िक्र अ़क़ीदतो एहतिराम से किया जाता है। रास्ते में कई मक़ामात पर सिक्यूरिटी चेकिंग भी होती रही, जब कि सर्दी अपनी शिद्दत पर थी। मुसाफ़िरों ने गर्म कपड़े पहन कर पहाड़ की चढ़ाई का आग़ाज़ किया, जो तक़रीबन तीन से साढ़े तीन घन्टे पर मुश्तमिल था। इस दौरान एक सहूलत येह भी थी कि ख़्वाहिश मन्द अफ़राद ऊंट की सुवारी इख़्तियार कर सकते थे। हम ने भी सुन्नत की अदाएगी की निय्यत और सफ़र में आसानी के पेशे नज़र ऊंट की सुवारी ली, जिस के ज़रीए اَلْحَمْدُلِلّٰه तक़रीबन सत्तर फ़ीसद रास्ता त़ै हो गया।

तक़रीबन दो घन्टे के बाद हम उस मक़ाम पर पहुंचे जहां से ऊंट की सुवारी ख़त्म हो जाती है और उस से आगे तक़रीबन साढ़े सात सौ सीढ़ियां चढ़ना पड़ती हैं। येह मर्हला वाक़ेई आज़्माइश से कम न था। सारी रात की बेदारी, सख़्त सर्दी और जिस्मानी थकन के बावुजूद हम मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर वक़्फ़ा करते हुए सीढ़ियां त़ै करते रहे, वहां जगह जगह कॉफ़ी शोप्स बनी हुई थीं और खाने पीने की चीज़ों की दुकानें भी मौजूद थीं, बहरहाल येह सीढ़ियां ख़त्म हुईं

और हम सुब्ह छे बजे के क़रीब कोहे तूर की चोटी पर पहुंच गए।

चोटी पर एक मस्जिद भी बनी हुई थी जिस में हम ने नमाज़े फ़ज्र अदा करने की सआदत हासिल की। इस के बाद कुछ देर दुआ, दुरूदो सलाम और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहे, जिस से दिल को एक अजीब सुकून नसीब हुवा। वहां एक ग़ार भी मौजूद है, जिस के बारे में बताया जाता है कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस में चालीस रातें क़ियाम फ़रमाया था। येह वोही मुक़द्दस मक़ाम है जहां अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कलाम फ़रमाया, येह ऐसा वाक़िआ है जो ईमान को ताज़गी बख़्शता है। इस वाक़िए की तफ़्सील कुछ यूं है :

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कलाम फ़रमाया उस पर हमारा ईमान है। कलाम की हक़ीक़त अल्लाह तआला बेहतर जानता है। किताबों में मज़्कूर है कि जब हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह तआला से हम कलाम होने के लिए हाज़िर हुए तो आप ने तहारत की, पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में हाज़िर हुए। अल्लाह तआला ने एक बादल नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर तरफ़ से चार फ़रसंग (यानी 12 मील) की मिक़्दार ढक लिया। शयातीन और ज़मीन के जानवर हत्ता कि साथ रहने वाले फ़रिश्ते तक वहां से अलाहदा कर दिए गए। आप के लिए आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाइका को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं। आप ने अर्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अलवाह पर क़लमों की आवाज़ सुनी और अल्लाह तआला ने आप से कलाम फ़रमाया। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह तआला की बारगाह में अपनी मारूज़ात पेश कीं, अल्लाह तआला ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने अल्लाह तआला के दीदार का आरज़ूमन्द और मुश्ताक़ बना दिया।

चुनान्चे बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अर्ज़ की : ﴿رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ ؕ﴾ तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे अपना जल्वा दिखा ताकि मैं तेरा दीदार कर लूं।[1]

यानी सिर्फ़ दिल या ख़याल का दीदार नहीं मांगता बल्कि आंख का दीदार चाहता हूं जैसे तू ने मेरे कान से हिजाब उठा दिया तो मैं ने तेरा कलामे क़दीम सुन लिया ऐसे ही मेरी आंख से पर्दा हटा दे ताकि तेरा जमाल देख लूं। अल्लाह तआला ने उन से इरशाद फ़रमाया : ﴿لَنْ تَرٰىنِیْ وَ لٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ ۚ﴾ तर्जमा : तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता उस पहाड़ की तरफ़ देख, येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अनक़रीब तू मुझे देख लेगा।[2]

याद रहे कि यहां अल्लाह तआला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं बल्कि दुनिया में हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के देखने की नफ़ी की है। इस से साबित हुवा कि दीदारे इलाही मुम्किन है अगर्चे दुनिया में न हो क्यूंकि सहीह हदीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब के दीदार से फ़ैज़याब किए जाएंगे, इस के इलावा येह कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह तआला की मारिफ़त रखते हैं, अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते[3] कि अल्लाह के नबी किसी मुहाल शै की दुआ नहीं करते।

क़िस्सा मुख़्तसर, जब रब तआला ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया तो वोह पहाड़ पाश पाश हो गया और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बेहोश हो कर गिर गए, फिर जब होश आया तो अर्ज़ की :

﴿سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ(۱۴۳)﴾

तर्जमा : तू पाक है, मैं तेरी तरफ़ रुजूअ लाया और मैं सब से पहला मुसलमान हूं।[4]

यहां एक नुक्ता क़ाबिले ज़िक्र है कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह तआला से अपना दीदार करवाने की दुआ की तो अल्लाह तआला ने उन्हें मना फ़रमाया, पहाड़ तज्जलिए रब्बानी बरदाश्त न कर सका और पाश पाश हो गया और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए जब कि अपने हबीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

﴿وَ هُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى(۷) ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى(۸) فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰى(۹) فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى(۱۰) مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى(۱۱) اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا یَرٰى(۱۲) وَ لَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً

اُخْرٰى(۱۳) عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى(۱۴) عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى(۱۵) اِذْ یَغْشَى السِّدْرَةَ مَا یَغْشٰى(۱۶) مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَ مَا طَغٰى(۱۷)

तर्जमा : इस ह़ाल में कि वोह आस्मान के सब से बुलन्द किनारे पर थे। फिर वोह जल्वा क़रीब हुवा फिर और ज़ियादा क़रीब हो गया। तो दो कमानों के बराबर बल्कि इस से भी कम फ़ासिला रह गया। फिर उस ने अपने बन्दे को वह़ी फ़रमाई जो उस ने वह़ी फ़रमाई। दिल ने उसे झूट न कहा जो (आंख ने) देखा। तो क्या तुम उन से उन के देखे हुए पर झगड़ते हो। और उन्हों ने तो वोह जल्वा दो बार देखा। सिद्रतुल मुन्तहा के पास। उस के पास जन्नतुल मावा है। जब सिद्रा पर छा रहा था जो छा रहा था। आंख न किसी त़रफ़ फिरी और न ह़द से बढ़ी।[5]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस मुक़द्दस मक़ाम की ज़ियारत करने के बाद जब सुब्ह़ के सूरज की किरनें पहाड़ों पर फैलीं तो वोह मन्ज़र निहायत दिलकश और रूह़ परवर था। हर त़रफ़ एक रूह़ानी फ़ज़ा और एक ख़ास कैफ़िय्यत पूरे माह़ौल पर त़ारी थी।

कुछ वक़्त वहां गुज़ारने के बाद हमें कोहे तजल्ली के दीदार का मौक़अ़ भी मिला, जो एक निहायत बा बरकत मक़ाम समझा जाता है। वापसी पर एक और अ़ज़ीम मक़ाम की ह़ाज़िरी नसीब हुई, वोह दरख़्त जहां ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला से हमकलाम होने का शरफ़ ह़ासिल हुवा। उस मक़ाम पर खड़े हो कर दिल पर एक ख़ास हैबत और रूह़ानी कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है, इस अ़ज़ीम वाक़िए़ का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी मौजूद है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْهِ السَّلَام से इजाज़त ले कर मदयन से मिस्र की त़रफ़ अपनी वालिदा माजिदा से मिलने के लिए रवाना हुए, आप عَلَیْهِ السَّلَام के अहले बैत हमराह थे, और आप ने शाम के बादशाहों (की त़रफ़ से नुक़्सान पहुंचने) के अन्देशे से सड़क छोड़ कर जंगल में मसाफ़त त़ै करना इख़्तियार फ़रमाया, उस वक़्त ज़ौजए मोह़तरमा ह़ामिला थीं, चलते चलते त़ूर पहाड़ के मग़रिबी जानिब पहुंचे तो यहां रात के वक़्त ज़ौजए मोह़तरमा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हुवा, येह रात अन्धेरी थी, बर्फ़ पड़ रही थी और सर्दी शिद्दत की थी, इतने में आप عَلَیْهِ السَّلَام को दूर से आग मालूम हुई।[6]

जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने आग देखी तो अपनी ज़ौजए मोह़तरमा से फ़रमाया : आप यहीं ठहरों, मैं ने एक जगह आग देखी है, इस लिए मैं जाता हूं, शायद मैं तुम्हारे पास उस आग में से कोई चिंगारी ले आऊं या मुझे आग के पास कोई ऐसा शख़्स मिल जाए जिस से दुरुस्त रास्ता पूछ कर हम मिस्र की त़रफ़ रवाना हो सकें।

ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام उस आग के पास तशरीफ़ लाए तो वहां आप عَلَیْهِ السَّلَام ने एक सर सब्ज़ो शादाब दरख़्त देखा जो ऊपर से नीचे तक इन्तिहाई रौशन था और आप عَلَیْهِ السَّلَام जितना उस के क़रीब जाते उतना वोह दूर हो जाता और जब आप عَلَیْهِ السَّلَام ठहर जाते तो वोह क़रीब हो जाता, उस वक़्त आप عَلَیْهِ السَّلَام को निदा फ़रमाई गई कि ऐ मूसा ! बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार दे कि इस में आ़जिज़ी का इज़्हार, मुक़द्दस जगह का एह़तिराम और पाक वादी की ख़ाक से बरकत ह़ासिल करने का मौक़अ़ है, बेशक तू इस वक़्त पाक वादी त़ुवा में है।[7]

हमारा येह सफ़र बज़ाहिर जिस्मानी मशक़्क़त से भरपूर था, मगर दर ह़क़ीक़त एक रूह़ानी तजरिबा साबित हुवा, ऐसा तजरिबा जिस ने दिल को ताज़गी बख़्शी और ईमान को नई ह़रारत अ़त़ा की।

अल्लाह करीम हमें ऐसे बाबरकत मक़ामात की बार बार ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाए और उन से ह़ासिल होने वाली रूह़ानी कैफ़िय्यात को हमेशा क़ाइम रखे। आमीन

---

(1) پ9، الاعراف: 143 (2) پ9، الاعراف: 143 (3) خازن، الاعراف، تحت الآیۃ: 143، 2/135، صاوی، الاعراف، تحت الآیۃ: 143، 2/707 ملتقطاً (4) پ9، الاعراف: 143 (5) پ27، النجم: 7 تا 17، سیرت الانبیاء، ص606 تا608 (6) تفسیر کبیر، طٰہٰ، تحت الآیۃ: 9، 8/15، خازن، طٰہٰ، تحت الآیۃ: 9، 3/249-250 ملتقطا (7) مدارک، طٰہٰ، تحت الآیۃ: 11-12، ص687، دیکھئے: صراط الجنان، 6/179 تا 181۔

नए लिखारी
(New Writers)

नए लिखने वालों के इन्आम याफ़्ता मज़ामीन

बद अ़हदी की क़ुरआनी वई़दात

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी मदनी
(तख़स्सुस फ़िल लुग़तुल अ़रबिय्या जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम में वादा पूरा करना बुन्यादी अख़्लाक़ी क़द्र है। क़ुरआने मजीद में बार बार अ़हद की पाबन्दी का हुक्म दिया गया है और बद अ़हदी पर सख़्त तम्बीह फ़रमाई गई है। वादा सिर्फ़ ज़बानी बात नहीं, बल्कि येह एक ज़िम्मेदारी है जिस से दुनिया और आख़िरत का अन्जाम वाबस्ता है। जब इन्सान वादा तोड़ता है तो उस का एतिमाद ख़त्म होता है, मुआ़शरा कमज़ोर होता है और इन्सान अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी मोल लेता है। इस मज़्मून में क़ुरआने करीम से चन्द वाज़ेह वई़दें पेश की जा रही हैं :

1 बद अ़हदी पर पहली सख़्त वई़द

क़ुरआने करीम में बद अ़हदों को "**ख़ासिर**" कहा गया। यानी ह़क़ीक़ी नुक़्सान उठाने वाले। येह ख़सारा माल का नहीं, ईमान और आख़िरत का है, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اَلَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ۪ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ(۲۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अल्लाह के अ़हद को तोड़ देते हैं पक्का होने के बाद और काटते हैं उस चीज़ को जिस के जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं वोही नुक़्सान में हैं। (پ1، البقرۃ:27)

2 बद अ़हद पर अल्लाह की लानत

इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ الَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ وَ یَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِۙ اُولٰٓىٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ(۲۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह जो अल्लाह का अ़हद उसे पुख़्ता करने के बाद तोड़ देते हैं और जिसे जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म फ़रमाया है उसे काटते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन के लिए लानत ही है और उन के लिए बुरा घर है। (پ13، الرعد:25)

यहां बद अ़हदी को फ़साद के साथ जोड़ा गया है। जो लोग अ़हद तोड़ते हैं उन के लिए अल्लाह तआ़ला की लानत और आख़िरत में बुरा ठिकाना है। येह बहुत सख़्त वईद है जो हमें अपने वादों के बारे में संजीदा बनाती है।

3 सब जानवरों से बदतर

﴿اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ(۵۵) اَلَّذِیْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِیْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا یَتَّقُوْنَ(۵۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़्दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते वोह जिन से तुम ने मुआ़हदा किया था फिर हर बार अपना अ़हद तोड़ देते हैं और डरते नहीं। (پ10، الانفال:55،56)

इस आयते मुबारका में बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों को सब जानवरों से बदतर बताया गया जिन्हों ने जंग के मौक़अ़ पर अ़हद शिक्नी करते हुए कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की अ़स्करी इम्दाद की।

वैसे तो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान न लाने वाले सब जानवरों से बदतर हैं मगर बावुजूद कुफ़्र के अ़हद शिकन भी हों तो और भी ख़राब। अ़हद शिक्नी हर आ़क़िल के नज़्दीक शर्मनाक जुर्म है और अ़हद शिक्नी करने वाला सब के नज़्दीक बेएतिबार हो जाता है। जब उस की बेग़ैरती इस दर्जा पहुंच गई तो यक़ीनन वोह जानवरों से बदतर हैं। (देखिए : ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 331)

4 बद अ़हदी दिल में निफ़ाक़ पैदा करती है

﴿فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ(۷۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस के पीछे अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला उस का कि उन्हों ने अल्लाह से वादा झूटा किया और बदला उस का कि झूट बोलते थे। (پ10، التوبۃ:77)

इस आयत में बताया गया कि वादा ख़िलाफ़ी दिल की बीमारी बन जाती है। जो शख़्स बार बार वादा तोड़ता है, उस के दिल में निफ़ाक़ पैदा हो जाता है। निफ़ाक़ ईमान के लिए बहुत ख़तरनाक है। इस लिए वादा पूरा करना ईमान की ह़िफ़ाज़त है।

क़ुरआने मजीद की येह आयात वाज़ेह़ करती हैं कि बद अ़हदी किस क़दर मज़्मूम सिफ़त है। हमें चाहिए कि हम हर वादा सोच समझ कर करें और फिर उसे हर ह़ाल में पूरा करें, चाहे कारोबार का मुआ़मला हो, घरेलू तअ़ल्लुक़ हो या दीनी ज़िम्मेदारी, वादा पूरा करना ही ईमान दारी है।

अल्लाह पाक हमें अ़हद पूरा कनरे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत ह़दीस की रौशनी में

शेर ज़मान अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

ख़ुद पसन्दी मोहलिकात (यानी हलाकत में डालने वाले आमाल) में से एक है, उन के बारे में ज़रूरी अह़काम मुसलमान के लिए जानना ज़रूरी है :

ख़ुद पसन्दी की तारीफ़

अपने कमाल (मसलन इ़ल्म या अ़मल या माल) को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा। गोया ख़ुद पसन्द शख़्स नेमत को मुन्इ़मे ह़क़ीक़ी (यानी अल्लाह तआ़ला) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाए। (देखिए : इह़याउल उ़लूम, 3/454) यानी मिली हुई नेमत मसलन सेह़त या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़हानत या ख़ुश इल्हानी मन्सब वग़ैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि येह सब रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की इ़नायत है)

ख़ुद पसन्दी का हुक्म

ख़ुद पसन्दी को हदीस में बड़ा गुनाह क़रार दिया गया है चुनान्चे हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर्चे तुम से कोई गुनाह सरज़द न हो लेकिन मुझे तुम पर गुनाह से भी बड़े जुर्म का ख़ौफ़ है और वोह है उ़जुब यानी ख़ुद पसन्दी। (مسند البزار، 13/326، حدیث:6936)

अहादीसे मुबारका में बहुत से मक़ामात पर ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत फ़रमाई गई है, चन्द अहादीस पढ़िए :

ख़ुद पसन्दी का नुक़सान

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : गुनाहों पर नादिम होने वाला अल्लाह पाक की रहमत का मुन्तज़िर होता है जब कि ख़ुद पसन्दी करने वाला अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का मुन्तज़िर होता है। (شعب الایمان، 5/453، حدیث:7254)

ख़ुद पसन्दी बदसूरत इन्सान होती

उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर ख़ुद पसन्दी इन्सानी शक्ल में होती तो वोह सब से बदसूरत इन्सान होती। (جامع الاحادیث، 5/130، حدیث:17650)

सत्तर (70) साल के अ़मल बरबाद

जामेउ़ल सग़ीर की एक रिवायत में है : ख़ुद पसन्दी 70 साल के अ़मल को बरबाद कर देती है। (جامع الصغیر، ص127، حدیث:2074)

ऐ़बों की तश्हीर (फैलाना)

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शोहरत त़लब करेगा (क़ियामत के दिन) उस के ऐ़बों की तश्हीर होगी और जो शोहरत लोगों को दिखाने के लिए अ़मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसे उस का बदला देगा। (بخاری، 4/247، الحدیث:6499)

अहादीसे करीमा की इन तालीमात का सहाबए किराम पर कैसा असर हुवा, ख़ुद पसन्दी से कैसे बचते थे, पढ़िए :

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ुद पसन्दी से बहुत ज़ियादा डरते थे और जब लोग आप की तारीफ़ करते तो आप इस त़रह़ दुआ़ मांगते : या अल्लाह ! मुझे इस से बेहतर बना दे जो कुछ येह कहते हैं और जो कुछ येह नहीं जानते मेरा वोह अ़मल बख़्श दे। (تنبیہ المغترین، ص241)

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की लोग तारीफ़ करते तो वोह इस त़रह़ दुआ़ मांगते : या अल्लाह ! मैं इस चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहता हूं जो कुछ येह कहते हैं और तुझ से इस अ़मल की बख़्शिश चाहता हूं जिस का उन्हें इ़ल्म नहीं। (تنبیہ المغترین، ص242)

अल्लाह पाक हमें ख़ुद पसन्दी से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और अहादीसे मुबारका पढ़ कर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुत़ालअ़ए अख़्लाक़ियात की अहमियत व ज़रूरत

फ़राज़ अ़ज़ीज़ पन्हूर
(दर्जए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

अख़्लाक़ियात उन उसूलों और इक़्दार का मज्मूआ़ हैं जो इन्सान को अच्छाई और बुराई में फ़र्क़ सिखाते हैं। येह इ़ल्म न सिर्फ़ इन्सान के ज़ाहिर बल्कि बात़िन की भी इस्लाह़ करता है। एक मुहज़्ज़ब और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए अख़्लाक़ियात का जानना और उस पर अ़मल करना बेह़द ज़रूरी है।

इस्लाम में अख़्लाक़ियात की बुन्याद

इस्लाम ने अख़्लाक़ियात को ग़ैर मामूली अहमियत दी है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ तर्जमा : मुझे इस लिए भेजा गया है कि मैं अच्छे अख़्लाक़ को मुकम्मल कर दूं।

(مسند البزار، 15/364، حدیث:8949)

शख़्सिय्यत की तामीर में किरदार

मुतालअए अख़्लाक़ियात इन्सान की शख़्सिय्यत को निखारता है। इस के ज़रीए इन्सान में सच्चाई, दियानत दारी, सब्र, शुक्र और आजिज़ी जैसी सिफ़ात पैदा होती हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا तर्जमा : मोमिनों में कामिल ईमान वाला वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों। (ترمذی 2/386، حدیث:1165)

मुआशरती ज़िन्दगी में अहमियत

एक अच्छा मुआशरा उसी वक़्त क़ाइम होता है जब उस के अफ़राद अख़्लाक़ी उसूलों पर अमल करें। अख़्लाक़ियात इन्सान में बरदाश्त, रवादारी और दूसरों के हुक़ूक़ का ख़याल रखने का जज़्बा पैदा करती हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: اِنَّ مِنْ اَحَبِّكُمْ اِلَيَّ وَاَقْرَبِكُمْ مِنِّيْ مَجْلِسًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَحَاسِنَكُمْ اَخْلَاقًا तर्जमा : तुम में से मुझे सब से ज़ियादा महबूब और क़ियामत के दिन मेरे क़रीब वोह होगा जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे होंगे।

(ترمذی، 3/409، حدیث:2025)

आख़िरत में कामयाबी का ज़रीआ

अख़्लाक़ियात इन्सान को न सिर्फ़ दुनिया में कामयाब बनाते हैं बल्कि आख़िरत में भी नजात का सबब बनते हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَا مِنْ شَيْءٍ اَثْقَلُ فِيْ مِيْزَانِ الْمُؤْمِنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ तर्जमा : क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ान में सब से भारी चीज़ अच्छा अख़्लाक़ होगा। (ترمذی، 3/403، حدیث:2009)

बुराइयों से बचाव

मुतालअए अख़्लाक़ियात इन्सान को झूट, हसद, तकब्बुर और ख़ुद ग़र्ज़ी जैसी बुराइयों से बचाता है। येह इन्सान को अपनी इस्लाह़ की त़रफ़ मुतवज्जेह करता है और बेहतर इन्सान बनने की तरग़ीब देता है।

तालीम और अख़्लाक़ का इम्तिज़ाज

सिर्फ़ दुन्यावी तालीम इन्सान को मुकम्मल नहीं बनाती, बल्कि अख़्लाक़ी तालीम भी ज़रूरी है। इल्म के साथ अख़्लाक़ शामिल होने से इन्सान न सिर्फ़ कामयाब होता है बल्कि दूसरों के लिए भी मश्अले राह बनता है।

ख़ानदानी और मुआशरती इस्तिह़काम

मुतालअए अख़्लाक़ियात से घर का माह़ौल बेहतर बनाने में मदद मिलती है जिस के नतीजे में वालिदैन और औलाद के दरमियान मह़ब्बत, एह़तिराम और एतिमाद क़ाइम होता है और एक मज़बूत और पुरअम्न मुआशरा तश्कील पाता है।

रूह़ानी तरक़्क़ी का ज़रीआ

अख़्लाक़ियात इन्सान को अल्लाह तआला के क़रीब करते हैं। आजिज़ी, इख़्लास और ह़ुस्ने सुलूक जैसी सिफ़ात दिल को पाकीज़ा बनाती हैं और इन्सान को रूह़ानी सुकून अता करती हैं।

मुतालअए अख़्लाक़ियात हर इन्सान के लिए निहायत ज़रूरी है। येह न सिर्फ़ फ़र्द की इस्लाह़ करता है बल्कि पूरे मुआशरे को भी संवारता है। अगर हम अपनी ज़िन्दगी में अच्छे अख़्लाक़ की तालीम अपनाएं और अमल करें तो दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाबी ह़ासिल कर सकते हैं। अल्लाह पाक हमें अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बच्चों के लिए प्यारी ह़दीस

बुज़ुर्गों की ताज़ीम कीजिए

हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ مِنْ اِجْلَالِ اللّٰہِ اِکْرَامَ ذِی الشَّیْبَۃِ الْمُسْلِمِ यानी बेशक अल्लाह की ताज़ीम में से है कि बूढ़े मुसलमान की इ़ज़्ज़त की जाए।[1]

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में है : बूढ़े मुसलमान की ताज़ीम करो यानी वोह शख़्स जिस के बाल सफ़ेद हो चुके हों और उस की उ़म्र इस्लाम और ईमान की ह़ालत में गुज़री हो।[2]

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें अच्छे और आला अख़्लाक़ की तालीम दी है और ज़िन्दगी के हर मुआ़मले में राहनुमाई फ़रमाई है। इस ह़दीसे पाक में बुज़ुर्गों के ह़ुक़ूक़ की अहमियत को वाज़ेह़ किया गया है और बुज़ुर्गों की इ़ज़्ज़त को अल्लाह की ताज़ीम से जोड़ कर समझाया है यानी जो बुज़ुर्गों का एह़तिराम करे, गोया वोह अल्लाह की बड़ाई बयान करता है।

बुज़ुर्ग अफ़राद हर घर, गली मह़ल्ले या ख़ानदान का ह़िस्सा होते हैं। और घरों की रौनक़ होते हैं, उन की इ़ज़्ज़तो तकरीम करना इस्लामी तालीमात हैं। उन की ख़िदमत करनी चाहिए, उन के पास बैठना चाहिए, उन को वक़्त दे कर उन से बातें कर के उन का दिल बहला कर दुआ़एं लेनी चाहिएं और उन के तजरिबात और समझदारी से फ़ायदा उठाना चाहिए, जो बच्चा बुज़ुर्गों की इ़ज़्ज़त करता है, लोग उस से प्यार करते हैं।

बाज़ बच्चे बड़े बूढ़े अफ़राद को तंग करते हैं, उन की कोई चीज़ छुपा कर, उन की बात न मान कर, उन का मज़ाक़ उड़ा कर, और उन के मना करने के बावुजूद उन के सामने शोर शराबा करते हैं जिस के सबब वोह बेज़ार होते हैं।

अच्छे बच्चो ! आप बुज़ुर्गों को तंग न करें बल्कि उन के काम आएं, सड़क पार करवाएं, सामान उठवाएं या वुज़ू करवाने में मदद करें, उन की बात न काटें, बुज़ुर्गों को सलाम में पहल करें, उन की दस्तबोसी करें, रास्ते में चलते हुए उन को रास्ता दें उन से आगे न चलें, खाने के वक़्त दस्तरख़्वान पर अगर कोई बुज़ुर्ग हों तो उन से पहले खाना शुरूअ़ न करें, उन्हें उन के नाम से न पुकारें बल्कि अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ पुकारें, जैसे अंकल जी, चचा जी, दादाजान वग़ैरा।

बुज़ुर्गों के सामने ख़ुद ऊंची और अच्छी जगह पर न बैठें मसलन अगर वोह नीचें बैठे हों तो उन के सामने सोफ़े वग़ैरा पर न बैठें कि येह भी उन की ताज़ीम है इस त़रह जब कोई बुज़ुर्ग ट्रेन या बस वग़ैरा में आएं तो हो सके तो उन के लिए सीट छोड़ दें, और अच्छी जगह बैठने की दावत दें, उस का दर्स नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अ़मल से दिया, एक मरतबा का ज़िक्र है कि जब आप की रज़ाई वालिदा आप के पास तशरीफ़ लाईं तो प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और उन के बैठने के लिए अपनी मुबारक चादर भी बिछा दी।[3]

याद रखें ! आज हम ने जो कुछ पढ़ा, उस का मर्कज़ वोही शुरूअ़ में लिखी ह़दीसे पाक है। तो आप भी अपने घर, मह़ल्ले, ख़ानदान और मस्जिद में आए हुए बुज़ुर्गों का अदबो एह़तिराम करें और ह़दीसे पाक पर अ़मल कर के बरकतें पाएं।

अल्लाह पाक हमें बुज़ुर्गों का अदबो एह़तिराम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)ابوداؤد، 4/344، حدیث: 4843 (2)دلیل الفالحین، 2/12، تحت الحدیث: 354 (3)دیکھیے: مراٰۃ المناجیح، 6/533۔

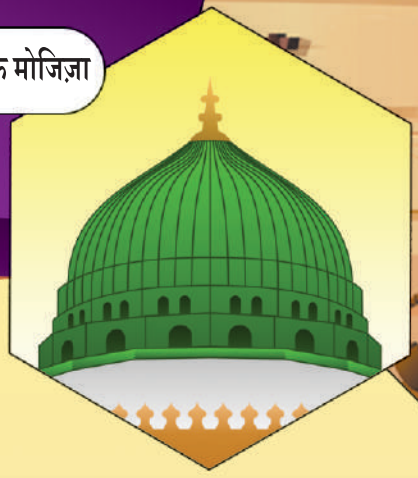

बच्चे ज़िन्दा हो गए

ख़ुबैब और उम्मे ह़बीबा दादाजान के कमरे में गए तो सुहैब भी पीछे पीछे आ गया। दादाजान ने उन की त़रफ़ देखते हुए कहा : आज बच्चे ख़ुद आए हैं ज़रूर कोई बात है, उम्मे ह़बीबा ने कहा : जी दादाजान ! आज हम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक मोजिज़ा सुनने के लिए ख़ुद आए हैं। दादाजान ने कहा : येह तो बहुत अच्छी बात है, चलो बताओ ! कौन सा मोजिज़ा सुनोगे ?

ख़ुबैब ने कहा : दादाजान ! एक बार आप ने बताया था कि अल्लाह पाक के नबी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मरने वालों को ज़िन्दा कर देते थे, क्या हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ऐसा कर सकते थे ? दादाजान ने कहा : जी हां, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऐसे बहुत सारे मोजिज़े हैं। ख़ुबैब ने फ़ौरन कहा : दादाजान फिर जल्दी से सुनाइए। दादाजान ने कहा : सुनाता हूं, लेकिन एक बात हमेशा याद रखना !!!!

अल्लाह पाक ने हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहले नबियों के सारे मोजिज़े दिए हैं और बहुत सारे ऐसे मोजिज़े भी दिए जो किसी और को नहीं दिए।

सुहैब ने कहा : दादाजान ! **जैसे चांद को तोड़ने और जोड़ने वाला मोजिज़ा किसी और नबी को नहीं दिया।** दादाजान ने ख़ुश हो कर कहा : अरे वाह सुहैब ! आप को चांद वाला मोजिज़ा याद है। अच्छा चलो अब मोजिज़ा सुनो !

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه, येह हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बहुत प्यारे सह़ाबी हैं। दादाजान ने कहा : सह़ाबी का म़तलब तो आप जानते ही हो, सुहैब फ़ौरन बोला : जी दादाजान ! जिन्हों ने ईमान की ह़ालत में अल्लाह के प्यारे नबी से मुलाक़ात की हो और ईमान ही पर उन का इन्तिक़ाल हुवा, उन्हें सह़ाबी कहते हैं।

एक दिन ह़ज़रते जाबिर ने सोचा कि आज वोह हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत करेंगे। पहले ज़माने में तो लोग घरों में बकरियां और दूसरे जानवर पालते थे और जब कोई मेहमान आता तो उस के लिए ज़ब्ह़ कर देते थे। ह़ज़रते जाबिर ने भी ऐसा ही किया, एक बकरी ज़ब्ह़ की।

ह़ज़रते जाबिर के 2 बेटे भी थे, जो ज़ियादा बड़े नहीं थे, वोह येह सब देख रहे थे कि अब्बूजान ने किस त़रह़ बकरी को ज़ब्ह़ किया। फिर वोह दोनों घर की छत पर चले गए, बड़े भाई ने छोटे से कहा : आओ ! मैं भी तुम को ऐसे ही ज़ब्ह़ करता हूं जैसे अब्बू ने बकरी को किया था।

तीनों बच्चों ने एक साथ कहा : या अल्लाह रह़म कर ! उम्मे ह़बीबा ने कहा : तो क्या बड़े भाई ने छोटे को ज़ब्ह़ कर दिया था ? दादाजान ने कहा : जी बेटा ! शायद वोह उसे खेल या मज़ाक़ समझ रहे होंगे।

अच्छा अब मेरी बात ग़ौर से सुनो !!!

बच्चों को बड़ों वाला काम कभी भी नहीं करना चाहिए। कोई भी फल फ़ूट ख़ुद नहीं काटना चाहिए बल्कि अम्मी से कटवाना चाहिए, खाना या कोई भी चीज़ गर्म करनी हो तो अम्मी को बोलना चाहिए, इसी त़रह़ बिजली वाली चीज़ों को ख़ुद नहीं चलाना चाहिए बल्कि अम्मी, अब्बू या घर में कोई बड़ा हो उसे कहना चाहिए। अगर आप उन चीज़ों को ख़ुद इस्तिमाल करेंगे तो चोट या करन्ट भी लग सकता है।

उम्मे ह़बीबा ने कहा : दादाजान ! इस के बाद क्या हुवा ? दादाजान ने कहा : उन की अम्मीजान किसी काम से छत पर गईं, जब बड़े बेटे ने अम्मी को देखा तो वोह डर के मारे भागने लगा, भागते हुए वोह एक दम से छत से गिर गया और वोह भी फ़ौत हो गया।

दादाजान बिल्कुल चुप हो गए थे, बच्चों को भी दुख हो रहा था। थोड़ी देर बाद दादाजान ने दोबारा बोलना शुरूअ़ किया : ह़ज़रते जाबिर की बीवी बहुत सब्र वाली थीं, बच्चों के इन्तिक़ाल पर न वोह चीख़ीं और ना ही शोर मचाया, बस ख़ामोशी से दावत के लिए खाना तय्यार करने लग गईं।

उम्मे ह़बीबा ने कहा : दादाजान ! जब बच्चे का इन्तिक़ाल हो जाता है तो अम्मी अब्बू तो बहुत रोते हैं, लेकिन ! उन की अम्मी क्यूं नहीं रो रही थीं ? दादाजान ने कहा : वोह इस लिए कि उन के घर मेहमान आने वाले थे, मेहमान भी कौन ? अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

वोह लोग तो हमारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बहुत ख़याल रखते थे, कोई ऐसा काम नहीं करते थे जिस से हमारे नबी को तक्लीफ़ या परेशानी हो। इस लिए वोह नहीं रोईं।

ख़ुबैब बोला : अच्छा दादाजान आगे क्या हुवा ?

थोड़ी देर बाद ह़ज़रते जाबिर हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने घर ले कर आ गए। ह़ज़रते जाबिर बहुत ख़ुश थे, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के मेहमान थे। उन्हों ने जल्दी जल्दी दस्तरख़्वान बिछा कर खाना लगा दिया।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो बच्चों से बहुत प्यार करते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से कहा : जाओ ! अपने बच्चों को भी ले कर आओ, वोह भी हमारे साथ खाना खाएंगे। वोह फ़ौरन कमरे से बाहर आए और अपनी बीवी से कहा : बच्चे कहां हैं ? हमारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें खाने के लिए बुला रहे हैं। उन की बीवी ने कहा: बच्चे नहीं हैं।

हमारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहा : अल्लाह पाक का हुक्म है बच्चों को जल्दी से बुलाओ। ह़ज़रते जाबिर दोबारा अपनी बीवी के पास गए और बच्चों का पूछा, अब की बार उन की बीवी रो पड़ीं और कहा : हमारे बच्चे फ़ौत हो गए, अब मैं उन को कभी भी नहीं ला सकती।

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه तो हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लेने गए हुए थे, उन्हें तो मालूम भी नहीं था कि उन के बच्चों का इन्तिक़ाल हो गया। इस लिए जब ह़ज़रते जाबिर ने सुना तो वोह भी रोने लग गए।

उन्हों ने दोनों बच्चों को उठाया और हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ले आए। इसी टाइम अल्लाह पाक ने एक फ़रिश्ता हमारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेजा, फ़रिश्ते ने कहा: **अल्लाह पाक का हुक्म है कि आप दुआ करेंगे तो अल्लाह पाक बच्चों को ज़िन्दा कर देगा।** हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी, अल्लाह पाक ने उसी वक़्त दोनों बच्चों को ज़िन्दा कर दिया। (شواہد النبوۃ، ص105، مدارج النبوۃ، 1/199)

उम्मे ह़बीबा ने कहा : दादाजान ! **सच मैं हमारे नबी बहुत कमाल वाले हैं।** ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه के दोनों बच्चों का सुन कर हमें बहुत दुख हो रहा था, अब हम ख़ुश हैं कि **अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ की वजह से मरने वाले बच्चे ज़िन्दा हो गए।**

दादाजान ने कहा : **एक मोजिज़ा ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه की बकरी वाला भी है।** अब दादाजान दूसरा मोजिज़ा सुनाते, उस से पहले उन का फ़ोन आ गया। दादाजान फ़ोन पर बात करने लग गए और बच्चे कमरे से बाहर आ गए।

इन्सानी जान

गर्मी का मौसम जौबन पर था, बच्चों की स्कूलों से छुट्टियां हो चुकी थीं, अलबत्ता हुकूमत की इजाज़त से हफ़्ते में दो दिन बच्चों को समर कैम्प के लिए स्कूल बुलाने की इजाज़त थी ताकि उन्हें तालीम के साथ साथ एक अच्छा मुसलमान और अच्छा हिन्दुस्तानी शहरी बनाने के लिए मुख़्तलिफ़ एक्टिविटीज़ में उन की शुमूलिय्यत करवाई जाए। इसी लिए आज स्कूल में चहल पहल थी और मुख़्तलिफ़ क्लासिज़ के इन्चार्ज़ अपनी अपनी क्लास के बच्चों के साथ मसरूफ़ थे। जब कि सातवीं क्लास के बच्चों में जोशो ख़रोश का एक अलग ही आ़लम था। दर अस्ल आज के समर कैम्प के दिन उन के लिए कुछ ख़ास था। सर बिलाल ने उन से वादा किया था कि आज वोह उन्हें एक ऐसी जगह ले जाएंगे जहां **"जिन्दगियां बचाई जाती हैं"**।

वक़्ते मुक़र्ररा पर सर बिलाल बच्चों के साथ बस में सुवार हो गए और बस अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल पड़ी, तक़रीबन बीस मिनट में बस एक चार दीवारी के सामने रुकी, जिस के मेन गेट के ऊपर लगे बोर्ड पर बड़े बड़े हुरूफ़ में लिखा हुवा था रेस्क्यू 112 । मेन गेट पर मौजूद चौकीदार से इजाज़त मिलते ही जैसे बस अन्दर दाख़िल हो कर पार्किंग की त़रफ़ बढ़ी तो एक त़रफ़ सफ़ेद और सुर्ख़ रंग की चमकती हुई एम्बूलन्स और आग बुझाने वाले बड़े बड़े लाल ट्रक की क़तार देख कर बच्चों की आंखें ह़ैरत से फैल गईं। ऐसा नहीं था कि बच्चों ने कभी एम्बूलन्स नहीं देखी थी लेकिन एक जगह इतनी ज़ियादा एम्बूलन्स नहीं देखी थीं।

सर बिलाल की हिदायत के मुताबिक़ सभी बच्चे दो क़ितारों में तक़्सीम हो कर इ़मारत के दरवाज़े की त़रफ़ बढ़े जहां पहले से मौजूद एक शख़्स ने बच्चों का इस्तिक़बाल किया। सलाम के बाद उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ करवाते हुए कहा : मेरा नाम अह़मद है और मैं उस रेस्क्यू सेन्टर का इन्चार्ज हूं, आज रेस्क्यू सेन्टर का विज़िट आप मेरे साथ ही करेंगे। और फिर बच्चों को ले कर इ़मारत में मौजूद हॉल में आ गए।

हॉल में एक दीवार पर पूरे शहर का बड़ा सा नक़्शा लगा हुवा था, अहमद साहिब उसी के पास आ खड़े हुए, फिर नक़्शे की तरफ़ इशारा करते हुए कहा : बच्चो ! जब आप 112 पर कॉल करते हैं तो हमेशा आप के क़रीब तरीन रेस्क्यू सेन्टर से राबिता क़ाइम हो जाता है।

सोबान ने जल्दी से हाथ खड़ा किया : सर ! क्या आप को फ़ौरन पता चल जाता है कि हम कहां से कॉल कर रहे हैं ?

जी बच्चो ! हमारे कम्प्यूटराइज़्ड सिस्टम की वजह से आप की कॉल हमेशा क़रीबी रेस्क्यू सेन्टर से ही मिलती है तो शहर की हद तक तो हमें लोकेशन पता चल ही जाती है लेकिन बिल्कुल ठीक ठीक जगह की लोकेशन पूछना पड़ती है। लेकिन याद रखें ! कभी भी प्रेंक कॉल या झूटी कॉल नहीं करनी चाहिए, क्यूंकि उस वक़्त शायद कोई ज़िन्दगी और मौत के दरमियान हो और लाइन मसरूफ़ होने की वजह से उस की मदद न हो सके।

फिर सर अहमद बच्चों को एक एम्बूलन्स के पास ले गए और बताने लगे : हर एम्बूलन्स में इब्तिदाई तिब्बी इम्दाद First aid का मुकम्मल सामान मौजूद होता है फिर ख़ास तौर पर ऑक्सीजन सिलेन्डर और एक मशीन दिखाते हुए कहा : उसे डी फ़ेबरीलेटर कहते हैं, येह बन्द होते दिल को दोबारा धड़काने में मदद देती है।

उसैद ने सुवाल किया : सर ! अगर हमें सड़क पर कोई हादिसा नज़र आए तो क्या करें ?

अहमद साहिब ने मुस्कुराते हुए कहा : बेटा ! सब से पहले अपनी हिफ़ाज़त देखनी चाहिए। फिर 112 को कॉल करें और हादिसे की दुरुस्त जगह बता दें, कॉल पे मौजूद रेस्क्यू मेम्बर को जगह समझ नहीं आ रही तो उसे किसी क़रीबी मश्हूर जगह का भी बताएं। जब तक रेस्क्यू टीम न पहुंचे, ज़ख़्मी को बिला ज़रूरत हरकत नहीं देनी चाहिए।

विज़िट का सब से दिलचस्प हिस्सा वोह था जब अहमद साहिब ने एक बच्चे को बुलाया तो मुआविया उन के पास जा खड़े हुए, फिर उन्हें घास पर लिटाया गया और अहमद साहिब ने सिखाया कि किसी का सांस या दिल की धड़कन बन्द हो जाने की सूरत में उसे इब्तिदाई तिब्बी इम्दाद कैसे दी जाएगी, सीने पर ज़ोर डालने के साथ साथ उस वक़्त तक मुंह के ज़रीए मस्नूई सांस देते रहना चाहिए जब तक रेस्क्यू टीम न आ जाए या मरीज़ की तबीअ़त सम्भल न जाए।

इस के बाद अहमद साहिब कहने लगे : बच्चो अब मैं आप के टीचर की इजाज़त से आप को एक होमवर्क देने लगा हूं :

" **एमरजन्सी कार्ड बनाना**" एक छोटा सा कार्ड (Cardboard) लें और उस पर अपने और घर वालों के लिए ज़रूरी फ़ोन नम्बर्ज़ लिखें :

रेस्क्यू : 112

पोलीस : 100

फ़ाइर ब्रीगेड : 101

अब्बू और अम्मी का फ़ोन नम्बर।

और इस कार्ड को फ़्रीज पर या किसी ऐसी जगह लगाएं जहां से सब उसे देख सकें।

दूसरा आप ने अपने किसी एक दोस्त को येह समझाना है कि हमें एम्बूलन्स को हमेशा रास्ता देना चाहिए इस छोटी सी मदद के ज़रीए वोह किसी की जान बचा सकते हैं।

फिर सर बिलाल और बच्चों ने अहमद साहिब का शुक्रिया अदा किया और वापस रवाना हो गए। बस स्कूल की तरफ़ बढ़ रही थी, लेकिन आज उन बच्चों के ज़ेहनों में एक अ़ज़्म था "**जान बचाने का अ़ज़्म**"। वोह सीख चुके थे कि थोड़ी सी मालूमात और सहीह वक़्त पर उठाया गया एक क़दम किसी की ज़िन्दगी बचा सकता है।

बच्चों को रहम दिली की तरबियत कैसे दें ?

इन्सानी मुआशरे की ख़ूबसूरती महब्बत, हमदर्दी और रहम दिली जैसे औसाफ़ से क़ाइम है, और इन औसाफ़ की बुनियाद घर से ही रखी जाती है। बच्चे फ़ितरतन नर्म दिल होते हैं, मगर उन की सहीह तरबियत न हो तो येही बच्चे सख़्त दिल भी हो सकते हैं। इस लिए वालिदैन पर येह अहम ज़िम्मेदारी आइद होती है कि वोह अपने बच्चों की ऐसी तरबियत करें जिस में रहम दिली, दूसरों के लिए एहसास, और मदद का जज़्बा शामिल हो।

रहम दिली से मुराद दूसरों के दुख दर्द को महसूस करना, उन के साथ नर्मी और शफ़क़त का बरताव करना, और ज़रूरत के वक़्त उन की मदद के लिए आगे बढ़ना है।

मुअज़्ज़िज़ वालिदैन ! मौजूदा दौर में ख़ुद ग़र्ज़ी और बेहिसी बढ़ती जा रही है, ऐसे में ज़रूरी है कि बच्चों को रहम दिल बनाएं। आइए ! चन्द ऐसे तरीक़े जानने की कोशिश करते हैं कि जिन के ज़रीए हम बच्चों में रहम दिली की सिफ़त पैदा कर सकते हैं।

रहम दिली की अहमियत बच्चों को रहम दिली की तरबियत देने के लिए रहम दिली की अहमियत बताएं। रहम दिली को क़ुरआने करीम में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم की सिफ़त बताया गया है कि वोह आपस में रहम दिल हैं।[1] इस से रहम दिली की अहमियत वाज़ेह होती है।

अहादीस में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से रहम दिली की अहमियत को बयान किया गया है चन्द अहादीस बच्चों को सुनाइए। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिनों की मिसाल (बाहमी रहम दिली में) एक जिस्म की तरह है, अगर एक उ़ज़्व तक्लीफ़ में हो तो पूरा जिस्म बे ख़्वाबी और बुख़ार की सी कैफ़िय्यत में मुब्तला रहता है।[2]

तकब्बुर और तहक़ीर से बचाएं बच्चों को रहम दिली की तरबियत देने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें तकब्बुर और दूसरों की तहक़ीर जैसे बुरे रवय्यों से बचाया जाए। जब बच्चा ख़ुद को दूसरों से बेहतर समझने लगता है तो उस के दिल में रहम दिली और हमदर्दी की जगह ख़त्म होने लगती है। इस लिए वालिदैन को चाहिए कि बच्चों को आजिज़ी व इन्किसारी की अहमियत समझाएं और येह बताएं कि अस्ल इ़ज़्ज़त इन्सान के अख़्लाक़ में होती है, न कि दौलत, ताक़त या शक्लो सूरत में। बच्चों को येह भी बताएं कि सब मुसलमान भाई भाई हैं इस लिए किसी को कमतर समझना या उस की बेइ़ज़्ज़ती करना दुरुस्त नहीं। जब बच्चे येह सीख जाते हैं तो उन के दिल में ख़ुद बख़ुद रहम दिली, महब्बत और इन्सानिय्यत पैदा हो जाती है।

रहम दिली के फ़ायदे बताएं बच्चों को रहम दिली की तरबियत देने के लिए रहम दिली के फ़ायदे बताएं। रहम दिली का एक फ़ायदा येह है इस से अल्लाह पाक की रहमत हासिल होती है। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक अपने रहम दिल बन्दों पर ही रहम फ़रमाता है, लिहाज़ा अहले

ज़मीन पर रहम किया करो आस्मान का मालिक तुम पर रहम फ़रमाएगा।[3]

दूसरा फ़ायदा येह है कि रहम दिली जन्नत में दाख़िले का सबब है। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ حَتّٰى تَرَاحَمُوْا यानी तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते, जब तक आपस में रहम दिल न हो जाओ।[4]

रहम दिली का तीसरा फ़ायदा येह है कि इस से लोगों के दिलों में महब्बत और अपनाइयत पैदा होती है। जो शख़्स दूसरों के साथ नर्मी, हमदर्दी और शफ़क़त का रवय्या इख़्तियार करता है, लोग उस की तरफ़ ख़ुद बख़ुद माइल होते हैं और उस से दिल से महब्बत करने लगते हैं।

बच्चों को बताइए कि प्यारे बच्चो ! जो दूसरों पर रहम नहीं करता, उस का **दिल आहिस्ता आहिस्ता** सख़्त हो जाता है, फिर वोह किसी की तक्लीफ़ महसूस नहीं करता और जब कोई किसी की तक्लीफ़ महसूस नहीं करता तो लोग भी उस की तक्लीफ़ के वक़्त में उस का साथ छोड़ देते हैं।

जो दूसरों पर रहम नहीं करता उस के दोस्त कम हो जाते हैं, बे रहम शख़्स को कोई पसन्द नहीं करता, उस से हर कोई दूर रहने लगता है यूं बे रहम बन्दा अकेला रह जाता है।

बे रहमी के बाइस **लड़ाई झगड़े बढ़ जाते हैं** क्यूंकि जिस पर ज़ुल्म होता है तो वोह बदला लेने की कोशिश करता है जिस से झगड़े बढ़ते हैं।

बे रहम बन्दे की **इज़्ज़त कम हो जाती है।** लोग ऐसे बन्दे को बुरा समझते हैं, और उस की इज़्ज़त और क़दर कम हो जाती या आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो जाती है।

जो दूसरों पर रहम नहीं करता **उसे ख़ुद भी सुकून नहीं मिलता** वोह अन्दर से बेचैन रहता है।

वालिदैन ख़ुद रहम दिली का मुज़ाहरा करें बच्चा अपनी इब्तिदाई ज़िन्दगी में अपने वालिदैन से सीखता है, और उन्ही के रवय्ये उस की शख़्सिय्यत का हिस्सा बन जाते हैं। अगर वालिदैन ख़ुद रहम दिल, नर्म मिज़ाज और दूसरों का ख़याल रखने वाले हों तो बच्चे भी उन्ही ख़ूबियों को अपनाते हैं। लेकिन अगर बच्चों की इस तरफ़ तवज्जोह न दिलाई जाए तो वोह ख़ुद ग़रज़ और बेहिस भी बन सकते हैं। इस लिए ज़रूरी है कि वालिदैन अपने बच्चों की ऐसी तरबियत करें जिस से उन के अन्दर रहम दिली, हमदर्दी और इन्सानिय्यत का जज़्बा पैदा हो सके।

बच्चों को रहम दिली का प्रैक्टीकल बताएं कि आप रहम दिली का इज़्हार यूं कर सकते हैं कि

- अपने इर्द गिर्द लोगों की ज़रूरतों को पहचानें और उन की मदद करने की कोशिश करें।
- अगर कोई बीमार हो तो उस की इयादत करें, उस का हाल पूछें और उस के लिए दुआ भी करें और उस के पास दवा के पैसे न हों तो अपने अब्बू, चचा या बड़े लोगों को बता कर उस के लिए दवा का इन्तिज़ाम करें।
- अगर किसी बच्चे के पास पढ़ने के लिए किताबें न हों तो उस की मदद के लिए किताबें दिलवाने की कोशिश करें।
- किसी के घर खाना नहीं है तो अपने घर वालों को बता कर उन के लिए खाने का बन्दोबस्त करें।
- जिन बच्चों के पास खिलौने न हों तो उन्हें अपने साथ खेल में शामिल करें।
- किसी ग़रीब बच्चे के पास मुनासिब कपड़े न हों तो अपने बड़ों के ज़रीए उस के लिए कपड़ों का इन्तिज़ाम करें।

मोहतरम वालिदैन ! आइए ! हम सब मिल कर अपने बच्चों को रहम दिल बना कर एक ख़ूबसूरत और महब्बतों भरा मुआशरा क़ाइम करने की कोशिश करें।

---

(1) دیکھیے: پ26، الفتح: 29 (2) بخاری، 4/103، حدیث: 6011 (3) ترمذی، 3/381، حدیث: 1931 (4) مستدرک، 4/282، حدیث: 7389۔

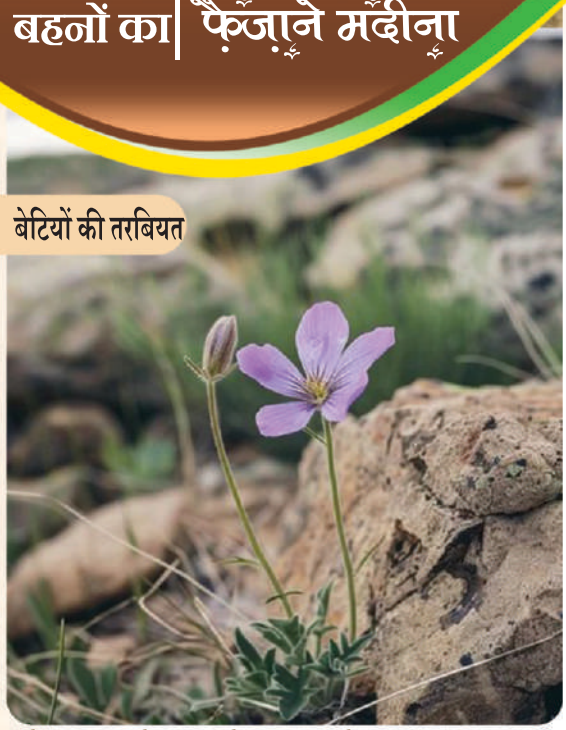

बेटियों को सब्रो तहम्मुल की तरबियत दें

बड़ी से बड़ी मुश्किलात और आज़माइशें ख़त्म हो कर रहती हैं और कड़वे लहजे मीठे भी हो जाते हैं, लेकिन उस के लिए सब्र करना पड़ता है। सब्रो तहम्मुल एक ऐसा हथियार है, जिस से तूफ़ानों का रुख़ मोड़ा और मुश्किल से मुश्किल मस्अले का हल निकाला जा सकता है। सब्र इन्सान की शख़्सिय्यत भी निखारता है।

मर्दों और औरतों की ज़िन्दगी में कई मुआमलात की कैफ़िय्यत अलग होती है। इसी तरह परेशानियों और मसाइब में सब्रो तहम्मुल की कैफ़िय्यत भी अलग होती है। ऐसी सूरते हाल में मां बाप पर बेटियों की तरबियत के मुआमले में बड़ी अहम ज़िम्मेदारी आइद होती है।

माएं अपनी बेटियों को कम उम्री ही से पूरी तवज्जोह, शफ़्क़तो महब्बत के साथ मुस्बत शख़्सिय्यत की हामिल बनाने की कोशिश करें। क्यूंकि बचपन का सिखाया हुवा पुख़्ता रहता है जैसा कि हदीसे पाक में है : مَثَلُ الَّذِی یَتَعَلَّمُ الْعِلْمَ فِیْ صِغَرِہٖ کَالنَّقْشِ عَلَی الْحَجَر बचपन में इल्म हासिल करने वाले की मिसाल पत्थर के नक़्श की सी है।[1]

सब्र की अहमियत और सब्र अपनाने की ज़ेहन साज़ी के लिए सब से पहले तो बेटी को बताएं कि "सब्र" रुकने, ठहरने या बाज़ रहने का नाम है और नफ़्स को इस चीज़ से रोकना (यानी डट जाना) जिस से रुकने (डटे रहने) का अक़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो सब्र है। सब्र दो तरह का होता है : पहला बदनी सब्र जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और उन पर साबित क़दम रहना। दूसरा तबई ख़्वाहिशात और ख़्वाहिश के तक़ाज़ों से सब्र करना।[2] क़ुरआने मजीद में है : ﴿وَ اصْبِرُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ(۴۶)﴾ "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है।"[3]

बेटी को बताएं कि मुसलमान के लिए सब्र में बड़ी भलाई है, अल्लाह पाक ने मुसलमान के लिए ख़ैर ही ख़ैर रखी है। हदीसे पाक में है : मोमिन का मुआमला कितना अ़जीब है कि उस के लिए हर मुआमले में ख़ैर ही ख़ैर है अगर उसे ख़ुशी पहुंचे और शुक्र करे तो येह उस के लिए ख़ैर है और अगर मुसीबत पहुंचे और उस पर सब्र करे तो येह उस के लिए भलाई है।[4]

हमारी ज़िन्दगी में जो मुश्किलात आएंगी उस वक़्त हम ने नमाज़ नहीं छोड़नी, सब्र का दामन नहीं छोड़ना। बल्कि हमें येह देखना है कि हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा में कैसे कैसे दर्द अंगेज़ लम्हे आए लेकिन आप ने हमेशा सब्र किया, जैसा कि

1 जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का में दावते इस्लाम का आग़ाज़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार ने आप को झुटलाया, ताने दिए, हत्ता कि जिस्मानी अज़िय्यतें भी पहुंचाईं। लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी बदला नहीं लिया बल्कि हमेशा सब्र और नर्मी का रास्ता इख़्तियार फ़रमाया। इस में सबक़ है कि मुश्किल हालात में भी अख़्लाक़ और हौसला नहीं छोड़ना चाहिए।

2 तीन साल तक आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने शिअ़बे अबी तालिब में शदीद भूक, प्यास और तंगीए बरदाश्त की। खाने को कुछ न होता, बच्चे भूक से रोते, मगर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह पर भरोसा और सब्र का दामन नहीं छोड़ा। येह मिसाल सिखाती है कि आज़माइशें वक़्ती होती हैं, सब्र करने वालों के लिए आसानी ज़रूर आती है।

3 जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताइफ़ तशरीफ़ ले गए तो वहां के लोगों ने ना सिर्फ़ दावत को रद किया बल्कि आप पर पत्थर बरसाए। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लहू लुहान हो गए, मगर उस के बावुजूद आप ने बद्दुआ के बजाए उन के लिए हिदायत की दुआ फ़रमाई। उस में सबक़ है कि अगर कभी आप की जाइज़ बातें और मुतालबात भी नहीं माने जाते तो सब्र करें और तक्लीफ़ देने वालों के लिए भी ख़ैरख़्वाही का जज़्बा रखना चाहिए।

4 जब मक्का फ़त्ह हुवा तो वोही लोग जो बर्सों आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सताते रहे, आप के सामने बेबस खड़े थे। लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब को मुआफ़ फ़रमा दिया और फ़रमाया : "**आज तुम पर कोई गिरिफ़्त नहीं।**" येह आला दर्जे के सब्र और बरदाश्त की मिसाल है कि ताक़त होने के बावुजूद इन्तिक़ाम न लिया जाए। आप आसूदा हाल हो जाएं तो जिन्हों ने कमज़ोरी में तंग किया था उन को बदले में तंग न करें।

5 नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात के घरों में कभी कभी कई कई दिन चूल्हा नहीं जलता था। ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ऐसा भी होता था कि पूरा महीना गुज़र जाता और घर में आग नहीं जलती थी, सिर्फ़ खजूर और पानी पर गुज़ारा होता था।[5] इस के बावुजूद अज़्वाजे मुतह्हरात ने कभी शिकायत न की बल्कि सब्र, शुक्र और क़नाअ़त के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। येह मिसाल बेटियों को सिखाती है कि तंगी और कमी बेशी ज़िन्दगी का ह़िस्सा है, अस्ल कामयाबी येह है कि इन्सान हर ह़ाल में सब्र करे, अल्लाह पर भरोसा रखे और नाशुक्री से बचे।

(1) مجمع الزوائد، 1/333، حدیث:515 (2) صراط الجنان، پ2، البقرہ، تحت الآیۃ:153، 1/279 (3) پ10، الانفال:46 (4) مسلم، ص:1222، حدیث:7500، ملتقطاً (5) شمائل ترمذی، ص208، حدیث:352۔

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	मसऊ़द	ख़ुश नसीब	मश्हूर वलियुल्लाह बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम
मुहम्मद	अ़ब्दुर्रहमान	रह़मान का बन्दा	मश्हूर आशिक़े रसूल मौलाना जामी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम
मुहम्मद	ह़श्मत	शानो शौकत	शेर बेशए अहले सुन्नत मौलाना ह़शमत अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम

बच्चियों के 3 नाम

मारिया	चमक दमक वाली	कनीज़े रसूल का बा बरकत नाम
रमला	ज़मीन का बुलन्द ह़िस्सा	सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
वजीहा	ख़ूबसूरत	उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की आज़ाद कर्दा कनीज़ का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 दौराने वुज़ू सर पर लगी मेहंदी पर मस्ह करने का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि औ़रत ने जब पूरे सर पर मेहंदी का लेप किया हुवा हो और उसी दौरान नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाए, तो क्या सर पर मौजूद मेहंदी के लेप पर मस्ह करन शरअ़न दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बालों पर मेहंदी लगी होने की सूरत में मस्ह का हुक्म येह है कि अगर मेहंदी का लेप इतना गाढ़ा है या ख़ुश्क हो कर इतना सख़्त हो चुका है कि नीचे सर की खाल या बालों तक पानी नहीं पहुंचेगा, तो अब मेहंदी के ऊपर से मस्ह दुरुस्त नहीं होगा, अलबत्ता अगर मेहंदी का लेप बारीक हो या उस का कोई मोटा जिर्म मौजूद न हो तो हुक्म में तफ़्सील है अगर मस्ह करते वक़्त हाथ की तरी पानी ही रहे और उस में मेहंदी के अज्ज़ा इतने न मिलें कि वोह पानी की ह़क़ीक़त को बदल दें, तो इस सूरत में मस्ह दुरुस्त है और अगर हाथ की तरी मेहंदी के असर से इस ह़द तक बदल जाए कि उसे मुत्लक़ पानी न कहा जा सके, तो फिर ऐसी सूरत में मस्ह दुरुस्त नहीं।

याद रहे कि सर से लटकते बालों पर मस्ह कर लेना काफ़ी नहीं, इस से मस्ह का फ़र्ज़ अदा नहीं होता, बल्कि ख़ास चौथाई सर की मिक़्दार पर मस्ह करना फ़र्ज़ है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 बादे निफ़ास पन्दरह दिन के अन्दर ख़ून आने का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरे पहले बच्चे की पैदाइश हुई और मुझे चालीस दिन ख़ून आया फिर बन्द हो गया तो मैं ने ग़ुस्ल कर के नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ कर दीं, फिर तेरहवें दिन मुझे दोबारा ख़ून शुरूअ़ हो गया, तो मैं ने नमाज़ छोड़ दी। येह ख़ून दो दिन जारी रह कर बन्द हो गया। अब पूछना येह है कि इन दो दिनों की नमाज़ों की क़ज़ा है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइ़य्या के मुताबिक़ दो ह़ैज़ों और निफ़ास व ह़ैज़ के दरमियान कामिल त़ोहर यानी कम अज़ कम पन्दरह दिन का फ़ासिला ज़रूरी है, अगर ह़ैज़ या निफ़ास ख़त्म होने के बाद पन्दरह दिन पूरे होने से पहले ख़ून आ जाए तो वोह ह़ैज़ नहीं, बल्कि इस्तिह़ाज़ा यानी बीमारी का ख़ून होता है और इस्तिह़ाज़ा की ह़ालत में नमाज़ रोज़ा मुआ़फ़ नहीं होते।

इस के मुताबिक़ पूछी गई सूरत में निफ़ास ख़त्म होने के बाद तेरहवें दिन ख़ून आया जो कि दो दिन तक जारी रहा, तो येह इस्तिह़ाज़ा का ख़ून हुवा, लिहाज़ा इन दो दिनों की नमाज़ों की क़ज़ा फ़र्ज़ है। नीज़ बिला वजहे शरई नमाज़ें क़ज़ा करने की वजहे से आप गुनहगार भी हुईं, इस से तौबा करना भी लाज़िम है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुहर्रमुल हराम के चन्द अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
पहली मुहर्रमुल हराम 24 हि.	यौमे उर्स मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 ता 1446 हि. और "फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म"
पहली मुहर्रमुल हराम 486 हि.	यौमे उर्स शैख़ुल इस्लाम हज़रते अबुल हसन अ़ली बिन अहमद हिकारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
पहली मुहर्रमुल हराम 632 हि.	यौमे उर्स हज़रते शैख़ शिहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
2 मुहर्रमुल हराम 200 हि.	यौमे विसाल हज़रते शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
5 मुहर्रमुल हराम 664 हि.	यौमे उर्स हज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊ़द गंजे शकर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि. और "फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर"
10 मुहर्रमुल हराम 61 हि.	यौमे शहादत नवासए रसूल हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 ता 1446 हि. और "इमामे हुसैन की करामात"
10 मुहर्रमुल हराम 1142 हि.	यौमे विसाल हज़रते सय्यिद बरकतुल्लाह मारहरवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
12 मुहर्रमुल हराम 513 हि.	यौमे विसाल मुर्शिदे ग़ौसे आज़म, हज़रते अबू सईद मुबारक मख़रूमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1440 हि.
14 मुहर्रमुल हराम 1198 हि.	यौमे विसाल हज़रते सय्यिदुना शाह हम्ज़ा मारहरवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
14 मुहर्रमुल हराम 1402 हि.	यौमे विसाल शहज़ादए आला हज़रत, मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, मुफ़्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439, 1444 हि. और "जहाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द"
18 मुहर्रमुल हराम 1427 हि.	यौमे विसाल मर्हूम रुक्ने शूरा, हाफ़िज़ मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439, 1441 हि. और "मुफ़्तिए दावते इस्लामी"
19 मुहर्रमुल हराम 853 हि.	यौमे विसाल आ़रिफ़े रब्बानी हज़रते सय्यिद अहमद जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुहर्रमुल हराम 1439 हि.
25 मुहर्रमुल हराम 1419 हि.	यौमे विसाल हज़रते मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी रज़वी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ	फ़ैज़ाने मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी
मुहर्रमुल हराम 14/15 हि.	"**जंगे क़ादिसिय्या**" इस में कमो बेश 10 हज़ार से ज़ाइद मुसलमानों ने तक़रीबन 1 लाख 20 हज़ार कुफ़्फ़ार को शिकस्त दी।	फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, 2/668 ता 676

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

मुहर्रमुल हराम की मुनासबत से क़ाबिले मुतालआ़ कुतुबो रसाइल

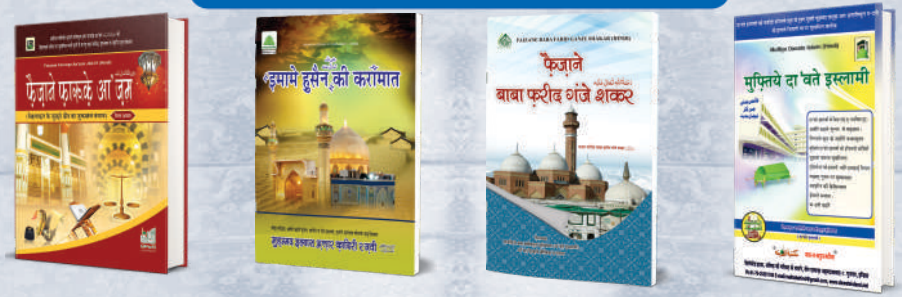

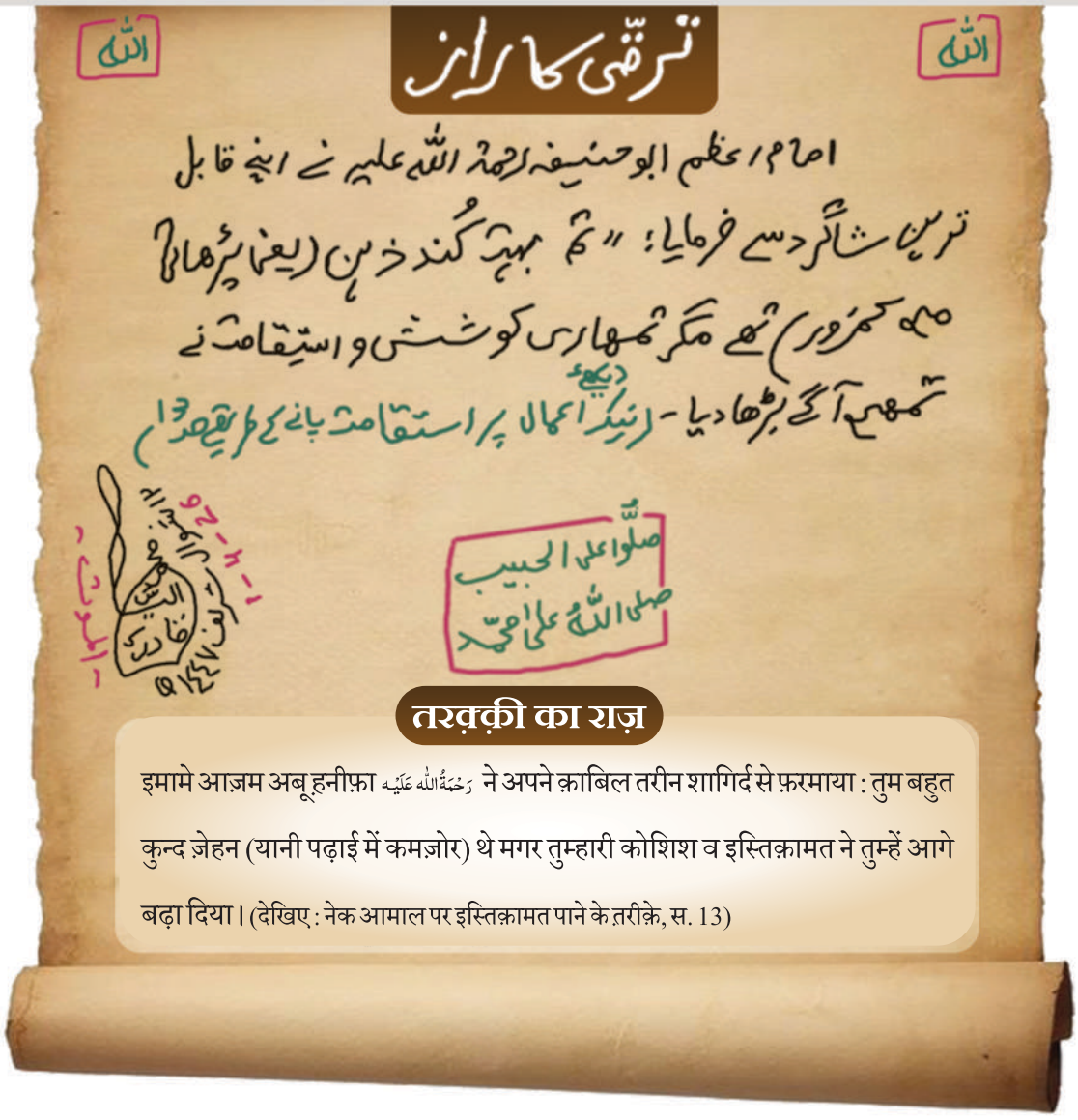

तरक़्क़ी का राज़

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने क़ाबिल तरीन शागिर्द से फ़रमाया : तुम बहुत कुन्द ज़ेहन (यानी पढ़ाई में कमज़ोर) थे मगर तुम्हारी कोशिश व इस्तिक़ामत ने तुम्हें आगे बढ़ा दिया। (देखिए : नेक आमाल पर इस्तिक़ामत पाने के तरीक़े, स. 13)

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अतिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआवुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है